राधा स्वामी सहाय

गोविन्द अमृत सागर

क्रम.	भजन/शीर्षक	पृ. न.
1.	भूमिका	3
2.	जीवनी (सत्गुरु महाराज)	4-15
3.	गूरु अस्तुति	16-17
4.	अस्य आयि शरणे	18
5.	स्वरन दुऽमनम कनिय दारून	19-20
6.	अवय बन्याव म्य उपाय	20-24
7.	ॐ जय श्रीमत श्री नारायणय	24-26
8.	स्वप्रकाश द्रावन्वन यस निशे	26-27
9.	हा पनिनि पानो कसू पचि यम	27-28
10.	सर कोर भवसर म्यथा द्राव	28-30
11.	बाल पान प्यठ म्य कऽरमिऽच न्यन्दरो	30-31
12.	भाल चन्द्र च्योवथस न्यरामय मुऽय	31-32
13.	दिहस अन्दर ह्रदयस	32
14.	आत्म तिर्थस मंज़िय चऽ श्रान कर	33
15.	तत्व ज्ञानय वासना क्षय यस	33
16.	पाऽन्य पानय पान साह्यब	34
17.	अस्ति भाति प्रयि रूपय	34-35
18.	सूहम अस्मे	35-36
19.	सहज़ समाधी लज यस	36
20.	सुय सन्त सुय साध हो	36-37
21.	स्वप्नस मंज़ चऽ रोज़	37
22.	सुय वुछुय म्य यस	38-39
23.	सर्व शक्तिमानऽ	39
24.	तन मन धन	40
25.	नीरिवे वुछिन्ये दारि	40-41
26.	सम रस जिसने पिया	42
27.	हा जुव सत्गुऽरऽ	43-44

28.	रित्य रित्य पोश च्येय	44-45
29.	त्रिभवन नाथ अनाथ है	45-46
30.	हाथ आया	46
31.	यह कहा जाता है	47
32.	आज़मालो करके	47-49
33.	सोच करने से	49
34.	शाइर है मस्त	50
35.	हाथ आया हमको साहिब	51
36.	मुन्तिज़िर हैं हम	51-52
37.	मैं गाता हूँ	52-53
38.	जायि जायि साये	53
39.	मुर्खिय योत	53-54
40.	जानय गव	54-55
41.	स्यदयन साधन हिन्हे माले	55-56
42.	ओ३मकार आधार	57-58
43.	नित्यानन्दस	59-60
44.	वनतऽ वुऽन्य क्याह	60
45.	आऽवन पनऽन्यन	60-61
46.	पनऽनुय साये	61
47.	राम रस रूऽस	61-62
48.	यस काँऽसि हुन्द	62
49.	ह्यकमते	63
50.	च्यानि बापत्	63-64
51.	सुय म्य टोठ्योम	64-65
52.	म्य दर्शुन दुच्युत	65
53.	सत् व्यचार फाँसि सीऽत्य	65-67
54.	यस निशि	67-68
55	दित दर्शुन	68

56.	वजन मुर्ली	69-70
57.	प्रथ सातय	70
58.	त्यलि गुरु दयाल	71
59.	ही न्यर्मल	71-72
60.	शिवस व्यन केंहनसाऽ	72-74
61.	स्वर सान सरऽ क्वर	74-75
62.	पान क्वर सरऽ	75-76
63.	नित्य मुक्त	76-77
64.	युस छुय हनि हनि	77-78
65.	त्रिगुणा तीत	78-79
66.	क्या कर्यस रिच ज़न्ग	80-81
67.	कुन्यर ह्युविय छु	81-82
68.	भव सर तारि	82-84
69.	व्यदानन्दऽ	84-85
70.	जुव सोन शिव	85
71.	बोलन बीनिय	86-87
72.	तस कुस मरि	87-89
73.	साऽरी ढ़ींठिम गर्ज़मन्दिय	89-90
74.	कृष्ण रूदा	90
75.	पान प्रजऽनाव	91
76.	निशि छुय	92-93
77.	होशस प्योस	94-95
78.	जय अनन्त	95-96
79.	ओ३म स्वरूम	97-98
80.	गाश दारिय	98-99
81.	पुछ दिलस अन्दर	99-100
82.	ब्रह्म व्यचारय	100-101
83.	तोर पान ग्वल यम त्रास	101-103

84.	छांज्याव म्य युस	103-104
85.	अमरीश्वर अमृत	104-105
86.	दय ज़ान यस गयि	106
87.	वछऽ अछऽ रछऽ	107-108
88.	पान पोव च्यतस	108-109
89.	च्यन्तन त्राव	109-110
90.	कुलस तऽ पानस	110-111
91.	विज्ञान मारतण्ड्य	111-112
92.	वनुन हाल	113-114
93.	रसऽ रसऽ असऽविन्य	114-115
94.	सत् चित् आनन्द	115-116
95.	लोलऽ बागस	116-118
96.	आहा अज़ब	118-119
97.	यिनऽ ज़ांह मशी	119-120
98.	जिसको कहते हैं	120
99.	ज़ऽना हऽकयो	120-121
100.	दम दमऽ दम ह्यथ	121
101.	वनुन सुलभ	121-122
102.	व़जिम गफलत	122-123
103.	म्य चिय अन्दर	123-124
104.	च्य आऽसिन सोन	124-125
105.	यवऽ तवऽ भवऽसरय	125-126
106.	न्यविकारो	126-127
107.	योरकि करनऽ	127-128
108.	सत् व्यचारऽ	128-129
109.	नाहक पानस	129-130
110.	शीत पीत	130
111.	लोल आमो	131

112. श्री गण्पतो च्य जय जय जय 132-133
113. धन दौलत की भेंट 133
114. गोलयो मुह अज्ञान 133-134
115. दोर कुन 134
116. बेहोशी मंज़ 135
117. म्यानि ज़ुवो परमय शिवो 135
118. हर मुख़ 136
119. नाद मन्ज़ऽ ब्रन्द द्राव 136
120. तन फिदा मन फिदा 136-137
121. सन्थन हिन्दी 137
122. म्य च्याने लोलऽ 138
123. वह यार देता है 138-139
124. विघ्न हरन सतुग़रन 139
125. ही जटादारऽ 139-140
126. दमऽ कुय हमस 140-141
127. आसन दाऽरिथ 141
128. है मोहब्बत 142
129. गुरु दयाल की दया 142-143
130. कीऽत्य आलम 143
131. कर्ज्य कर्ज्य तदबीर 143-144
132. गोविन्दऽ छुय हो 144
133. पान सोन 144
134. लगयो पादन पाऽरि 144-145
135. सीऽत्य स्मरणस 145
136. गरि गरि स्वर 145-146
137. सानि ज़ोरऽ 146
138. शान्त शीतल ज्ञान सीऽत्यी 147
139. सूरत शब्द अभ्यास 147-148

140.	व्यति वरी सीऽत्य शक्ति पात	148
141.	दिल फिदा जुव फिदा	149
142.	चिय आऽसिख	149-151
143.	यूगियव उपनिषद् ग्योव	151
144.	अर्पण बन	151
145.	अस्त उद्धय रोस्त	152
146.	शिव छु सोन	153
147.	ग्वर शब्दिय वज़ानिय	153-154
148.	हृदयस थौ सतुक राग	154
149.	हृदयस मो थव राग द्वेष बोज़	154-155
150.	ग्वर शब्दस छयन छुमा	156
151.	पाऽन्य पानय लोगयो	156
152.	हृदयस हमसू	156-157
153.	अमृत वाऽणी बोज़	157
154.	लालिऽ च कऽद्र	157-158
155.	थव अच्छय पननी हुशियार	158-159
156.	यलि ज़ाख वोदुथ	159-161
157.	लोलय हत्यन	162
158.	सपुद मन्ज़ूर नज़र खुऽशी	162
159.	आश्चर छुय	163
160.	अनुग्रह कऽरनय च्य पूर	163-164
161.	लोल आमो दूभारऽ	164-165
162.	श्याम सुऽन्दरऽ	165-166
163.	सोखसान वोथस बेहस	166
164.	भगवान सुन्दुय इन्तिज़ाम	166-167
165.	रंगऽ रंगऽ रंगऽ००००	167-168
166.	पननि भाऽत्य पशुराव दयस	168-169
167.	नित्य मुक्त सत् चित आनन्द	169

168.	होश फ्वल श्याम सुऽन्दरय	169-170
169.	ओम ज्यमय हम हय ग्वलमय	171
170.	ओम तत् सथ कऽरिथ	172-173
171.	ज़िन्दस पानऽ मरिथ	173-174
172.	पान दयसा युस (ताऽरीफ शब्द)	174-176
173.	यस सु पालि तस कुस गालि	176-177
174.	दर्शुन दि दया कर ही दये	177
175.	तावन है दुनिया बाऽलिये	178-180
176.	नरकीय स्वर्गीय कौऽसि	180-181
177.	पानस पानय च्यावान सु मुऽय	181-182
178.	अनहद शब्द बोज़	182-183
179.	आनन्द मस तऽज्य च्योवनस	184-185
180.	शिव शिव करान शिविय	185
181.	वज़ान बीन बाजे सुऽन्दरो	186
182.	अज़ताम कालन कुस त्रोवुय	186-187
183.	मसहा कर्य अऽज्य	187-188
184.	आदि दीवऽ पादि कमलन	189-190
185.	पीरस तऽ पीरानि पीरस	190-191
186.	च्यानि दर्शन सीऽज्य	192
187.	ॐ शिव शंकर अज़र अमर	193-194
188.	लोलन वनऽ नाऽव्य	194-198
189.	सन्त कथा	199-212
190.	सन्त कथा (दूसरा पाठ)	213-231

ऊं R.S.

भूमिका

ओइम राधा स्वामी सहाय

राधा स्वामी मत के अनुयायी पुजनीय दाता दयाल महार्षि शिव ब्रत लाल जी हथकमण्डू हैदराबाद दक्षिण के परम् शिष्य परम संत परम दयाल स्वामी गोविन्द कोल जी महाराज वनपूह ग्राम काश्मीर निवासी द्वारा रचित अमृत वाणी के चार संग्रह पहले से ही समय समय पर प्रकाशित हो चुके है। इनमें से प्रथम तथा तृतीय संग्रहों के दूसरे संस्करण भी स्वामी जी के प्रिय भक्तों द्वारा प्रकाशित किये गये हैं। परन्तु द्वतीय तथा चतुर्थ संग्रहों के दूसरे संस्करण अभी तक प्रकाशित नही हो सके। इनकी उपलब्धि के अभाव में भक्तजनों को कीर्तन के समय कठिनाई महसूस होने लगी। दूसरे भक्त भी इनकी प्रत्तियाँ माँगते थे। अतः उनके आग्रह तथा दूसरे भगवत् प्रेमियों के आग्रह पर अब इनका दूसरा संस्करण प्रकाशित करने की आवश्यकता होने लगी। इस कमी को ध्यान में रखते हुए इसका यह दूसरा संस्करण भी प्रकाशित किया जा रहा है।

यह जो पहले से ही विदित है कि यह सभी भजन सूरत-शब्द योग के अभ्यासियों के लिए विशेष तोर पर तथा सभी भगवत् प्रेमियों के लिए आमतोर पर बहुत ही हितकर सिद्ध हुए हैं। यह भजन कर्मयोग अभ्यास, भक्ति, प्रेम, उपदेश, ज्ञान, ध्यान, जीवन की सत्यता व सादगी से ओत प्रोत है। इस कलियुग में मानव जीवात्माओं को तारने हेतु सेतु है। इनके द्वारा सभी भक्तजन अन्तर अभ्यास द्वारा संसार का सब कार्य करते हुए अपने निज स्वरूप को पहचानने में समर्थ हो सकते हैं जिस से वास्तविक शाँति इस युग में प्राप्त हो सकती है तथा परिलोक भी सुधर सकता है।

आशा है कि सभी भक्त जन इस नवीन संस्करण के प्रकाशन का स्वागत करेंगे और अपने जन्म को सफल बनाने में समर्थ होंगे।

सत्गुरु स्वामी जी महाराज सब को सुख, शान्ति तथा समृद्धि प्रदान करें।

(भवदीय सद्भावी)
स्वामी गोविन्द कोल,
कमला जी, पंडित दयाल,
आश्रम-महेंद्र नगर कनाल रोड
जम्मू (तवी)

राधा स्वामि

श्री गुरूवे नमः

काश्मीर के महान् संतों के शिरोमणि परम दयाल परमसंत स्वामी

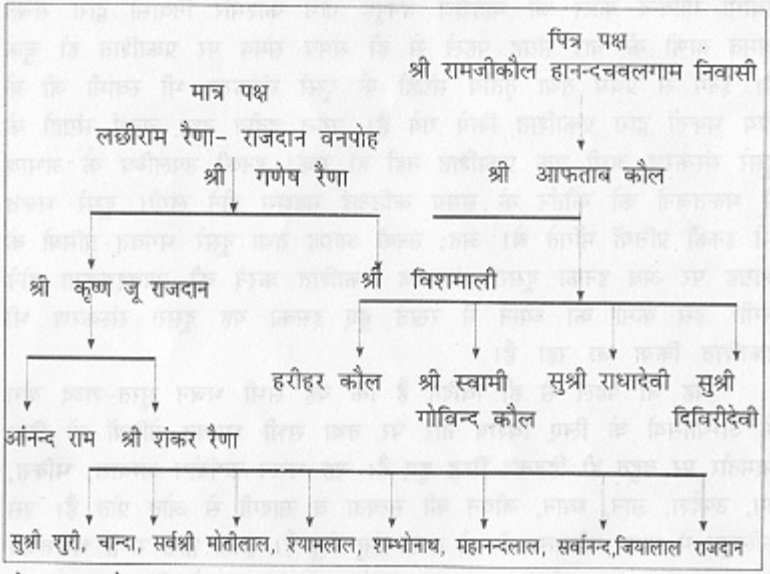

गोविन्द कौल महाराज वनपोह निवासी की वंशावली । गोत्र- दतात्रिय

"गोविन्द अमृत"[क] भजन माला को देखकर एक बातकी कमी महसूस हुई कि इस अनमोल खज़ाने के आरम्भ में स्वामीजी की संक्षिप्त जीवनी होनी चाहिए थी। स्वामीजी ने अध्यात्म के भिन्न भिन्न तबकात के गहन अनुभवों की अभिव्यक्ति अति सरल शैली में अपने भजनों में प्रभावात्मक ढंग से की है। जिनको पढकर आनंद का आभास होता है। किंतु उनके जीवनके बारे में सुव्यवस्थित ढंग से कुछ भी नहीं लिखा गया है। यह बात सत्य है कि ऐसे महान आध्यात्मिक पुरुष अपने बारे में उदासीन ही रहते थे। फिर भी शेष संसार के लिए उनका जीवन चरित्र जानना अनिवार्य हो जाता है। पूर्व संतों जैसे तुलसी; कबीर; सूर; ललीश्वरी; नुन्दऋषि; अभिनवगुप्त का जन्म मृत्यु तथा जीवनचरित्र

अनुमान पर ही आधारित है। इसलिए स्वामीजी की संक्षिप्त जीवनी को प्रस्तुत करने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है। इसके संकलन में स्वामिजी के प्रिय भक्तों का काफी योगदान है। फिर भी कोई भी प्रामाणिक संशोधन अमान्य नहीं है।

भारतवर्ष के उत्तर में हिमालय की गोद में भूस्वर्ग कशमीर स्थित है जो पहले एक झील होकर शिवपार्वती की क्रीडास्थली था। इसमें रहते जम्बू देव के अत्याचार से तंग आकर लोग शिवजी के शरण में गए। श्री शंकर भगवान ने लोगों से कश्यपऋषि के पास जाने को कहा । कश्यपऋषि ने झील का पानी वराहमूला के रास्ते निकालकर इसे खुशककर दिया। जम्बूदेव मारा गया। तथा एक नंदनवन की तरह कशमीर भूमि प्रगट हुई। भारत माता के इस कशमीर रूपी मुक्ट में अनेक महापुरुष तथा संत रूपी मणि तथा रत्न उत्पन्न होकर जुड गए जिनकी भगवत भक्ति एवं आध्यात्मिक भजनों की मधुर झण्कार से संसार आनन्दमय होकर झूमने लगा। अभिनवगुप्त; ललद्यद; नुन्दऋषि; परमानंद; कृष्णजू राज़दान; शमसफकीर; अहद ज़रगर आदि के अतिरिक्त संतों के बादशाह परमसंतपरम दयाल स्वामी गोविन्द कौल जी का जन्म भी इसी मिट्टी से हुआ। स्वामीजी के भजनों ने अद्यात्मिकता की पराकाष्ठा को छू लिया है। ऐसे महान संत के बारे में कुछ लिखना सूर्य को दिया दिखाने के बराबर है।

जन्म:- स्वामि जी का जन्म फालगुण शुक्लपक्ष त्रियोदशी संवत 1948 बिक्रमी तदानुसार मार्च 1892 ईसवी में चवलगाम में हुआ। इन के पिताश्री का नाम पंडित आफताब कौल तथा दादाजी का नाम रामजी कौल था जो चौवलगाम के रहने वाले थे। जो अनन्तनाग ज़िला में पड़ता है। इनकी माता श्री का नाम वेशमाली था जो ततकालीन विक्षात कृष्ण भक्त कृष्णजू राज़दान की चहेती बहिन थी। कृष्णजू ने अपनी बहिन को हिब्बा में 32 कनाल आबी ज़मीन तथा वारी देदी। इसके बाद वे वनपोह में आकर बस गए। बाद में स्वामीजी ने रहने के लिए एक

मकान बनवाया जो अभी भी मौजूद है। इनके बडे भाई का नाम श्री हरीहर कौल था इन दोनों भाईयों का स्वभाव हिंदी के 36 अंक की तरह थां। इनकी दोनों बहनों सुश्री राधा देवी और दिवरी देवी का विवाह श्रीनगर में हुआ था। दिवरी देवी का विवाह श्री प्रसादराम रैणा के साथ हुआ था। श्री दीनानाथ ''फिलासफर'' दिवरी देवी काही पुत्र था। श्रीनगर में इन्हीं के घर रहकर स्वामीजी ने हिकमत की शिक्षा ली थीं; तथा हिकमत में सिद्धहस्त हो गये थे।

विवाह:- स्वामीजी का विवाह कुलगावँ के निवासी श्री आफताब पण्डित की बहन मुगलानी से हुआ था। ज्ञानपीठ अवार्ड पानेवाले तथा शैवदर्शनाचार्य महामहिम प्रोफेसर बलजीनाथ पण्डित तथा श्री श्यामलाल पण्डित डीन फेकलटी आफ आर्टस कशमीर विश्वविद्यालय तथा एजुकेशिनिस्ट श्री आफताब पंडित के ही सुपुत्र थे। श्रीमती मुगलानी इनकी बुआ थी जो विवाह के केवल डेढ़ साल के भीतर ही परमध ाम को चली गई। माता वेशमाली स्वामिजी को बहुत चाहती थीं इसलिए उनकी शादी कराना चाहती थीं परन्तु स्वामी जी स्वभाव से विरक्त विवाह के विरुद्ध थे । परन्तु माता के अनुरोध तथा मुगलानी के पिछले सम्बंधों को याद करके मान गए। उनके एक भक्त श्री शिवजी मलकनाग अननतनाग ने मुझे सुनाया था कि दुल्हा बनकर सुसराल जाते हुए;

सतचित आनन्द अखण्ड अगाधई; यादई कर पानह पनुनुई स्वरूप1;

भजन की रचना की थी। विवाह के कुछ देर बाद ही श्रीमती मुगलानी मायके भेज दी गई। जहां वह अकारण अस्वस्थ हो गई और फिर संभल न सकी। और फिर वापस सुसराल न जा सकी। वह अन्त तक शम्भू शम्भू पुकारती रही। उनके मन में एक ही अभिलाषा थी वह थी अपनी सास तथा अपने पतिदेव के अंतिम दर्शन। माताजी स्वामीजी को साथ लेकर कुलगावं पहुंची। सासूमां को प्यार से देखा फिर स्वामीजी की ओर टिकटिकी बान्धकर देखनेलगी। अभिलाषा पूर्ण हुई।

आंखों की बुझती हुई ज्योति सामने वाली ज्योति में समाकर विलीन हो गई। दशर्न के अभिलाषी मुठ्ठी में बंद प्राण छूट गए। वातावर्ण विषादयुक्त हो गया। अपनी पुफी के इस अंतिम प्रयाण में प्रोफेसर बलजीनाथ पण्डित भी उपस्थित थे। जिन्होंने मुझे यह वार्ता सुनाई थी।

विद्या:- स्वामीजी का बचपन वनपोह में ही गुज़रा। कुछदेर विद्या प्राप्त की एक सात अथवा आठ वर्ष आयु में अपनी तखती पर एक पंक्ति लिखी :-

सेपि दोजि मिलवारे होशह हिसाब तारे; 16

कृष्णजूराज़दान को जब पता चला कि स्वामीजी उनके भांजे द्वारा यह पद लिखा गया है तो वाह वाह करके कहा यह तो पूर्ण होगए है। पांचवी तक की विद्या पास करके स्वामीजी श्रीनगर चले गए और अपने जीजा के घर रह कर हिकमत सीखने लगे। तदपश्चात एक सिद्ध हकीम बन गए।

अपने गुरु महाराज स्वामी महर्षि शिवभरत लाल वमर्न से पहली भेंट:- स्वामीजी पहले से ही महर्षिजी की लिखी पुस्तकों का अध्ययन करते थे। इन से लिए महत्वपूर्ण बिन्दों को अपनी कापी पर उतारते थे। एक दिन स्वामीजी श्रीनगर में सायं को अपने साथियों, श्री श्यामलाल काचरू तथा श्री नन्दलाल बीरा बन्ड पर सैर कर रहे थे। सब की नजर महर्षिजी पर पडी जो प्रवचन देरहे थे। महर्षिजी ने सबको इशारे से अपने पास बुलाया। स्वामीजी को अपने बगल में बिठाकर उनकी कापी को देखा और स्वामीजी के कन्धे पर अपना हाथ रखकर सामने बैठे श्रद्धालों से कहा कि यह लडका पूर्ण है और एक लाख लोगों का उद्धार कर सकते है। चूंकि श्री भास्करनाथ रैणा महर्षि महाराज के शिष्य थे। इसलिए स्वामिजी कुछ समय बाद श्री भास्कर नाथजी के घर रैणावारी श्रीनगर जाया करते थे।

स्वामी श्री पंडित प्रथ्वी नाथ जी के कथन के अनुसार स्वामीजी गहन चिन्तन में डूबे हुए रहते थे। एक दिन वे कमरे में बैठे थे कि अचानक कमरे में प्रकाश पुंज प्रगट हुआ जो धीरे धीरे एक मूर्त रूप में बदल गया। यह स्वयं दयाल महर्षि शिवभरत लाल ही मूर्तिमान थे। अभिनन्दन तथा अभिवादन हुआ । कुछ बातें हुई। स्वामीजी को उनके पास लाहोर आने का निर्देश हुआ "मेरी माता इन दिनों बहुत ही अस्वस्थ है उनको ऐसी रुगन अवस्था में छोडकर मै कैसे आसकता हूं" स्वामीजी ने कहा। मूर्तरूप दयाल ने कहा ठीक है तुम अभी इनकी सेवा करो तो यह "ठीक हो जाएगी। फिर मेरे पास लाहौर चले आना"। दयाल की मूर्त छवि धीरे धीरे फिर ज़बरदस्त प्रकाश पुंज में बदल गई और क्षीण होती हुई अदृष्य हो गई। इस घटना से स्वामी जी आनंद से ओतप्रोत हुए। प्रात: जब माता नींदसे जागीं तो वह बिलकुल स्वस्थ हो गई थीं। स्वामीजी अपनी माता को आन की आन में स्वस्थ होता देखकर अति प्रसन्न हुए। इसी घटना का इज़हार स्वामीजी ने इस भजन में किया है:-

.गम कासिनम गमखारनय दमदारनई फोलरोवनस ।
हुष्यार सिन्द्य इशारनई हुष्यारनई फोलरोवनस ।।
मनजूर ओरय कोरहसय प्रेयमह ज्ञानय बोरहसय ।
सदाशिवहवई वोरहसई अम्य यारनई फोलरोवनस ।

आदि-

गोविंदह सतचे वानिये यीई छीई वनन ज्ञन्यानिये ।
लोलह सीत्य हा ब चअनिये दीदारनई फोलरोवनस ।2

गुरुधारण:-एक दिन स्वामीजी ने अपनी माता से निवेदन किया कि वह स्वामी शिवभरतलाल जी के दर्शन करना चाहते है माता ने स्वामी जी की इच्छा को स्वीकार करके सफर के लिए कुछ रुप्ये दिए और स्वामीजी एक ट्रैक में बैठकर जम्मू पहुंचे और अनेक स्थानों का भ्रमण किया। अंत में लाहोर पहुंच गए। महर्षि जी ने पहले से ही अपने एक

शिष्य से चारपाई बिछाने तथा उस पर चादर डालने को कहा क्योंकि कशमीर से एक महान अतिथि आरहे है। स्वामीजी महर्षि जी के पास पहुंचे। दर्शन पाकर उनसे दीक्षा ली। इस भ्रमण का उल्लेख इस गीत से मिलता है:

घरे द्रायोस हेन्दस आयोस करिथ प्रकमा ।
अमा यारो दिलस ओसुम साहिबह सुन्दुई तमाह ।
ज्ञान सोदुर दया सागर संतन हुद सरताज ।
पूर्ण कला साक्षात शिवई वुछित चोलुम तमाह ।
गोविंदह ओसुई सतगुरु छारान; छारन कोत कोत वोत ।
पतव टोठयोस ओरय पानय वनि कस आलमाह ।। 3

इस प्रकार स्वामीजी ने पूर्ण संत की उपाधि पाई तथा संतों की सरदारी का मुक्ट ग्रहण किया। इन्होंने अपनी कृपा से हज़ारों अभिलाषियों को दीक्षा देकर परमानन्द का भागी बनाकर कृतार्थ किया। इनमें पण्डित दयाल पंडित श्री प्रथ्वीनाथ जी; माता कमलावती काचरू; उच्चकोटिके विश्वविक्षात मनोवैज्ञानिक डाक्टर धास ;डाक्टर ई; हिच्च दोनों स्वटज़रलेण्ड के रहने वाले, आदि है। इनके गुरु महाराज परम संत दयाल इनके घर वनपोह भी पधारे थे।

व्यवसाय:- स्वामीजी भक्ति रस से परिपूर्ण होकर ब्रह्म लीन थे ही, साथ ही साथ हिकमत भी करते थे । रोगियों का निशुल्क उपचार करते थे। कई घातक रोगों का उपचार सफल रूप से करते थे। इनकी दी हुई दवाई राम बाण का काम करती थी। उनके कुछ शिष्यों को कुछ विशेष रोगों का उपचार करने की आज्ञा थी।स्वर्गी शिवजी मलकनाग उनमें से एक थे जिन्होंने मेरे घर के पाइल्ज़ रोग में ग्रस्त एक सदस्य को केवल पाँच खुराक दवाई से स्वस्थ कर दिया।

स्वामी जी का व्यक्तित्व: स्वामी जी छ: फुट की ऊँचाई वाले कदावार पुरूष, आकर्षक साफ चेहरा, तम्तमाते हुए गाल, मधुर व आकर्षक वार्तालाप, मीठी तथा प्रभाव शाली गम्भीर वाणी, साफ

पहनावा, माथे पर तिलक, सिर पर सफेद पगड़ी, लम्बा फिरन, घनी भौंहे, मस्त नयन वाले शोभायमान व्यक्ति थे। उनकी चाल ढ़ाल से वे बुढ़ापे में भी पुरघमक लगते थें। हर आगन्तुक का हाथ जोड़कर अभिवादन करते थे। खामोश मुद्रा में सामने वाले से मूक वार्तालाप करते थे। इस बात का साक्ष्य डाक्टर मेड़ार्ड भास "गोविन्द अमृत" भजन माला के आरम्भ में देते है।

स्वीटज़र लैण्ड में रहने वाले यह एक प्रभावशाली मनोवैज्ञानिक डाक्टर जो संसार के बड़े बड़े विशविद्यालयों में मनोविज्ञान पर भाष्ण देते थे किसी महान् गुरु की तलाश मे थे। उन्हें बताया गया कि ऐसा मनोवान्छित महान् गुरु भारत में ही मिल सकता है। मुम्बई में उनकी भेट स्वामी जी से कराई गई। दोनों एक दूसरे की भाषा नहीं जानते थे। द्विभाषी से काम न चला फिन आमने सामने मूक वार्तालाप होने लगा। डा० बास लिखते है मूक भाषा में मै ने स्वामी जी से जो कुछ भी पूछा मनोवान्छित उत्तर मिला। उन्होंने स्वामी जी को अपना गुरु मान लिया।

लगभग जून 1971 की बात है डाक्टर भास की चिट्ठी स्वामी जी के पास आई। पत्र अंग्रज़ी में था। अर्थ सुनाने के लिए पत्र मेरे हाथ में दिया। पत्र का सार कुछ ऐसे था : स्वामीजी ! मै नित्य आप के द्वारा सिखाया हुआ राजयोग का निरंतर अभ्यास करता हूँ। आज प्रात: काल मेरे बालों को कोई अपनी अंगुलियों से सहला रहा था आँख खुली तो एक तेजवान दम्पति को सामने खडा देखा। पुरूष जटादारी तथा मृगशाला पहने था। वह कौन थे? स्वामी जी ने आदेश दिया इसका उत्तर लिखो। मै प्रस्तुत हुआ तो स्वामी जी झट से बोल उठे रहने दो मै स्वयं उन्हें समझादूंगा। स्वामीजी ने नेत्र मूंद लिए शायद टेलीपैथी से उन के पत्र का उत्तर दिया होगा। कुछ अंतराल के बाद स्वामीजी ने नेत्र खोले और सामान्य बातचीत करने लगे।।

उनकी आध्यात्मिक उँचाई इस कदर थी कि हर समय अपने

स्वरूप में मग्न रहते थे। सब पर समान दृष्टि रखते थे। वे ज़ाहरी आडम्बरों से परे थे। बाहिर से बामज़हब तथा अंदर से लामज़हब थे।

नेबरि गोविंद बामज़हब दिलह किन्य छु लामज़हब। 4

वे विनम्र स्वभाव के संत थे। तालिबों को वास्तविकता का ज्ञान कराके सब पर कृपा दृष्टि रखते थे। आध्यात्मिक उँचाई को छूने के कारण सोफी संत अहद ज़रगर, सुलतान साहिब आदि आप से रूहानी रिशता रखते थे। पण्डितदयालश्री पृथ्वीनाथजी की माताश्री भाग्यवान को संत अहद जरगर ने ही स्वामीजी के पास दीक्षा के लिए भेजा था। स्वामीजी की शिष्या बनकर वह उँची पद्धवी को प्राप्त हुई। काशमीर शैवशास्त्र के प्रकाण्ड पंडित तथा शिव भक्त स्वामी लक्ष्मणजी प्राय: स्वामीजी के सम्पर्क में रहते थे। जब वे स्वामी जी के पास आते तो स्वामीजी के श्रीमुख से इस भजन को सुनाने का अनुरोध करते।

न तति मूजूद न तति फना अमासना पथ क्या रूद ।5

इस बातका ज्ञान स्वामी पंडित दयाल श्री पृथ्वीनाथ जी के मुखारबिंद से ही हुआ।

इसके साथ ही साधक गनाई की कहानी विस्तार से सुनाई कि किस प्रकार आनकी आन में वह कहां से कहां पहुंच गया।

सपुद हुशियार रूह ममताज़ बुलंद परवाज़ गोविंदो
हतो हा साधक गनयो बोज़ वनयो सीरि असरार बोज़,
मनहयो छुई फितनय साज बुलंद परवाज़ गोविंदो।।6

श्रीनगर में मेनटल हासपिटल की डाक्टर मिस हाक स्वामीजी की श्रेष्ठ भक्त थी। स्वामीजी हरबार कहते थे कि साफ रहो साफ खाना खाओ साफ पहनो सदा प्रसन्न चित रहो हंसो और हंसाओ, इस से मनकी बाछें खिल जाती है। शरीर तनाव से मुक्त हो जाता है। मेरे विरोध में कितनी बातें कहीं जाती है जिस पर भी मेरे उँपर ऐसी बेहूदा बातों का तनिक भी प्रभाव नहीं पडता है। मेरे मन में उनके विरुद्ध कोई

दुर्भावना नहीं रहती थी। इस कारण मेरी आनन्द अवस्था में कोई अंतर नहीं पडता । मै कितनी बार उनसे कुछ प्रशनों का समाधान पूछना चाहता था किंतु उनकी ओर देखते ही मन के अंदर शंका का समाधान मिल जाता था प्रश्न पूछने की तो बात रही। यह था उनकी कृपादृष्टि का प्रभाव। दंडवत करने से पहले ही हाथ जोडकर अभिवादन करते थे कितनी विनम्र भावना। समदृष्टि में बेजोड थे ही, मित्र की भांति पेश आने में कोई सानी नहीं था। सत्य कहने में कभी संकोच नहीं करते थे ।शंकर भगवान के हाथ से प्रसाद पाने की घटना सनाई तथा पिछले जन्म में वे स्वामी परमानन्द जी ही थे ऐसा भी सुनाया। शुगर रोग से ग्रस्त होतें हुए भी 80 वर्ष की आयु में भी प्रसन्न चित रहते थे।सर्दियों में मुंबई में रहते थे।

अंतरध्यान:-अप्रिल 1973 शनिवार के दिन मै स्वामीजी के दर्शन के लिए वनपोह गया। उन्होंने कहा श्री बंसरी लाल कोतवाल से कहना कि अब गर्म टोपी और स्वेटर की आवश्यकता नहीं रही क्योंकि दयाल अब आ गए है। मैने इस चेतावनी को न समझकर केवल दूत का काम ही निभाया।

9 अगस्त 1973 को स्वामीजी के ब्रह्मलीन होने का दुखद समाचार आया। इस रोज़ एक विशेष बात यह हुई कि स्वामी की इच्छा के अनुसार कि श्रद्धालओं की भीड ना उमड पडे ऐसी वर्षा हुई कि वनपोह को जानेवाले सभी रास्ते सेलाब के पानी के नीचे आ गए। इसलिए अंतेष्टि के अवसर पर कम से कम लोग उपस्थित हो सकें। सेवकों ने दस दिन के बाद एक यज्ञ रचाया।

वनपोह में रहने वाले एक महान संत स्वामी दमकाकजी7 ने मेरी बहिन से कुछ दिन पहले कहा था कि जबरदस्त वर्षा को देखते हुए संत मण्डली ने स्वामिजी के महा प्रयाण को तीन दिन रोकने का प्रस्ताव पारित किया जिसे स्वामीजी ने मान लिया था। यद्यपि वे मूर्त रूप से हमारे बीच नहीं है फिर भी भक्त जनों के हृदयों में पूर्ण रूप से मौजूद तथा पथ प्रदर्शक है।

प्रतिभाशाली भक्त कवि:-आत्मा की मुक्त अवस्था ज्ञान दशा कहलाती है तथा हृदय की मुक्त अवस्था रस दशा कहलाती है। स्वामीजी के भजनों में इन दोनों का समन्वय मिलता है।

न तति मूजूद न तति फना अमा सना पथ क्या रूद।

बडे से बडे पदार्थ को ठुकराते हुए केवल निष्काम भक्ति तथा संतों के दर्शनों की ही याचना करते है।

मोल मोज सोरुय च् म्योनुय, शुर्य भाष्यन दाद दिम।

अष्टहस्यजह व्यज़ नो मंगय, यिय मंगय तीय मे दितम।
प्रथ दोहयमे दर्शनस क्युत, संत सतगुरु साध दिम।
नय मंगय यरिलूक परिलूक, नय वैकुंठ मुक्ति।
जन्मह जन्मह चान्य भक्ति, सीवह पननी पाद दिम ।9

इनके भजनों में सनातन धर्म, शैवदर्शन तथा संत परम्परा अथवा निर्गुण भक्ति धारा का सफल निर्वाह किया गया है।

सम्सार भ्रम ज़ानआखर छु मरूनिय यति गछि स्वरुनुय पनुनय पान।

वीदव यिय वोन तीय गछि करुनुय यति गछि स्वरुनुय पनुनय पान10। तथा महामन्त्र ओमई ज़ान ग्यवुन सूहमई ज़ान 11।।

परम शिव ही हर जगह लीला कर रहे है, सारा जगत उन्हीं का स्वरूप है। हर एक ने इस राज़ को समझ कर निज स्वरूप का साक्षातकार करना है। जब तक ऐसी गति प्राप्त नहीं होती उस परम शिव का दामन पकडे रखना है। तथा उन्हीं की मर्ज़ी का इन्तिज़ार करना है। कहते है कि आजतक इस अमृत के प्याले को अनेक संतों ने पिया है आप भी इस शिव रूप प्याले को पियो, इसको मत ठुकराव:-

अज़ताम यिह प्यालय कीत्यव चव संतव त साधव

च् हो शिवई चोनॅ पूरह पअठी च् मा रोशी, हा गाविंदो न्याय यलि अंधे12।

जब मनुष्य ''स्व'' को पहचान कर उसमें स्थित होजाता है तो उसकी वाणी स्वत: ही छलकती है । इस दर्जे तक पहुंचनेके लिए जो दर्जे या मनाजिल तय करने पडते है उनको मूर्त तथा सरल रूप भजनों में देना कोई आसान कार्य नहीं किन्तु स्वामीजी ने अपने भजनों में अभिव्यक्ति का सफलतम निर्वाह किया है। इन भजनों में शास्त्रों की सी गहनता, दार्शनिकता की पराकाष्टा, गीतों की मधुरता, संगीत की लयता और संतों की तनमयता, ललद्यद नुन्दऋषि तथा पण्डित परमानंद की वास्तविक साधनात्मकता और फलसफा के साक्षात दर्शन होते है। हर एक भजन सीधे हृदय से निकला हुआ अर्थ और भाव से पूर्ण है। इसमें कोई पांडित्य नहीं अपितु उस दर्जे का ही विशुद्ध इज़हार है जो पढ़ते समय हृदय को छू जाता है तथा क्षणिक तोर उस मंज़िल के आनंद का आभास होजाता है। निर्मल हृदय का होना शर्त है।

दरबारि शाही सरकारि आली आलव द्युत पननी माली बोज केंच़व बनिथ वोन केंच़व खयाली आलव द्युत पननी माली बोज़ 13।

काफिया और रदीफ मिलाकर बनाए गए भजनो में ऐसा रस कहां। हर एक भजन में साधक के लिए रास्ता साफ नजर आता है।

निर्गुण धारा में राजयोग के भिन्न मंजिलों को भजनों में कैसे दिखाते हैं।

योग अभ्यास की प्रकिया का अनुसरण करके ही साधक निर्गुण अवस्था के उच्चतम स्तर तक पहुंच सकता है। प्रस्तुत है इसी को दर्शाते हुए एक भजन श्री श्याम सुन्दर के नाम:-

जय निरंजन स्वर भाग्यवानय बंदगी कर सुबह शामसुंदरो 14। इत्यादि। तथा

सोज़ सीत रोज़ु बेदार सुंदरो----------15।

इनके परम पूजनीय कुंजी वाले शिष्य पण्डित प्रथ्वी नाथ पंडित दयाल तथा माता कमलावती काचरू संत थे जिनकी नाव में बैठकर

हज़ारों भाग्यवान भवसागर पार करने के अधिकारी हो चुके है। आजकल भी महेंदरनगर जम्मू में इन के नाम पर एक आश्रम सक्रिय है जहां नियमित ढंग से अभिलाशी भक्त जन स्वामीजी के भजनों को गाकर सतसंग का आध्यात्मिक रस का पान कर रहे है।

सेवक
पुष्करनाथ रैणा मार्च 2001
लारीयार त्राल

क:- गोविंद अमृत; स्वामी जी के श्रीमुख से निकले अमृत रूपी भजनों की संग्रहीत पुस्तक।

संदर्भ: 1,2,3,4,5,6,8,9,10,11,12,13,14,15,16 गाविंद अमृत द्वितीय आवृति प्र० स० 125,175,185,96,175,107,175,80,135,86,173,153,155,163

7:- वनपोह में रहने वाले उच्च कोटि के संत।

गुरुस्तुतिः

1. दतात्रये कुलोदभूतं कौल जाति विभूषणम ।
आफताभ सूतं पूज्यं गोविंद नौमि सदगुरुम।।
दतऽत्रेय गोत्रस मन्ज़ युस वोपद्मव, कौल खानदानुक सुय भूषण।
आफताब कोलनिस पुज्यनीय गोबरस, सदगुरस गोविन्दस म्योन
नमस्कार।।
2. विश्वमाल्या प्रियं पुत्रं शिव भक्ति युतं सदा।
हरिहरस्यानुजं तं गोविंद नौमि सदगुरुम।।
विश्वमालि हिन्दिस टाऽठिस गोबरस, शिव भक्ती युस ओसुय लोर
हरि हर सऽन्दिस काँऽसिस भाऽयिस, सदगोरस गोविन्दस म्योन
नमस्कार।।
3. वन पोह भवं संतम् भक्तानां वरदायकम।
तपस्विनं जित क्रोधं, गोविन्दं नवमि सद्गुरुम्।
वनपोह किस तऽस्य महा सन्तस, भख्त्यन हुन्द युस वर दिनऽवोल
तस तपस्यिस येम्य क्रूधज़्यून नय, सदगुरस गोविन्दस म्योन
नमस्कार।।
4. भरतलाल सच्छिष्यं, गुरु सेवा परायणम्।
शिष्यानां ज्ञानदं नाथं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम।।
शिवभरत लालनिस रिऽतिस च़ाटस, गुरु सेवा युस ओस कऽरान।
शिष्यन हऽन्दिस ज्ञान दिनहवऽलिस, सदगोरस–गोविन्दस म्योन
नमस्कार।।
5. योगेश्वरं महात्मानं, योगशास्त्र विशारदम।
अज्ञान नाशकं देवं, गोविन्द नौमि सदगुरुम।।
योगेश्वरस तस महात्माहस, योग शास्त्र युस ज़ानान ओस।
अज्ञान गटहज़ोल कासन वाऽलिस, सदग्वरुस गोविन्दस म्योन
नमस्कार।।
6. अहिंसा मार्गगं नित्यं, भक्तानां मार्ग दर्शकम।
वीत राग गुणातीतं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम।।

अहिंसा धर्मस मानन वाऽलिस, भखत्यन हुन्द युस वतऽहावुख।
राग यम्य मऽशरोव तस गुणातीतस, सदगुरुस गोविन्दस म्योन
नमस्कार।।

8. आसीद वाणी सुधा, स्त्रोतं दया सिन्धुर्मनस्तथा।
ब्रहमतेज युतं सन्तं, गोविंदं नौमि सद्गुरूम।।
वाऽणी किन्य यस अमृत वुज़न्यव, दयायि हुन्दुय सुय सागर।
ब्रह्मा तीज़ स्वस्तिस तस्य महा सन्तस,
सत्गुऽरस गाविन्दस म्योन नमस्कार।।

9. स्वामिनश्छत्र छायायां, सुखिना सेवकाः सदा।
भक्तानां कल्पवृक्षं तं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम।।
स्वामी सऽन्ज़ि छत्र छायायितल, सेवक साऽरिय न्यत सुखहसान।
भखत्यन हऽन्दिस तस कल्पवृक्षसं, सदग्वरस गोविन्दस म्योन
नमस्कार।।

10. पुश्पाञ्जलिर्मयार्पिताः श्री गोविन्दस्य मस्तके।
त्रिभुवनेन शास्त्रिणा, श्री कृष्ण प्रिय सूनना।।
गोविन्द कोलस पूज़ा कऽरमय।
पोशि दोछ़ह लाजिमय शेरस तस।।
त्रिभुवन नाथन शास्त्रीयन त्ये, श्रीकृष्ण सऽन्दि टऽठ्य गोबरन।
सतगोरस पननिस पूज़ा कऽरमय, पोशि दोछ़ह लाजिमय शेरस तस।
पनन्यव टाठ्यव भक्त्यव सतग्वरस, सतग्वरस सऽनिस सोन
नमस्कार।।

ओम

सच्चिदानन्दह गोवेन्दह निरुपन्दह नमामिहम
चिदानन्दह सदानन्दह परमानन्दह नमामिहम
दीनबन्दह दयास्यन्दह निर्द्वन्दह नमामिहम
सानि जुवह सदाशिवह गोवेन्दह नमामिहम

अस्यि आयि शरणे

1. अऽस्य आयि शरणे पूजा करने, जाऽनिथ च्येय ओमकार छिय
   सासह बऽद्य प्रणाम गुल्य गन्डि गण्डी, दण्डवत बारम्बार छिय।।
2. सर्वज्ञ अन्तर्याऽमी दीवय, च्याऽनी ब सीवय चरणाख्यन्द कूटान्कूट
   अथ च्याऽनिस स्वरूपस, साऽनिय नमस्कार छिय।।
3. सासह बऽद्य ब्रह्मा, व्यषिण महेश्वर, दीवीतऽ देवता मुनीश्वर
   इस्ताद शरणतल डेडि चाने, लछि बऽद्य सन्त अवतार छिय।।
4. विज्ञान् सागर मैंज़ च्येई ईरन, फोक्ह डून्य हिव्य कीऽत्य ब्रह्माण्डिय
   इन्द्र चन्द्र सिर्ये यमई,काऽत्या बेशूमार छिय।।
5. ऋषि मुनि देवता त् कारण, साऽरिय छि धाराण चोनुय ध्यॉन।
   जाऽनिथ माऽनिथ च्य पनुन जुविय, निर्गुण निराकार छिय।।
6. अपरम्पार छय चाऽन्यि लीला, क्या ह्यक् त्वता करिथिई बो।
   शरमन्द साऽरिय शर ख्यथ गाऽमत्यि, व्यास आदि बऽड्ड्य भाष्कार
   छिय।।
7. च्वश्वय वीदिय ही नेति शुद्धय, उपनिशदई छि च्येई ललवान।
   गोविन्द च्याऽनिय गीतई छु ग्यवान, जाऽनिथ च्ये सार्युक सार छुय
   ग्न्दिुन छा बा ज़िन्दय मरुन। दरुन गाश गत् सई।
   कुन्न प्रनुन सरुन हरुन। दरुन गाश गत् सई।
   गोविन्द सुय गव दय सुन्द वरुण। दरुन गाश गत् सई।

ग्न्दिुन छा बा ज़िन्दय मरुन। दरुन गाश गत् सई।
कुन्न प्रनुन स्वरून हरुन। दरुन गाश गत् सई।
गोविन्द सुय गव दय सुन्द वरुण। दरुन गाश गत् सई।

स्वरन दुऽपनम कनिय दारुन

स्वरन दोपनम कनऽय दारुन
द्युतनम गोरन म्य तोसऽ च़ारुन
द्युतनम गोरन म्य तोसऽ च़ारुन
द्युतनम ह्योतुय ज़ोनुम ल्वतुय,
अर्थ ओम कारस च़ारुन।। ग्वर

दोप नम आलि अन्दर नेर
मालि सीऽत्यी छ़ालि फेर,
यन्दर वरन स्वरिय थावुन।। ग्वर

शब्द सत गोरन द्युतुम
रब्द ओइम पनिय क्वतुम
करुन गऽरथ आऽम्य पनदरन।। ग्वर

ओगुन ह्योतुम दोगनावुन
सत त असत व्यचारुन
सू हमस म्युल क्या करुन।। ग्वर

नच़न प्रेचि हुन्दुय ज़ान
क्वंरुम यलि पनुन मान
यीरिथ यन्य वानस खारुन।। ग्वर

सतगोर वोविरय दगिय दिचिम
यीरिथ यन्य वानस खचिम
व्याचारिक्य मुक्य क्या तरन।। ग्वर

वौनुन रल्योम यन्य सीऽत्यी
यलि आऽसिम पननी प्रीती
द्युतनम वाट तिमय दरन।। ग्वर

वानय वोथुम योहय थान
गयम पोम्बुर स्यठा जान
दया करनम म्य सत गोरन।। ग्वर

ज़ानन थानस ज़ानन वऽली
नत क्या ज़ानन बाज़रऽ अनी
यि थान शुभान वलिथ सरन।। ग्वर

खास खासव योहय ह्योत
म्वल छु गोब्ब तु तूल छुल्वत
बाज़िर अथ म्वोल क्याह करन।। ग्वर

तवय दोपनय तफिय करुन
रिन्दय बनिथ जिन्दय मरुन
भदिरि भव सरस तरून।। ग्वर

अवय बन्याव म्य उपाय

अवय बन्याव म्य उपाय
ओ३मन रटिम रुमन जाय।। ओम

गोरन द्युतुम सतुक ज़ल
दोपनम वासनायि मल्य छल
मनस तुल्यिन संशय छाय।। ओम

द्विहुक द्यरय छु नावुन
इन्द्रयन बल पावुन
अज्ञानस कड़िन ग्राय।। ओम

अवलय ओसुम न काम तय क्रूध
दोयुम ओसुम न मूह मद लूभ
अहंकार न नय छुम न्याय।। ओम

तवय टोठयोम म्य सत गोर
द्युतनम तमी योहय वर
दोपनम कास वुन्दस छाय।। ओम

सतगुर म्योन चन्दन कुल
तवय गोम तस साऽत्य म्यूल
त्रोवनम तमी पनुन साय।। ओम

काल सर्फव वोलुस नाल
चन्दनुक छु योहय हाल
छिनय दिवान ओत काँऽसि जाय।। ओम

शाह मारव तलिय रूऽट
मुशिक अम्युक यिमव ख्वट
चिऽ ह्यस राऽच्य मंज़िय दाय।। ओम

यि छुदूरे चम्कान
गछिथ निशि खटान पान
गयस पानस यिहय राय।। ओम

थोवन कोबरन सीऽत्य खोय
अवय खोटुन पनुन रोय,
लौल हत्यन गनान माय।। ओम

तिहुन्द मन रात तय द्यन
करान अम्यची स्मरण
गुऽणिय वखनान तिमय आय।। ओम

यिमय गुण खटी कम्य
अमी स्वरिफ्य रटी यिम
होश दारन छुय व्यचार।। ओम

गछुस चिऽ ह्यस दूरे मौज
वंलिथ योद छुस स्वर्फ फोज
पत वत छस यिहय त्राय।। ओम

मऽथऽव दिलस योहय गम
पतव नेरि अम्युक सम
त्यलि रोज़ख बे पर वाय।। ओम

करिथ पय वन्दिय छुय
म्य छम आत्मची द्रिय
अन्दी अती सरिय न्याय।। ओम

चन्दुन भगवानन मौंग
तमि सूत्य तम्य पान रोंग
सर्फन हुन्द न केंह परवाय।। ओम

सारिनय गोमुत अथ्य सूत्य वाठ

म्य नय रूद मनस भुल
त्राऽविथ सोरिय वुहय तय वाय।। ओम

सारिनय गोमुत अथ्य सीऽत्य वाठ
कति रूद अती शाट,
गाऽलिथ स्वर्फ नोनुय द्राय।। ओम

अम्युक मूल छुय बे तूल
अथ नय नेरान छुय कांह फूल
अम्युक मुशिक फटिथ द्राय।। ओम

चन्दनस आसान यिमय गुऽण
लगान यथ तऽ बनान स्वोन
अछ दाहन छुनुनय न्याय।। ओम

तिमन तरि कति शेहजार
यिमन पानस छु दहजार
मिसाल चन्दनिऽवी ज़ान।। ओम

आखिर चन्दुन छु शीतल
योहय पान सिय मल,
मलिथ फेरी च्य शेहजार।। ओम

गोमुत सत गोरस हाल
यिथय पाऽठ्यन यच़ काल
तसनय अम्युक कांह परवाय।। ओम

नेरि पानय सु न्चन
दितस ववुऽन च़ली ओन

भदिरि चज़ज्य साऽरिय छ़ाय।। ओम

मुढस मुर्खत छु कासान
अती पानय सु भासान
गयस पानस यिहय राय।। ओम
च्य क्या ह्युऽतुथ अम्युक गम
सरतले रल्या स्वन,
आस्यस युऽदवय कुनी त्राय।। ओम

थावख योदवय जऽ भूषन,
अख आसि सरतल ब्ययि आसि स्वन
सोनस निशि छासरतलि जाय।। ओम

स्वनस मेलान स्वनय आम
अख आसि पास ब्याख आसि खाम
ज़रगर छिन्यस साधनय छ़ाय।। ओम

ओं जय श्रीमत श्री नारायणय

ओं जय श्रीमत श्री नारायणय
सत् च्यत आनन्द विज्ञआन गणय ।।

बुऽद्ध श्री सरस्वती चरण कमलन
लक्ष्मी रातर द्यन छ़य मलन
ज्ञान विज्ञान पाद चा'ञ मूहनय ।। सत

अमर अज़र श्याम सुऽन्दर
कर च्योन'ध्यानिय मनोहर
मन यन न्यूथम मस्त गोस तनय ।। सत

सांक्षी चैतन चिय स्वयं प्रकाश
आदिअन्त रोस्त ज़ांह च्य न नाश
न्यर्मल निर्द्वन्द्व न्यर्गुनय ।। सत
अनन्त ज़ाग्रतन स्वपननय
सुष्कती तय प्रकाशनय
चिऽ तुरिया तीतय च्यथ गणय ।। सत

नाव रूप कोस्तब नाऽल्य च्य वनमाल
अधिष्ठान च्येय मंज़ न दीश काल
पाप गलिम च्याञि ध्यान स्मरणय ।। सत

च्यत खीर सागरस प्यठ छुय निवास
ख्यथ च्यथ करिथ च़ उपवास
अर्पण गऽछ़ च्येय तनय मनय ।। सत
स्यद्यन तऽ साधन स्यठाह खुश यिवान
भक्ती च्येनी मुक्तती दिवान
ग्यव गीत त़मी बऽ सगुऽणय ।। सत

अथि छुय शंख चकर तय गदा
पदम धारव्नि च्य बूजुथ सदा
मुदा कोडुथ म्य योर वननय ।। सत

यूग न्यन्दराह त्राऽविथ बिहिथ
शीश नागस प्यठ च़ दऽिरथ
ज्ञान मुन्द्रायि स्यद्धासनय ।। सत

मुकट च्योन संकट कट वुन
शुद्ध शान्त मुख किञ न्यथ असवुन
सीव च्याऽञ्य बु चरण क्षणऽ क्षणय ।। सत

दीवन ज़ीवन चयाऽनी-प्रय्य
अधीन रछ दीन बन्धय
च्य बगैर कुस तस यस बो वनय ।। सत

नाऽल्य बसन्त जाम श्यामऽ सोन्दरय
छिय काम दीव राम कृष्ण गन्धरय
कृष्ण रास ख्यूलुत बिन्दराबनय ।। सत

गूब्यन्द छुख च गुणा तीत
वीद पुराण स्वान चयाऽनी गीत
दीवी शीश नाग रात दवनय ।। सत
सत च्यत आनन्द विग्यऽन गणय ।।

स्वप्राश द्राव नोन यस नीशे

स्वप्रकाश द्राव नोन यस नीशे
कमि शीशे चोवनस बऽ मोय ।।

दीश काल रूऽस छुय प्रथ दीशे
निवास तिहुन्दुय दूबँठवोन सुमा
हनि हनि मंज़ छुस प्रवीशे ।। कीम

दुय त्राऽविथ सुय म्य नीशे
बुय सुय तय सुय बुय छुमा
तम्य ति क्वरनम यी उपदीशे ।। कीम

तस्य वनन आदि श्री गनीशे
तस्य वनान वेष्न त ब्रह्मा
तस्य वनान अऽड्य श्री महीशे ।। कीम

पूज़ करहय च़्य.रक्षी कीशे
सार्य कडयथम म्य च़्यय तमाह
छ़्यन वुडन्य असि साऽरी राग दीशे ।। कीम

सोरुय द्राव कुनि सुय नीशे
तस्य मंज़िय गछ़ुय हो लय
सार्य सिय मंज़ सु छ़ुय व्यशीशे ।। कीम

रछान छ़ुय च़्य पान ईशे
गूव्यन्दो कऽर नय क्षमा
स्वरत उोमय रोज़ख हमेशे ।। कीम

हा पननि पानो कसू पच़्चि यम

हा पननि पानो कसू पच़्चि यम
दम दम स्वरतो ऊं सूहम ।।

सोरुय त्राऽविथ तस्य मंज़ शम
च़्यावी न्यरामय पथ ह्यथी यम
तस्य दीवस कुन कर सर खम ।। दम

च़्यत चे नावि रठ सन्कल्प नम
साऽरिसिय मंज़ वुछ़ुन यारिय सम
दूर कर दिहि अभिमानुक भ्रम ।। दम

ओम मंज़ द्राखो सोरुय छ़ू उोम
उोम सिय मंज़ द्यू च़ऽ पानो तम
सीऽत्य नो छ़ुय वसान क्रिया कर्म ।। दम

मन किस असरस छुनथम गम
सूहम उोम कुय लोय थस बम
तमि सीऽत्य द्रासो अज्ञान भ्रम ।। दम

यारस प्रारान दितमो तम
मेल तम यितम कास्तम भ्रम
वादस ज़्यादऽ पज़ि वादना कम ।। दम

पान छुख आसवुन न्यरा लम्ब
प्रेयमुक प्याला पानय च्यावतम
आदिदीव मसह वुछ ज़्याद या कम ।। दम
ज़ानतो सम्सार माया भ्रम
दूर कर पनने पानुक अहम
पथ रोज़ी सुय कुन तस्य वनान ओइम ।।

गूव्यन्द क्याह करख क्रिया कर्म
क्या छुख करान सोरुय छु ओइम
ज़ानुन सोरुय ईको हम ।। दम

सर कोर भवसर म्यथा द्राव

सरऽ क्वर भवसर म्यथा द्राव
भाल च़न्द्रऽ प्रत्यक्ष र्दशुन म्य हाव ।।

दिहि अग्न बोटस मंज मन काव
सन्कल्प रूप ओस करान टाव टाव
ब्रह्म रूप सागरस वुछिने द्राव ।। भाल

पूर्व उतर किऽन्य आव हाऽरिथिय

पछिम दक्षिण किनगव नीरिथिय .
फीरिथ दिह अग्नबोटस च़ाव ।। भाल

ब्रह्म रूप सागरस वुछुन नो हद
भर पूर वुछनख वोथ सो मद
वह–शथ ओनथस प्राण तस द्राव ।। भाल

ज़गतकि सन्ताप लोगमो ताव
कामिय क्रूधिय च़िय म्य शुऽमराव
शेह लाव अद्वयत मस म्य च्याव ।। भाल
सन्कल्प अख वोथि दूर नेरि सुय
दोयुम वोथनय आसि च़्येय
मंज़िमे जायि च़िय पान गंज़राव ।। भाल

प्राण अपान हो मेलि यति नस
प्राण च़िय ज़ानुन सुय ततिनस
तस्य सीऽत्य मीलिथ दुय मशिराव ।। भाल

ज़ाग्रथ न्यन्दर हेयि मेलनुय
मंज़िमे जायि हो पानय छुय
पूर्ण पान ज़ान दिहि दृष्टि द्राव ।। भाल

हेरि हेरि खोतखो पोतमो फेर
वुछ थन स्वप्रकाश गोखो सेर
अद्वयत जाम पानस पाऽराव ।। भाल

द्रशिना तऽ ममता दूर द्राव च़िय
दूर त्राऽविथ छुख शूभानिय
हुशियार रोज़तो न्यन्दर मो द्राव ।। भाल

गूवयन्द पानस पान द्यू वुऽन
दुय त्राव सोरुय ज़ानुन कुन
न्यर्मल ज़लसिय मंज़ छय नाव ।।

बाल पान प्यठ म्यं कऽरमिऽच़ न्यंदरो

बाल पान प्यठ म्य कऽरमिऽच़ न्यंदरो
हाव भाल चन्द्रो प्रत्यक्ष रूप ।।

अन्दरी ओस दज़ान अज्ञान तुऽन्दरो
न्यन्दरे हुशियार क्वरथस च्येय
दज़िथ छ्यत क्वरथन गव हुन्दरो ।। 1 हाव

लूभुक चूर ओस नफच़स अन्दरो
फरिहेम करिहे ड़ासिय म्य
गोलथन अन्दरी वुछमख गुऽन्दरो ।। 2 हाव

अद्वयत ओंमुक छुय वज़ान यन्दरो
दुयी पानस दूर त्राव सुऽय
सुबहकि रंग वुछमख श्यामऽ सुऽन्दरो ।। 3 हाव

संकल्प काठस ठोम नार संदरो
ज़ोलथन पानय रूदुख च़िय
ज़िन्द पान मरिथ ड़्यकि कर स्यन्दरो ।। 4 हाव

अन्दर अच़िथिय मन्दरस अन्दरो
कुन वुछ न्यर्मल स्वप्रकाशी
शिविय छु अन्दरो शिविय छु मन्दरो ।। 5 हाव

विघ्न नाश करतो विघ्न राज़ईन्दरो
यिम तर्य तिम च्यानि कृपाये
युगियन स्यदथ दिववञ्र यूग्यन्दरो ।। 6 हाव

क्याजि छुख लागान वोज़ चिय बन्दरो,
न्यंदरे हुशियार गोमुत चिय
गोविन्द कुन ज़ोन वोज़
गज् न्यन्द्रो।। 7 हाव

भाल चन्द्र चोव थस न्यरामय मुऽय

भाल चन्द्र च्योव थस न्यरामय मुऽय
नाम रूप त्राऽविथ सोरुय छु दय ।।

न्यस्रय गुणी शिविय चिय
त्राऽविथ पनने पानिऽच्य दुय
दूर कर दिहि अभिमानिच्य सुऽय ।। नाम

अज्ञान अन्देहेरि क्वरुस मारय
ज्ञान प्रकाश ज़ाल वारऽ वारय
हा म्यानि टाठे स्वप्रकाशय ।। नाम

त्रयन चीज़न च्य क्वरथम ख्यय
कामुक क्रुधुक लूभूक भय
साऽरिसिय मंज़ छुम च्योनुय ज़य ।। नाम
स्वप्न दृष्टावत साक्षी चिय
दूर कऽरिथ पनने पानिऽच्य दुय
मन किस आऽनस दूर कर खय ।। नाम

नय छुख दिह तय नय मन चिय
नय छुख बुऽद्ध तय नय प्राणिय
सारि कुय साक्षी छुख पानय ।। नाम

आदिदीव गणीश मूलाधार ·
अथ रूऽट करिय सुय कुन यार
न्यबरऽ त अन्द्रय तस्य करु जय ।। नाम
आनन्द अमृत दिवन च्य दय
च्यथ चिय गोखो तस्य सीऽत्य लय
गूव्यन्द साऽरिसिय मंज़ ह्योतुथ पय।। नाम

दिहस अन्दर हृदयस,

दिहस अन्दर हृदयस, अन्दर प्राणस अन्दर वुछ ।
चम्कवुन छुय पान्य पानय पानस अन्दर वुछ ।।

नयबंर सुय छुय अन्दर सुयछुय सोरुय सुय गंज़राव
न्यबर अन्दर नो छुय भगवानस अन्दर वुछ ।।

दिह रोस्तुय ज्ञान रोस्तुय ज्ञाता रोस्तुय ज़ान
वुछुन न वूछुन छोन व्यथानस अन्दर वुछ ।।

त्रशिविऽन्य अवस्तायन अन्दर अवस्थायन लुऽभ
साऽक्षी सार्युक जुव च्योनुय ज्ञानस अन्दर वुछ ।।
यूगियन हुन्द नाद ब्यन्द नाद ब्यन्द वति नेर
सुय स्मरनस भजनस अन्दर घ्यानस अन्दर वुछ ।।

मूलाधारस नाभ्यस हृदयस कंठस भ्रू मध्ये
प्यन्ड़ ब्रमान्ड़ अपोर आयस थानस अन्दर वुछ ।।

युगी पुरषव वुछमुत छुय सुऽन्दर गूव्यन्दो
सुय समाऽज़िय अन्दर व्यथानस अन्दर वुछ ।।

आत्म तीर्थस मंज़िय च़ श्रान कर

आत्म तीर्थस मंज़िय चऽ श्रान कर
तथ्य मन्ज़ छय सार्थ्य दिवये सोन्दरो ।। 1

चि़य अन्दर चि़य न्यबर योहय ध्यान कर
प्रथ तरफ च्योनुय जुवये सोन्दरो ।। 2

यमी ज़न्मय प्राप्त न्यरवान कर
यम्य न कोर तिमविय रिवुये सोन्दरो ।। 3

पननुय पान कर सरऽ भगवान कर
पानस व्यन न दय छुवये सोन्दरो ।। 4

समतायि अर्मृत रात दोह पान कर
थलि थलि वुछ तन शिवये सोन्दरो ।। 5

परम सोऽख प्राव दिह अभिमान दूर कर
सथगुरु पादिय सिवये सोन्दरो ।। 6

योत यिथ पननुय हाऽसिल ज्ञान कर
सोरुय गूव्यन्द जुवये सोन्दरो ।। 7

तत्व ज्ञानय वासना क्षय यस

तत्व ज्ञानिय वासना क्षय यस मनू नाश सपुद
यिमन यि मन शम्योवुय तिमय सन्त साध हो ।।
प्रालब्ध भूगन न्यबर्य कित्र अन्दर्य न्यरलीफ छुय सु उद्ध
अछ्य वहरिथ अछ्य ज़ वटिथ छय तिमन समाध हो ।।
तिम तंरी पंरी अपरी बूज़ यिमव सारय शब्द
पूर अनुग्रह छुय तिमनिय आत्म प्रसाद हो ।।
पुण्य त पापिय दय्र तिमन हृदय गोमुत छु शुद्ध
गूव्यन्दो यिम छि सत ज़न तिमनिय छल पाद हो ।।

पाऽन्य पानय पान साहयब

पाऽन्य पानय पान साह्यब ब्याख कांह नो सोन्दरो
तस रोस्तुय वन्य सन्तन आख कांह नो सोन्दरो

दिह त दिहक्य चीज़ साऽरी यिमछि व्यकाऽरी तमाम
तस रोस्तुय वुछ त माछुय ब्याख कांह नो सोन्दरो ।।

कैवल रव चोन न्यर्मल डल म होशे चि़य ज़ांह
साह्यब तेहा च ब्याख द्राख कांह नो सोन्दरो ।।

सुय बुंय बुंय सुय हो अस्य ज़ऽ ज़ांह नो आऽस्य
व्राव दुय हो व्रंविथय वन ठाख कांह नो सोन्दरो ।।

गूब्यन्दन गुव्यन्दय ज़ोनुन सोरुय छु सुय
ज़ानऽनय रूऽस तम्य न ग्योव वाक्य कांह नो सोन्दरो ।।

•

अस्ति बांति प्रयि

अस्ति बांति प्रंयि रूप हयै वुछुन
सोरुय यि दय दयी वुछुन ।।

ज्ञान न्यत्रव कर नज़र
अन्दर शिविय शिविय न्यबर
आश्च़र यि वत मुय मुय वुछुन ।। सोरुय

स्वप्न दृष्टावथ चि़य तमाम
चि़य रूप चि़य नाम तंय अनाम
प्रणाम छुय जय जय वुछुन्न ।। सोरुय

अवांग मनस अगूचरय
अर्थव त शब्दव ते परय
आशच़र पनुन पानिय वुछुन ।। सोरुय

समतायि अमृत ह्यो च्युऽनुय
प्रथ तरफ कर छुय दर्शुनुय
कुनुय सु न्यरामयी वुछुन ।। सोरुय

सांरिसय मंज़य सुय म्य छुम
सोरुय बुय छुस क्या म्य गम
स्वयं ज्योती सुयय वुछुन ।। सोरुय

सत् च्वत् आनन्दिय अपार
न्यति मुख्त निर्मल न्यर्विकार
आधारय अभईय वुछुन ।। सोरुय

वुछुन छु छोन वुछुवन वुछुन
प्रथ तरफ कुनयु कुन वुछुन
न्यरद्वन्द निष्क्रयि वुछुन ।। सोरुय

गूव्यन्द च्योनुय पानिय छुयी
सोन्दर शुद्ध विज्ञान छुयी
निर्वाण छुय ज़िन्दय वुछुन ।। सोरुय

•

सूहम अस्मे

सूहम अस्मे सूहम असमे
तस मे केंह ना ज़ोन भीद सोन्दरो ।।

वपुदीश कोरमो योहय मनस म्य
मन ज़ेन कर अश्वमेध सोन्दरो
यति तति ग्वरविय द्युतमो ह्यस म्य ।। तस

अनुग्रह ओर कुय सपदुय बस म्य
सत् शब्द चोलमो खीद सोन्दरो
फ्वलमो हृदय च्वल वस वस म्य ।। तस

भीदज़ान केंह मो तस गूव्यन्दस म्य
तत् त्वम असमे वनान वीद सोन्दरो
भीद नो द्राव तस नारायणस म्य ।। तस

सहज़ समाधी लज यस

सहज़ समाऽधी लंज यस
च्वपाऽर्य तस दर्शुन छुये ।।

ज्ञानऽ नेत्रव सत्वरस
वुछानिय वुछुन छुये
सत च्यत छुय समतायि रस ।। चोपर्य

आलम पननुय वन ब कस
मुशिकिल स्यठाह वनुन छुये
जाय तोर नसह छय शिन्य हस ।। चोपर्य
गूव्यन्द होशय होश ह्यस
मीलिथ सगुणसिय कुन छुये
तस रूऽस न कांह कीवल सु बस ।। चोपर्य

सुय सन्त सुय

सुय सन्त सुय गव साध हो
यमिस सहज समाध हो ।।

सोरूय वुछख पननुय जुविय
यस वीदव दुऽप हय शिविय
रिवुय न तन्य छुय शाद हो ।। यमिस

भवसरस मंज पद्मऽवथ
न्यलीफ छिय तिम दिथ त ह्यथ
ख्यथ च्यथ अमुक्ता आज़ाद हो ।। यमिस

ह्रदयस तिमन केंह छय न दुय
दर्शुन तिमन प्रथ तरफ छुय
सुय साध न्यश अपराध हो ।। यमिस

वोथन ब्यहन असन गिदंन
शुऽग्नन हुश्यार ख्यवन च्यवन
दिवन तमिस दय नाद हो ।। यमिस

न्यथर खुलय थवि या सु बन्द
च्यपाऽर्य वुछन थलि थलि गूव्यन्द
निर्द्वुन्द्व अभय अगाध हों ।। यमिस

स्वप्नस मंज़ च़

स्वप्नस मंज च़ऽ रोज़ हुशियार
स्वप्न संसार सुऽन्दरो
स्वप्न दृष्टा च़ स्वप्नुक सार
च़ऽ कर ब़यचार सोन्दरो ।।

स्वप्न यावुन स्वपुन ल्वक्व्यार
स्वप्न घरऽ बार सोन्दरो
स्वपुनुय दिह धन तय द्यार ।। स्वप्न संसार

स्वप्न युन गछुन व्यवहार
स्वप्न है कार बार सोन्दरो
स्वप्नस मंज़ चऽ रोज़ हुशियार
स्वप्न संसार सोन्दरो ।।

सुय वुछुय म्य यस

सुय वुछुय म्य यस न कांह शक्लिय छय
करूम दर्शुन हैऽरतस अक्लिय छय ।।

सुय वुछुय म्य यस न कुल गुथर छय क्राम
सुय वुछुय म्य यस वनान सन्त छि अनाम ।।

सुय वुछुय म्य सपिद मन्जूरे नज़र
ब्यन्दसिय स्यन्ध ज़रसिय गव भास्कर ।।

सुय वुछुय म्य यस न वरण आश्रम
ज्ञानियन ज्ञान यमि सुन्द छुय प्रेयम ।।

सुय वुछुय म्य यमिसुन्दिय सार्यनिय तमाह
ध्यान धारण विष्ण शिव दिवी ब्रह्मा ।।

सुय वुछुय म्य युस वुछन छुय सारिनिय
यम्य वुछुय तस छय खबर नत प्याऽरिसिय ।।

सुय वुछुय म्य यम्य सिन्दी साऽरी छि नाव
तमि सून्दुय नाविय सोरूम यस कांह न नाव ।।

सुय वुछुय म्य यम्य सुन्दुय कारणन ति लोल
सुय वुछुय म्य कोस यम्य सन्तन ति होल ।।

सुय वुछुय म्य अन्दर न्यबरय शूभि सोस्थ
वीदविय ग्योवमुत छुना दीश काल रोस्त ।।

सुय वुछुय म्य यस यूगी छ़ारनिय
धार नाये लोल ध्यानय धारनिय ।।

सुय वुछुय म्य यस वनानिय वीद शिव
सत् चित् आनन्द न्यति मुऽक्त सोनिय जुव ।।

सुय वुछुय म्य फ्वल ह्रदय गूव्यन्दसिय
तार द्युतथस आर आय स्वछ़न्दसिय ।।

सर्व शक्ति मान

सर्व शक्ति मान भगवान परि पूर्ण
आनन्द गण नारायण लगयो ।।

अर्पण बन च़्येय पथ तन मन धन
श्याम सुन्दर मन मूहन लगयो
शरण बनऽ च्योनुय नाव मनि खनऽ ।।

विनती बोज़ च़्य नऽ अद कस बो वनऽ
म्वकलाव आस मुह ज़ालऽ ह्यनऽ लगयो
मंज मञ्ये छुख न्यबर मा बऽ छ़्यनऽ ।। आ॰

मटि छुसय हटि छय क्वसतब मनऽ
न्यर वासन गरूड़ासनं लगयो
मद मार म्योनुय सूती सुऽदर्शनऽ ।। आ॰

कृष्ण अवतार गिंज़ाथ बिन्दराबनऽ
दिवकी गाश आव च्यानि ज़्यनऽ लगयो
न्यगुण आख वुऽलसनऽ रूत च सोगुणऽ ।। आ॰

यन्दरस मद वाज्याथ मधसूदनऽ
लीला करिथ गूवर्धन लगयो
आश्चर लीला च्याऽन्य मऽश नो तनऽ ।। आ॰

केशव भवसर तार मूह आवलनऽ
भरतनीय भायि लक्षमण लगयो
गूव्यन्द ध्यान धारि च्योनुय क्षण क्षणऽ ।। आ॰

तन मन धन

तन मन धन अर्पण च्य करो
सतगुरो लगय पम्योशिं पादन ।।

दयायि सीऽत्य च्याने वरो
स्यद्ध सपदान साधन छि साधन
परम आनन्द कन्द ईश्वरो ।।

त्रेयि ताप सन्ताप के ज़रो
मारऽ गोस क्षय कर अपराधन
भक्ति वत्सल परम परमीश्वरो ।। सत०

दीन बन्धऽ दया स्यन्ध आऽरच्चरो
बोज़ कन दार सान्यन नादन
च्यानि लोल सीऽत्यी मन बो भरो ।। सत०

अगूचर आश्चर अमरो
कर कृपा सानि जुव छुय आदन
दरऽ ल्वग मर मा हयथ शरो ।। सत०

बखचख यस तस क्या डरो
पापन क्या प्यंठ कमन ज़्यादन
यस करख शक्ति पतिऽच्य नज़रो ।। सत०

केशव तार दिम भवसरो
गूव्यन्दस मशि नऽ च्याऽय लादन
आदन भाजि छुय ना ज़रऽ ज़रो ।। सत०

नीरिवे वुछिन्ये

नीरिवे वुछन्ये दारि त बऽरी
हरी हर हय ओरऽ आव हाऽय लोलो ।।

तीजुक मूकट मोख्ता जर्य जऽरी
क्या ज़बर छुख पैराव हय लोलो
नाल्य छुख क्यमखाब ज़रबाब ज़ऽरी ।। 1 हरी॰

दुध्य नाबद प्याल थाल बर्य बरी
थवि वे बोड़छु भकखि भाव हय लोलो
किशिमिश सब्ज़ बादाम मुछ्युरी ।। 2 हरी॰

सोम्बरिव भाव पोश गुलि जाफरी
लछि नोव अमिसिय नाव हय लोलो
नाल्य छुनोस पोश माल पूज़ कर्य करी ।। 3 हरी॰

करिवे दर्शुन बनिव अर्य दरी
अज़ म्यति तमना द्राव हय लोलो
नीय सीऽत्य सारिनिय असि वर्य वरी ।। 4 हरी॰

तुऽतायि कर्य कर्य वचन चर्य चरी
पर्य तोस करितोस ग्राव हय लोलो
कस छिव मन्दछान दिवान त्वह्य नरी ।। 5 हरी०

छांडान यस गयि सास बद्य वरी
सुय सोन आंगन चाव हय लोलो
शेहर गाम अमर नाथ प्यठ कौंसरी ।। 6 हरी०

वुछिनीय तस छि साऽरिय ईश्वरी,
गूव्यन्दस न ऽ केंह दाऽदी लोलो
माऽज्य सरस्वती श्यामय सुऽन्दरी ।। 7 हरी०

बूज़िवे वार वननछि वैखोरी
गूव्यन्दन यि छांज्याव हय लोलो
वनि आस मनि मंज़ ओइम स्वर्य स्वरी ।। 8 हरी०

सम रस जिसने पिया

सम रस जिसने पिया मसरूर उसी को समझो
योगी भक्त और ज्ञानी ज़रूर उसी को समझो ।।

जिस पर जगत है कायम जिससे हुवा हुईदा
जिस में फिर फना है हजूर उसी को समझो ।।

काम क्रूध लूभ मोह मद अंहकार सहित
मन को जो कोई मारे, बहादूर उसी को समझो ।।

आप सहित जो कुल को हरी रूप जाने
खुद से खुदी करे दूर, मन्सूर उसी को समझो ।।

सन्तोष विचार से मन काबू में ला रखेगा
राज़ी रज़ाये हक पर शाकिर उसी को समझो ।।

तन मन धन जो अर्पन भगदत को करेगा
पर उपकार में ही मशहूर उसी को समझो ।।

केवल कैवली भाव में चित जिस का स्थिर है
संशय हुए फना है मंजूर उसी को समझो।।
आपको शरीर माने ईश्वर को न जाने।
जो कोई नर है ऐसा मगरूर उसी को समझो।।

अपने आत्मा से भिन्न भगवत जो जाने
खुद को न पहचाने काफिर उसी को समझो ।।

रहि रास्त से कुल्ला कर झूठी राह दिखावे
शैतान बच्चा वह नर्की और चोर उसी को समझो ।।

खुद हो प्रकाश स्वरूप और को जो चम्कावे
वह आत्मा है गूव्यन्द पुर नूर उसी को समझो ।।

हा जूव सत्गुर

हा जुव सत्गुर चरणार्ब्यन्दन
कोना तस बन्दन जुव तय जान ।।

मुऽख होव दुःख कोस सत्चित् आनन्दन
प्राप्त असि बन्योव बोड़ कल्याण
अनर्थ हाऽनी कर निर्द्वन्द्वन ।।

दुऽध्ऽ रूऽस थन्य कति नेरि पोञ मंदन
पुरुष रूऽस त्रियि वुपद्या सन्तान
तिथ गोरनिय रूऽस न्याय नो अन्दन ।। कोन

क्रय कर गुरु रूऽस मान्य यस वुन्दन
तस क्रंजिल्यन पोञ सारून गछ़ान
म्वक्लि कति निशि मायायि फन्दन ।।

गुरु सीवा कर बन न्यर बन्धन
ग्वरऽ सीवा यूग तफ ज़फ ज़ान
खोच़ मो व्यवहार भायन बन्धन ।।

ह्यछ़िनावि करञ प्राणच्ये सन्धन
सूहम स्वरून तस प्रधान
हुशियार शुंऽगन असन गिन्दन ।।

मेलि नावि तेल नावि गायत्रेय छन्दन
सुलभ पाऽठय बनि आत्मज्ञान
यस कर दया तम्य दया स्यन्धन ।।

शीतल मन ज़न चन्दरम त चन्दन
बनि यिमनिय गलि दिह अभिमान
त्रष्णायि वासनायि फुट रावि दंदन ।।

अभिमान हचि जुवऽ तिमय रंदन
व्यचार किन प्रावन निर्वाण
आशायि न्यन्द्यायि गिन्दन प्यन्दन ।।

गुर व्यज़ पूर्वक कर गुव्यन्दन
सहज़ क्रय राज़ यूग यथ वनान
क्वर अनुग्रह ईशन दीन बन्धन ।।
कोनऽ तस वनदन जुव तय जान ।।

रत्य रत्य पोश च्येय

रत्य रत्य पोश च्येय कित छुस ब् चारान
प्रारान ह्यथ ब पोशऽ मालो लोलो ।।

बाल गूपाल साल यित छाल मारान
रस मस बर्य मय प्यालो लोलो
च्यतऽ मत करत हितऽपतऽच्येय ब लारान ।।

तारऽ छुख तारि गमत्यन चिय तारान
भव कीशवऽ दयालो लोलो
इत नित दित दर्शुण चिय नाराण ।। प्र०

आनन्द कन्द दीन बन्द छुख धारान
अवतार त्रिज़गत पालो लोलो
भखत्यन रछन असरन गालान ।। प्र०

दितम शुऽद्ध बुऽद्ध दुऽध छुस कारान
कन्द नाबद नन्द लालो लोलो
गम बम कासतम दम छुस गुज़ारान ।। प्र०

राम चन्द्र श्याम सुन्दर काम दीव छारान
चिय चिय रटहथ नालो लोलो
मशिनो अशि कनि छिय मुऽख्तऽ हारान ।। प्र०

वनऽ वनऽ क्षणऽ क्षणऽ व्यनऽ पोश छारान
भक्ति भाविक्य कमि हालो लोलो
आत्म दीव गूव्यन्द च्येय प्यठ खारान ।। प्र०

त्रिवभन नाथ अनाथ है

त्रिभवन नाथ अनाथ है करो प्रसाद स्वामी
गुरु दयाल विनती सुनो सत्गुर राधा स्वामी ।।

आस तेरी मुझ दास को पास अपने बुलावो
निवास करो मन मे मेरे छूटे सकल व्याध स्वामी ।।

घट का अन्तर पट खोलो झट पट बोलो नाथ
संकट खटका है हटा दो आलस्य प्रमाद स्वामी ।।

मेरा तेरा सब कुछ समझ आई पाई बुद्धि बनाई
भाई बहिन पिता माई दादा परदादा स्वामी ।।

तीनों ताप शाप से बचावो आप प्रभू
अज़पा जाप सिखावो मिटे अपराध स्वामी ।।

तुम सब में सब तुम में तुम ही तुम हम नही
अलख अगम अनूप है तो सब के बुनियाद स्वामी ।।

दीन दयाल है तू भगवन पूर्ण अन्तरयामी
तन मन धन अर्पन करूँ सेवों गुरु पाद स्वामी ।।

बारम्बार नमस्कार हमें सच्चिदानन्द अपारा
निर्विकारा निराकार कोटि प्रणामा अगाध स्वामी ।।

अज्ञान के अन्धेरे में हमें घेरा है विषयों ने
स्वयं प्रकाश रूप दिखावो सुनो फर्याद स्वामी ।।

महाराज आज दियो वर प्रसन्न हो कर हम को,
प्रेम तेरा मन में बड़े ज़्यादा ज्यादा स्वामी ।।

शुद्ध मन हो बुद्धि निर्मल लूभ ख्यूभ सब भागे
प्रेम रस पिये मन जब तब लगे समाध स्वामी ।।

अपने देश में पहुँचाओ आवो सत्गुरू दयाला
गूव्यन्द का मन दुःखी हुआ है सुनाओ अनहद नाद स्वामी ।।

हाथ आया

हाथ आया सब मुहबत से मुझे
दिल हुआ शादा वहदत से मुझे ।।

मरहबा ईल्ला मिला = कुछ फिक्र बाकी नही,
यह हुआ हासिल नदामत से मुझे ।।

मिलते मज़हब हैं सब वस वासे दिल
अब गरज़ कुछ ना है मिलत से मुझे ।।

है अजाईब यह सरुरे सर मदी
यह मिला सत्गुरु की खिदमत से मुझे ।।

समरस हम ने पिया भर भर के जी
आई मस्ती उसके अमृत से मुझे ।।

काकता छूटी हंस अब बन गये
यह हुआ सन्तों की सोहबत से मुझे ।।

आह अन्धेरा मिटा सब जलवा देखा चाहो
यह नज़र आयी हकीकत से मुझे ।।

दिल का दरवाज़ा नहीं है खोल कर दिखलाऊंगा
क्या हुआ था दिल को फुरकत से मुझे ।।

कहता है गूव्यन्द करो ज़िकिरि खुदा
दिल हुआ साफ इबादत से मुझे ।।

यह कहा जाता है

यह कहा जाता है पूरी आस से,
दिल सफा होता है योग अभ्यास से ।।

यह प्रकट करना न चाहे क्योंकि है असरार सन्त
सतगुरु ने खुद कहा मुझ दास से ।।

जब करो मुहबत से चन्द दिन यह अभ्यास
कुल खबर आएगी फिर आकाश से ।।

कुल करामातें यह करनी बच्चों की खेल है
खुद तुझे मालूम होगा अनफास से ।।

नफच काबू करो फिर है बराबर घर जंगल
कुछ न पाना होता है वनवास से ।।

काम कर हिम्मत से न हिम्मत को हार
हाथ आएगा न फिर वसवास से ।।

दिल से दूई दूर करले दीन दुनिया के ख्याल
है गरज़ असली यही सन्यास से ।।
इलम सीना उसको कहते जो किताबों का नही
तुम को कहता हूँ किसी विशवास से ।।

काम मोहादिक से मन को शुद्ध रखो
है गरज़ असली यही उपवास से ।।

ए गूब्यन्दा दिल लगा कर सुन श्रवन
जिस तरह सुनता था शुक जी व्यास से ।।

आज़ मालो करके

आज़ मालो करके तुम तदबीर को
फिर नहीं सकता कोई तकदीर को ।।

सब्रि व शुक्रि सदा दिल शाद है
क्या करेंगे मिलके वह जागीर को ।।

जिस के दिल में यार की मुहब्त नही
क्या मज़ा उसकी फिर तकरीर को ।।

है तसवुर जिनको जम जाता नही
ढूँढ़ते हैं फिर वही तस्वीर को ।।

यार के इशक से जो मजनून हो गये
ढूँढते दिल गीर वह है पीर को ।।

और वह माशोक कैसा सख्त है
जाके पूछो आशके दिलगीर को ।।

जिनको कुछ राज़े हकीकत है मिला
तोड़ते वहम की वह ज़न्जीर को ।।

जिनके दिल में मुहबते दुनिया नहीं
क्या करें वह सीख कर अकसीर को ।।

जीते जी जिनको बिहिश्त हो देखना
आये वह मुल्तान से फिर कशमीर को ।।

जिस्म के आशक है जो वह जादू सहर
सीखना चाहते है वही तसखीर को ।।

गाफिलों को है पता मरना नहीं
वह बनाते रहते है तामीर को ।।

रात व दिन दिल को सफाई कर दिला
ओर से क्या है गरज़, गम्भीर कों ।।

और के एबों को क्या तू देखता
मांग माफी अपने ही तकसीर को ।।

गाफिलों को क्या खबर है है खबर
आई गूव्यन्द रोशन ज़मीर को ।।

सोच करने से

सोच करने से मिटी आफत मुझे
यार पाया दूर हुई कुल्फत मुझे ।

मुरशिदे कामिल ने की हम पै कृपा
मय के बदले दे दिया मारिफ़त मुझे ।।

नोश करते ही हुए मदहोश व मस्त
दिल भी चाहता था यही हालत मुझे ।।

दिल से यकदम दूर दुई हो गई
अब नज़र आती नहीं कसरत मुझे ।

दीदा दिल के खुल गए देखा उसे
जब हुवैदा हो गया मुहब्त मुझे ।।

मज़हबों के सब खत्म झगड़े हुए
अब किसी से है नही नफरत मुझे ।।

मन्दिरों मस्जिद बराबर है हमें
दिल मौजे मारता है वहदत मुझे।।

हुई अनर्थ हानी अब अजब आया सरूर
है जो दाइम रहने वाला मिल गया राहत मुझे ।।

आप सहित रूप गूव्यन्द का है सब
दीदये दिल से दूर हुई गफ़लत मुझे ।।

शाइर है मस्त

शाइर हैं मस्त आशार से
आशक है मस्त दीदार से ।।
ज़ाहिद हैं मस्त आचार से
आकल है सोचो विचार से
आधीन है मस्त औतार से ।।
आमिल है मस्त ओमकार से
शागिल है मस्त अज़कार से
कामी है मस्त उस यार से ।। आशक
मुनसिक है मस्त दीनार से
बनिये है मस्त ब्योपार से
आलिम है मस्त गुफतार से ।। आशक
सब्ज़ार है मस्त बहार से
मस्त ज़िस्म है आहार से
बुल बुल है मस्त गुलज़ार से ।। आशक
मानी है मस्त नमस्कार से
जाहिल है. मस्त अंहकार से
मोही है मस्त संसार से ।। आशक
सरदार है मस्त तलवार से
नौकर है मस्त सरकार से
मूर्ख है मस्त ब्यवहार से ।। आशक
तुम से कहूँ विस्तार से
ब्रह्मन है मस्त जुनार से
कर्मी है कारोबार से ।। आशक
नासिक है मस्त काल से
आशक है मस्त चाल से
गोव्यिन्द है मस्त हर हाल से ।।
आशक है मस्त दीदार से ।।

हाथ आया हमको साहिब

हाथ आया हमको साहिब मिल गया परतीत से
दुःख हुआ है दूर सारा मिल गया वह परतीत से ।।
है मंगल जंगल मे हम को यह शनिश्चर राह मंगल
क्या करें हूँ गर नहस भी कुछ न डर अब कीत से ।।
तीन बन्ध को जब लगाया तब दिखाया उसने नूर
सर हिलाया दिल मिलाया हमने उल्टी रीत से ।।
हम को दर्शन उसने दिया मन लिया बे खुद किया
रस पिया भरभर के हमने चढ़ के श्यामा सीत से ।।
यार पाया गीत गाया खुद की छाया मिट गई
करके पूज़ा शंख बजाया मिलके माया तीत से ।।
बादशाहों को कहां सुख वह जो है फुकरा को नसीब
है सरुरे दाइमे जो मिलता मन की जीत से ।।
हर वक्त हुशियार रहना यार का दीदार कर
बार बार तुम यह विचारना कोन हूँ मै रीत से ।।
खाते पीते आते जाते गाते है हम उस का नाम
मन हुआ सन्तुष्ट गोविन्द का गुरू के गीत से ।।

मुनतिज़िर है हम

मुनतिज़िर है हम तेरे दीदार को
आओ बुल बुल खुश करो गुलज़ार कों ।। 1
कर शफा अय शाफिए मुतलक है तू
दर्दे फुरकत दूर कर बीमार को ।। 2
इज़तिराबी मेरे दिल में वे अनन्त
देके दर्शन दूर कर आज़ार को ।। 3

क्यों तुझे इन्साफ़ आता ही नही
इस से बेहतर मार लो तलवार से ।। 4
जब मुझे मंजूर ऐसा ही है तो
सर टपा देते मेरे दीवार कों ।। 5
सीना बिरयान दिल जलाया हिजर ने।
इससे बड कर कब जलन है नार को ।। 6
करनी है रैयत परवरी है फर्ज़ अज़ीम
हम है रैयत आपकी सरकार को ।। 7
हम है बालक तू हमारा है पिता
कान धर कर सुन मेरे गुफ्तार को ।। 8
दामे गफलत मैं फंसा हूँ क्या करू
तू हीं कर आज़ाद गिरिफतार को ।। 9
रात दिन हम दर तलाशे यार है
ढूंढते फिरते जंगल बाज़ार को ।। 10
ए खता पोशो ! अता पोशे जहां
पाप सारे बख्श गुनाह गार को ।। 11
सब यहां सोए कोई बेदार नही
दे खबर असरार की हुशयार को ।। 12
तू ही तू है हम न तुझ बिन ज़रा भी
जान लेगा कोई इस असरार को ।। 13
ए गूब्यन्दा दिल से कर दूर दुई
जा बजा तुम देख फिर उस यार को ।। 14

मै गाता हूँ

मै गाता हूँ नगमा हाय रूहानी
ज़बांन पर तू है मेरे हरदम भवानी ।।

सदा की हैं तुम ने मुझ पर मेहरबानी
मै चाहता हूँ बनाओ ऐक कहानी

करु इन्दराज नगमए राज़ दानी
मगर कर इस में तू खुद दूरा फशानी ।।

खुशी से कह तू मेरी ज़बानी
बड़ेगी फिर बनेगी शाद मानी
मै था मुर्ख तू आई रागहानी
हुई अच्छी मेरी अब ज़िन्दगानी ।।

किई रंगीनी और खुश बयानी
वह पढ कर खुश हुए योगी ज्ञानी
भगत सुन कर बने खुश और दानी
छूटे दुःख से जो है दुःखी प्राणी ।।

हटा दीजिए भलाए आसमानी
करुँ अर्पण तेरे मैं यह जवानी
गोविन्द की है फकत तू यारि जानी
तेरे बिना सब जगत है फानी ही फानी ।।

जायि जाये सायि

जायि जाये सायि कर्यज्यस बेकस उफताद छुय
आर यियिनय ही दयालय नाबकार छुय गूव्यन्द ।।

बुर्द पानय दर्द वुऽननय पर्द पूशी कर्यज्यस
बऽ मन किञ शरणे आय अऽबदार छुय गूव्यन्द ।।

मुर्खय ओत

मुर्खय ओत पनन्यन आऽबन खटे
साध सत जन पनञन आबन छटे ।। 1
ब्याख व्ययि सुन्द बोर छासा बारि ह्यवान
पननि पानो पानसिय पान हो मटे ।। 2

पान वुछ्य पानस म्य क्याह २ आऽब्यि
लूख छिय जानिय वनिथ तुलन वुऽटे ।। 3
हर गाह अऽब छुय कांह सूति कासिय
वुछत जल जल उद्धय बनि गाशी मंज़ गटे ।। 4
छुख नय त्यलि क्याज़ि ब्याख बासी
असली छय पानसिय कसर खुटे ।। 5
योत यिथ कर त केंह जान ति गछ़ी जान
नत ख्यय २ शोंगि २ ओत बर मो टटे ।। 6
पज़्य योर प्वज़ वनन निशि प्वत फेरिनो
आलम त्येय गेलि दियि पुटि पुऽटे।। 7
पज़र नय हाव भाव यति पज़योर।
नेरि क्या सूद हरगाह अन्दर रटे ।। 8
डोड़ि मो गछ़ वुड़ि दितो मनसिय
कर अभ्यास यारस पानय सू मटे ।। 9
दज़ि आलम पज़ि यख दम छुम कसम
हर गाह अन्दरिम न्यबर गूव्यन्द छ़टे ।। 10

जानय गव

जानिय गव ज़ानिय बनेयि भाग्यवान
भगवान लगयो पार्य पाऽरिये ।।
भक्ति वत्सल बोज़ ही सर्व शक्तिमान
सारिनिय करत साऽयाऽरिये
कृपा करवनि ही कृपा निदान ।। भ॰
प्राण च्येय वन्दयो ही प्राणकि प्राण
बोज़ सा सारिनिय जाऽरिये
यूगिकि यूग बोज़ ही ज्ञानिकि ज्ञान ।। भ॰
होशिकि होश बोज़ ही ध्यानिकि ध्यान
पापन कर मसा शुमाऽरिये

टाऽठय् छिम साऽरी ही जानिकि जान ।। भ॰

सुख दिख ही कल्याणिकि कल्याणऽ
कासुख ज़लथ नादाऽरिये
बान रसित्यन दि बान ही दया वान ।। भ॰

च्यिय सोरुय त बुय ओसुस बहान
वुछ्य व्यचार व्यचाऽरिये
जय जय चयेयय अमि ओर केंह न ज़ान ।। भ॰

द्रिय छम च्याऽनी सोरुय च्यि पानऽ
अरय बहान च्यि चोपाऽरिये
कोताह वन्यतन ब्याख ओन नो मानि ।। भ॰

गूव्यन्द छु शर्मन्द दयि च्यानि ऐहसान
माफ करतस हा पापऽ बाऽरिये
वरतन कर्मऽ ह्यून ओसिय मन्द छान।। भ॰

स्यद्धन साधन हिन्दे माले

स्यद्धन साधन हिन्दे माले
वन्दय पादन कपालय हो।
यिनय च्याजे बऽह्रो फ्वलय
छिनय नाऽल्य पोशऽ मालय हो।।

यि वाऽञी छय भवाऽनी छय
यिवाऽनी रिऽच्य च्य वाऽञनी छय
नवाऽनी छय खाऽनी छय
ग्यवाऽनी कमि तालय हो।।

अभय चिय दय च्य भविनय जय
स्यठा छम प्रय यि साऽनी क्रय
च्येयय च्यथ ह्यथ बऽदह यन्दर्यय
दीपय कनि धूप जालय हो।।

. छुखय आनन्दगण थव कन
च्य अर्पन करऽ तन मन धन
ननंन पूर्ण छ्मन मोहन,
दिवन छुस बोज़ नालय हो।।
नमामे हम दितम साऽशम,
प्रेयम च्याजे हयमम प्यत यम।
च्य क्या गछी कम चल्यमय गम,
भ्रम हट्यम यखदम मलालय हो।।
लगय पाऽरी च्येय च्वपाऽरी
वुछन साऽरी म्य कर याऽरी
छय ज़ाऽरी कमि हालय हो।।
चिऽ बोज़ नादिय दितम दादिय,
म्य कर यादिय बनय शादिय
छलय पादिय म्य समाधिय
बन्यम स्यद्ध ही दयालय हो ।।
दिनुय दर्शन म्य मन निनुय
अनाथुनुय नोनुय स्योनुय
ख्योनुय च्योनुय प्रनुय रोनय
युनुय गछि सोन सालय हो ।।
यि सालय लय हा छम लालय
दि ड़ालय रठ हथ नालय
मलालय च्योन नसाऽ चालय
च्य भावय भरऽ ब प्यालय हो ।।
दया स्यन्द चिय च्यदा नन्द कन्द
निजानन्द न्यस्पन्द निर्द्वन्द
च सोन भोय बन्ध दर्द मन्द
गूव्यन्द च्य त्योय हवालय हो !!

. उोमकार आधार

उोमकार आधार आदि दीवय
आदि अन्त रस्ति आनन्दो हो ।।
च्यथ द्युत च्यथ कुय चेनुन चिय
च्यन मय च्यदा नन्दो हो
चर–चुम चरा चरो च्यान्य
चीर रट चरणार ब्यन्दो हो ।। उोम
केवल कोमल कृपालय
कष्ट हर कृष्णा नन्दो हो
काम क्रूध कपट कास कसर
कल करु कीश्वा नन्दो हो ।। उोम
दय दयालो दया कर
दर्शुन दित दीन बन्धो हो
द्रुन पादन हृन्द दोर ध्यानिय
दाता दया स्यन्धो हो ।। उोम
वन वन च्य वाओ वासुदीवय
व्यभव व्यशुदा नन्दो हो
वाह ब्यास मुख वीद व्यसताऽरिथ
वल्य वुल वुन्दऽ च्यय वन्दय हो ।। उोम
मन मोहन माधव मकुन्दय
मनि कियि मायि दुध मन्दय हो
मध सूधन म्योन मद मार
मन सान महा आनन्दो हो ।। उोम
पर ब्रह्य पादन च्य पार्य पाऽरी
प्राण वन्दय परमानन्दो हो
परमीश्वरो परि पूर्णो
पवित्र परमा नन्दो हो ।। उोम

न्यश क्रय चियये न्यश चलय
निज़ा नन्द न्यस्पन्दो हो
न्यराहार न्यर विकारय
निराधार न्यंद्वन्दो हो ।। ओम

जन्म २ जानकीनाथ जिगरो
जय जय जसुदा नन्दो हो
ज़लिर ज़ाल जगत जल म्वकलाव
जान ज़रुन न ज़न्म जन्दो हो ।। ओम

शुद्ध शान्त श्री श्याम श्रीदरो
शम दिम शान्ता नन्दो हो
शीतल शुभ दिम शर छुम यी
शक्ति शील छुस शरमन्दो हो ।। ओम

भख्ति भाव मन भरऽ बो भगबन
बोज़ यिय ब्रह्मा नन्दो हो
भावऽ च्याञि बानऽ यियि भरिथय
बन्द मुक्त रस्ति भायि बन्धो हो ।। ओम

रस रस रस लोग म्य रस च्यवान
रस पुर्ण रामा नन्दो हो
राक्षसन रावनस रथ ह्योतुथ
रघु नन्दन राम चन्दो हो ।। ओम

समता दिम सम सत् स्वरूपो
सत छम सत च्यत आनन्दो हो
सार स्वामी सम रस सुय च्याव
सरऽ क्वर सर्व आनन्दो हो ।। ओम

गलसुन गरूड़ासन गदा धार
गम्भीर गुकला नन्दो हो
गीत म्यवऽ च्याऽजी गूपालय
गूर्वधन गूव्यन्दो हो ।। ओमकार

नित्या नन्दस

नित्यानन्दस सतस त च्यतस
पान वन्दस तस्य पतऽ बऽ मतस ।।
स्वप्रकाशी ज़ानुन पानिय
दुय त्राविथ छुख शूभानिय
तूर्य दितस योर मतऽ ह्यतस ।।
मस दिथ बो करनस मसई
दूर क्वरनम दुई तऽ ह्यसी
मऽल थोवनम न द्वयतऽ बतस ।। पान
स्वधर्मस प्यठ गछि मरून
पर धर्म दूर गछि करुन
टाठि मत छिनतम अतस न गतस ।। पान
स्वर्धम गव केंह न करुन
स्वर्धम छु ज़िन्दय मरुन
स्वधर्मस मंज अभाव च्यतस ।। पान
स्वर्धम छु स्वप्रकाशिय
पर धर्म करुवुन छु नाशिय
टाठि थवतम पननिस सतस ।। पान
त्राव मनुक संकल्प दूरिय
मन अन्दरय सूहम स्वरिय
अद्वयतुक मस ह्यथ च्यतस ।। पान
गुऽणातीत छुख पनिने पानय
शिव रूपिय छुख मोचानय
यूग गन्यान प्यव हाऽरतस ।। पान
आदि दीवन दुद्यतनम म्य मुऽयी
मुय च्यथ बो क्वरनस लयी
दुई करनम माज़स त् रतस।। पान

मन बुद्धी हृन्द अभाविय
न्यर्मलस मंज़ छय नाविय
शुभि शिन्यहा तति खदमतस।। पान
गूय्यन्दो डोमय चि़ऽ स्वरतो
रिन्द पानय ज़िन्दय मरतो
दरत वुऽन्य अथ प्रकाश गतस।। पान

वनत वुञ क्याह

वनत वुऽन्य क्याह छुख वनान अथ
सथ म्य च्यानी यऽच छम ।।
नरऽकस ताञ म्यान छय खऽर
छुस न तथ लायखति बो
अद स्वर्गिऽच्य वनतऽ छा कथ ।। सथ॰
बन्द करिख स्वर्गस तऽ नरकस
म्योन बूज़िथ दारि बर
म्य वुछिथ क्यंकर चलिय पथ ।। सथ॰

आऽबन पनऽन्यन

आऽबन पनऽन्यन कुन वुछिथ वद गूय्यन्दो
ईकागर कर च्यथ बोज़ व्राव बा मद गूय्यन्दो ।।
अथ हाव कथ करने व्राव
बुद्ध करत बुद्ध गूय्यन्दो ।।
पानस न व्रेश यस आसि च्यन्य
चाव्या द्धुऽध गूय्यन्दो ।।
जि़त्येन्द्रये पुरषन धन्य
मन करु शोद्ध गूय्यन्दो ।।

प्राव नस न ताऽस्य तिमन हो
परमय पद गूव्यन्दो ।।
मनूरथ सोरुय च्योन
बनी स्यद्ध गूव्यन्दो ।।

पननुय सायि

पननुय सायि कर असि सदा जायि जायि
ह्यन आयि उल्ट ज़मान निशि रछ ।।
छय मिनथ थव असि दि मऽ अथि वुपरन
इथिनिय हन्दि एहसानऽ निशि रछ ।।
कालस कर्मस तऽ माया फन्दस
ही दया वान अज्ञान निशि रछ ।।
ज्ञान दिम पननुय दान दिम भक्ती
अनात्मा के ध्यान निशि रछ ।।
काम क्रूध लूभ मुह अहंकारय
गूव्यन्द अभिमान निशि रछ ।।

राम रस रोस

राम रस रोस नय केंह ति लये
त्याग वैराग यूग गन्यानय
राम रस रोस नय केंह तिलये।।
वरण आश्रम वुतम कुल खान दानिय
राम रस रोस नय केंहतिलये ..... ।।
सुऽन्य कुटम्ब परिवार सनतानय
राम रसऽ रोस नय केंह ति लये
धनऽ दौलत सम्पत माल खज़ानय
रामऽ रसऽ रूऽस नय केंह तिलये।।

जाऽगीर ज़िरात ज़मीन मकानय
रामऽ रसऽ.....
नौकर बाग हमाम तऽ ड़ालानय
राम रस .... ।।
प्रगं पलंग कुर्सी मेज़ ब्ययि सामानय
राम रस .... ।।
धूम धाम तुलुन दिज व्याख्यानय
राम रस .... ।।
पूज़ा पाठ कर्म धर्म ध्यानय
राम रस .... ।।
तर्पण तीर्थ ज़फ तफ संध्या श्रानय
राम रस .... ।।
वृथ श्राद हुम यज्ञ ज़ानय
राम रस .... ।।
धारना ध्यान समाध व्यथानय
राम रस .... ।।
गूव्यन्द सोरुय द्राव दिह अभिमनिय
राम रस रोस नय केंह ति लये।।

यस कांसि

यस कांसि हुन्द कीनय
तस दिल स्याह छु सीनय।।
काऽफिर सु बे दीनय
छुय लानती लईनय।।
गूव्यन्द साफ सीनय
थव मिसिलि आईनय।।
प्रुऽन ही खोत शीनय
तथ खुश रोबुल आल मीनय।।

ह्यक मते

ह्यकमते ईश्वर क्याह कोरून क्रजं
थजरस मंज़ बसिथ वाव हो।।
क्रंज़ करिथ तैय्यार करनि लोग संज़
अथ्य अन्दर पान चाव हो ।।
अपज़िस त पज़िसिय द्युतुख कंज़
सन्तव स्वरूय दय नाव हो
साऽरिसिय मंज आसिथ छुय नऽटंज़
गूल्यन्द न्यरलीफ द्राव हो ।।

चानि बापत

च्यानि बापत छुस वदान
प्राण छिम च्येय कुन दयो
दितऽ दर्शुन छुस वुछान।। प्र॰
कुल पऽतर म्योन पारिज़ात
छुख अनाथन हुन्द चिऽ नाथ
शक्ति पात म्य करू टिऽकान।। प्र॰
हे भगवन सोनिय बोज़
क्या दयायि प्यठ असि चिऽ रोज़
सोज़ सथ शब्दुक व्यमान।। प्र॰
म्यानि दातो वातऽ बोज़
हाय कम्यू सातऽ बोज़
वातऽ बोज़ बोलामकान।। प्र॰
सार शब्दुक रस म्य च्याव
पननि पानय मस म्य चाव
बस म्य च्याव थी छुसह मंगान।। प्र॰
वति वते वथ म्य हाव
युथ ब वनय त्युथ म्य हाव
क्युथ म्य हाव युथ सन्त वनान।। प्र॰

हऽरथिय हऽरथ म्य आव
हऽर–थय मंज़ तार नाव
वरज़–निस वावस पकान।। प्र॰

अथ लायख क्याह म्य क्वर
वति छुम क्याह ताम ठोर
म्वर मशुन मन प्राण सान।। प्र॰

सन्तव क्वर ती चि़ति कर
गूव्यन्द सूब्ह शाम स्वर
ड़र मऽ अर्पण कर च़ति पान।। प्र॰

सुय म्य टोठयोम

सुय म्य टोठयोम तमना द्रामो
राधा स्वामी राधा स्वामी।।

अस्ति भाते प्रेयि रूप सोरूय
धारनाये सन्तव धोरूय
व्यच़ोरुय सुय वनि आमो।। 1 राधा

शक्ति पात तम्य क्वरनम ओरय
पननुय अनग्रह म्य तोरय
ज़ोर ज़ोरय बोज़ सत नामो।। 2 राधा

ज़न्मन हिऽन्द दुःख तय दाऽद्यी
काऽस हय साऽरिय च़्य व्याऽधिय
आपदाये च़ऽजि तमामो।। 3 राधा

पार्य लगयो सन्तन तऽ साधन
कन म्य थव्याम सत क्यन नादन
सन्त पादन करऽ प्रणामो।। 4 राधा

खुल कर्य हय सऽरी तऽरी
तस वुछान छिय च़ोपऽरी
पार्य पऽरी लग तस शामो।। 5 राधा

लोल बुऽरहम पननुय पूरिय
ह्रदयिच गटऽ करहम दूरिय

नूर नूरिय छुय सत धामो।। 6 राधा
सन्तव सम्तायि अमृत च्यव,
हृदयस उद्धय ज्ञान रऽव गव
च्यव गूव्यन्द सुय सुब शामो।। 7 राधा

म्य दर्शुन द्युत

म्य दर्शुन द्युत परमीश्वरन
श्री सत्वरन लो त लो।।
परमऽ राज़ऽहंसन तल ह्युऽत परन
तथ्य छिय शरण लो तऽ लो
दिम दण्ड़वथिय प्यम ना परण।।
दिवता यम ऋृऽषि धन्य धन्य करन।
यस तिम वरन लो त लो
ज़नमन हिऽन्द पाप तिमन छि हरन।। श्री
हायि ज़ायि तिम नय ज़ाह छिनऽ मरन
भव सर तरन लो त लो
यमस ति गूव्यन्द तिम छिनऽ ड़रन।। श्री

सथ व्यचार फांसि

सथ व्यचार फांसि सीऽत्य मारान भ्रमऽ चूर
सूर गछ़ान ज्ञान नारं सीऽत्य वासनाये।।
कर क्या सत्वरऽ यावुन म्य सूर
केंह बन्यम न रूऽस च्यानि दयाये
केंह करुम न अथ मंज़ स्यठाह म्य फ्यूर।। सू
पज़र करितन पानस मडिलतन सूर
वृथ दर्य दर्य न्यथ ख्यतन ति लाये
प्वज़ वननुय मुर्खन निशि म्र वूर।। सू

श्वासन ज़ान थव वासन कर दूर
आसन दार तऽ या केंह न परवाये
मन मार कर व्यचार छुय स्यठाह यि क्रूर।। सू

आनन्द अमृत च्योमो म्य भर पूर
लगयो २ सत्वरऽ च्यानि कृपाये
हाऽसिल बन्योव अब्दी म्य सरूर।। सू

विषय मुछ वुछ मऽ आसन तेयय स्वर्ग हूर
स्यद्धिडि़ तऽ अछ़ऽ रछ़ऽ रोज़न त्येय दाये
बे परवाय बन दिह अध्यास लरि लूर।। सू

हम कुय हमतुल सू कुय वाय खूर
यम्य वाऽय तसिन्ज़ नाव आवलिन्य द्राये
सम्सार सागरस क्वर तमी अबूर।। सू

दुय च़ख हसद यिमय छि मनुष्यस कसूर
लागान छिस यिनऽ गछनिऽचि क्राये
प्राव सुऽख कर व्यचार यिये सबूर।। सू

दिह दृष्टी त्राव समदृष्ट बन च़ड़ित पूर
म्वकली ज़्यन मरनुक वुह्य वाये
मन पम्पोषस सत च़्यथ आनन्द बंबूर।। सू

मोकल्यव चुरासी लख चक्र च़्वल म्य ग्यूर
च़ख दुय त्राऽव सुय ब कसू नाद लाये
शख च़ल्य ज़ोन पनुन पान नूरूक नूर।। सू

छ़ारऽव क्याह न्यबर च़्यत लोल मस मधूर
दुयी त्राव तुल सुय छुय पर्द छ़ाये
वुछ़ख जायि २ सुय हाऽज़िर हजूर।। सू

आंवांग मनस अगूचर सु ज्ञान सदूर
दफ सुय बुय भर मऽ केंह वाये
प्वज़ वननुय अपज़्यारेन गछि कठूर।। सू

दिह अध्यास सिऽन्दि ख्वतऽ कांह नो मकूर
ज़ाल दिह अभिमान गूव्यन्द ज्ञान क्राये
च्येय मंज़ सोरूय गोमुत ज़हूर।। सू

यस निशि

यस निशि सु प्रकाश द्रावो न्वन
तस्य दीवस द्यू पानो वुऽन।।
प्रेयमऽ मस द्युतुनय पानय च्वोन
च्यथ चि़य गोखे दुई निशि भ्युऽन
सोरूय छुय सुय पानय न्वन।। तस्य
सऽरिसुय मंज़ छुय यारय न्वन
यारस दिलकुय ज़ारय वन
तारि च्य सुय तारयवुन।। तस्य
दिहि अभिमान किञ गोखो च़ रूऽन
दुय त्राव चि़य यारय सवरून
तमि सीऽत्य गलियो ज़्युऽन मरून।। तस्य
दिहि अभिमान निशि गछि़ हारुन
ह्रदयस गछि उोमुय दारुन
शिव शिव साऽरिसिय मंज़ करुन।। तस्य
सनि ख्वतऽ स्वन तय ननि खोत न्वन
तस्य जानानस द्यू चि़ऽ वुऽन
साऽरिसिय मंज़ छुय शुभयवुन।। तस्य
मोय खानय गछि मुऽयी च्योन
मुऽय च्यथ गछि़ तस सीऽत्य मेलुन
यारस तति गछि़ पानय पय ह्युऽन।।
लय गच्छ च तस्य सीऽत्य युस छुय कुन
लय गछि़थ तस्य मंज़ नेरख न न्वन
हम दम तस्य सीऽत्य गछि़ मेलुन।। तस्य

सोरुय सम्सार आऽनि तावुन
मारियिनऽ च्य मुह रावुन
त्रावुन संकल्पुक यावुन।। तस्य

आनन्द अमृत ह्योतथो च्युऽन
दिह अभिमानिय गछि हरुन
तस्य सीऽत्य गछि रात दोह भरून।। तस्य

बोज़ान छु पानय बोज़नावुन
अर्न्द्रय मो ह्योव च दजुन
तस्य जानानस गछि तेलुन।। तस्य

गूव्यन्द सुय यार छुय रम्बवुन
पन निस पानस द्यू च वुऽन
आनन्द मस ह्योतथो च्य च्युऽन।। तस्य

दित दर्शुन

दित दर्शुन म्य पननुय
वन्त च्य क्या कम गछी
करत दया ही म्य बे अन्त।।

या यितम मे निशि पानय
त्यलि ननि पानय च्य म्योन
नत पानस निशि म्य तोरय अनतऽ च्य।। अन्त

लोल कम या ज़्यादऽ छुम च्योन
करत वुऽन्य पननी दया
ओरय म्योन पूर प्रेयमी बनतऽ च्य।।

गूव्यन्दिय छुय च्योन दास
छुस विशवास च्योन परि पूर
मन्जूर करतन तऽ वरतन।। अन्त

वज़न मुर्ली

वज़न मुर्ली बीनिय मधुर
राधा स्वामी राधा स्वामी ।।
सतगुरु दयाल ज्ञान सदुर ।।
चन्द्रम शोलन बोलन हमसह
लोलन वलिमत्य कमसह कमसह
दम २ दमसह तोलन छुय दुर ।।
धन्य धन्य धन्य २ अस्तुथ सतगुरु
तन थ्यर मन थ्यर ह्थ गव थ्यर
प्रोवुम नूर च्वलुम ज़ोजूर ।। २०
म्यान्यन अऽछ्यन हिऽन्दे गाशे
च्याने आशे ही अवि नाशे
च्यथ आकाशे च्वलुम ओबुर ।।
सफेद सुऽन्दर रऽव गव रोशन
वुछिथ असुन छुन पम्पोशन
जोशन च्याऽञ वोलमुत छुय पूर ।।२०
संत अथ बस्तस मंज़ खेलन
संतिय संतन हन्दिस तेलन
असुन गेलुन छुय कमुर्न खुर ।।
सतुक ध्यान करिथ न्यथिय
आनन्द अमृत बरिथ च्यथिय
सथिय सथ बोज़ नाविय स्मर ।।
छांडिनि च्येय मारय मते
द्रायोस सुऽन्दर गाशि वते
खते कोडुम च्यतुक म्य घुर ।।
टोठयोवुय म्य सतगुरु दयाल
आमुत च्यपाऽरयी म्य सोंत काल
खालिय कांछा वोतुय उऽद्धुर ।।

गूव्यन्द :नुन हालिय वनि कस
रात्गुऽरविय म्य द्युतहम मस
व्यल वसवास करना शुखुर ।।

प्रथ सातय

प्रथ सातय थविज़ि ध्यान
बोलन छि प्राण सूहमसू ।।
सरऽ मन्ज़ चन्द्रम ज़ोतान
सत अृष गत छिस मारान
चन्द्रम सिऽन्दि खोत ताबान ।।
रऽव मन्ज़ द्राव सदा शिविय
रंबवुन रऽव उद्धय गव
रऽव सिन्दि ख्वतऽ छुय चम्कान । बों
बृहस्पत ह्यथ दिवता
उद्धय गयि जाबजा
त्रावन छु गाह क्याह अस्मान ।।
सन्तो गगनस द्राव वुफ
सन्तन हुन्द सीर थव गुप्त
वातान वाऽत्य लामकान ।। बों
उद्यूगस सीऽत्यी रोज़
गूव्यन्द उद्धऽ गीथिय बोज़
टोठ्योय च्यति श्री भगवान
बोलान छु प्राण सूहम सू।।

त्यलि गुरु

त्यलि दय दयाल टोठी
हर दम शरण शरण रोज़
यिना ग्वर दयाल रोशी
हर दम शरण शरण रोज़
सत शास्त्र पर्य पऽऱ्य
धारनायि ध्यान धर्य दऽरिय
कर्य कर्य ति ब्यज़ि पाऽठी ।।
बेकल संत छिनिबा
बे हूदह दम दिनिबा
यिनऽ बा च्य मनपोठिय ।।
सुख कुनि हयु न भयस
भयस मंज छु ज़यस
दयस तिमय छि टाऽठिय ।।
गूवयन्द यिन खसी मद
शरमन्द रूज़िथिय वद
बोऽद्ध युथुनऽ ज़ान्ह च्य ब्रेठी ।। हर

ही न्यर्मल

ही न्यर्मल न्यविकल्प निरा कार न्यविकार
ही अखन्ड सर्वकारऽ ओं कार ओंम हरे ।।
नाम रूप वर्ण गुव्र रूऽस व्वल कपार्य
दीश काल रूऽस निवास तिहुन्दुय चोपोर्य
च्यपार्य सुय पान कपार्य बऽलारय ।। ही
त्रिगुणातीत शिवऽ रूप ज़ानुन पानिय
सुय ध्याता सुय दिह सुय हो ध्यानिय
सोरुय सुय पानऽ क्या बऽ ध्यान धारय ।। ही

पान ज़ोन युथ म्य कुञि नो ब रुदुस
रिन्दऽ पान आऽसिथ जिन्दय ब मूदुस
चिय बुय ग्वल तय ब्ययि यि सम्सारय ।। ही

दम २ दमन सीऽत्य थव ज़ानिय
दम यत्य मेलि तति च्योनिय थानिय
वीद छिय ग्यवान ज़गथ आधारय ।। ही

पानय छु लागान पननिस बयानस
गिंन्दुना छु करान सुय पाञ पानस
पानय छु पानस करान सु ज़ार पारय ।। ही

परमआनन्द मस च्योवनस तम्य हा बोय
च्यवान च्यावान गज्य हा म्य दुयी
दुय गज्य तऽ चिय पान ही न्यविकारय।। ही

वहदथ खान च्यव माऽस्यफतुक मसिय
मस्तानऽ मस च्यथ गाऽमिऽत्य बे ह्यसिय
रस ल्वग म्यति तय वोञ कति ब प्रारय ।। ही

लोल सेतारस छि सूहमचि तारय
युस वायि सुय तरि यमि सम्सारय
दम दम वायन छि रिंद अमिचि तारय।। ही

गूव्यन्द छु वीदव ग्योवमुत पानय
वीद थकि मत्य छि तिहिन्द गीत म्यवानय
वीदन द्राखो मंदिथ च्यिय सारय ।। ही

शिवस व्यन केंहनसाऽ छुय

शिवस व्यन केंहनसाऽ छुय शिवस व्यन केंह नसाऽ छुय
शिविय ब्रह्मा शिविय कीश। शिविय छु शीश गणीश
शिविय शिव पान महीश। शिविय करान च्य उपदीश
शिवस ब्यन केंह नसाऽ छुय ।।

शिविय छुय ज़ल तऽ अग्न
शिविय पृथ्वी पवन गगन
शिवस सीऽत्य रोज़ मग्न,,,
शिविय निगुर्ण तय सगुण ।। शिवस
शिविय छुय आत्म दीव
शिविय छुय साऽरी ज़ीव
शिवस सीऽत्य करि कुस रीव
शिव सिऽन्दी पाद ह्ऽ सीव ।। शिवस
शिविय ज़ल शिविय थल –
शिविय च़ल शिव छु न्यर्मल
शिविय वुछमय म्य कीवल
शिविय सिऽन्ज़िय गयम कल ।। शिवस
शिवस मंज़ राग नऽय दीश
शिव सुन्द राग छु व्यशीश ।।
शिवस मन्ज़ काल न दीश
दुय व्राव छुय च्य नीश ।। शिवस
शिविय छुय दिनऽ वोलुय
शिविय छु ह्यनऽ वोलुय
शिविय शुर्य्य मोज मोलुय
शिविय सुन्द छुय म्य लोलुय शिवस
शिविय छु पान अन्दर
शिविय छु पान न्यबर
शिविय छुय शिव मन्दर
शिविय छुय शाम सोन्दर ।। शिवस
शिविय छु मुशक तय गुल
शिविय छु कुल त बुल्बुल
शिविय छारुन छयो सुल
शिविय स्वर च़ली भुल ।। शिवस

शिविय सदा छु निर्द्वन्द्व
शिविय पानय छु गूव्यन्द
शिवस ब्यन केंह म साऽ व्यन्द
शिवस जुव जान मन वन्द
शिवस ब्यन केंह नसाऽ छुय ।।

स्वर सान सर क्वर

स्वर सान सरऽ क्वर असि भवसर
पान प्रज़ऽनऽऽविथ छुख च़िऽ अमर।
सथ छय तम्य सिऽन्ज युस छुय सथ।
स्वप्रकाश रूप आसवुन छुय न्यथ
सथ च़्येय जोनुथ कुन ब्यशम्बर।। पान

नाम रूप पानो त्रोवुथ च़्य दूर
पथ रूदुख पानऽ नूरुक नूर
तथ्य सीऽत्य मीलिथ संसार तर ।। पान

द्युतथम प्याल च़्येय क्या गोय च़्य कम
भ्रमकुय दूर च़्यय कोरथम गम
सोरुय सम ज़ोन वुऽन्य हरी हर ।। पान

आदि दीव द्युतथम च़्य आदि–कार
दयायि च़्याऽनि क्वर म्य साक्षातकार
च़्यत गण बननुक द्युतथम वर ।। पान

सारिकुय सार वुछमख म्य च़िय
धारनाये ध्यान दाऽरिथिय
ओमकार नाथ होवथम च़्य बजर ।। पान

मन कुय पोहल तय लूभकुय ख्योल
सतगुरु सूह वुछिथ दूरिय च़्वल
दोपथम मन मार लूभ–सिय फर ।। पान

वोनथ़म सह छुख दूर मो च़ल
सथ शास्त्र रूप होवथम जल
ख्योमो पोहोल त ख्योल छुस ब शेरिनर ।। पान

सोरुय छु आसबुन आनन्द कन्द
तथ्य मज़ मर चिय जुव जान वन्द
बुऽय गाल कुन रोज़ि सुय आश्च़र ।। पान

आकाश ह्युव छुख पूर्ण चिय
सोरुय सत् च्यत् आनन्द छुय
तथ्य मज़ शम तय रोज़ अज़र ।। पान

गूव्यन्द छु आसवुन गुणा तीत
तम्य ग्योव पानय पन–नुय गीत
दिहि अभिमानिऽच च़ज थर थर ।। पान

पान कोर सर

पान क्वर सरऽ मंज भव सरय
हर २ मुख वुछ मख म्य हरय ।।
रछि वुन लछि नोव चिय गनीश
अऽड़्य च़्यय वनान शीश महीश
भ्रम मिटोक्थम शंकरय ।। हर हर

बन्दर शीरिथ अछ़ अन्दर
नाभिथानस प्यठ लम्बूदर
शरण ब आसय बाल च़न्द्रय ।। हर हर

होश सान तति नेर ओमुय स्वर
ह्रदयस मंज वुछ श्याम स्ऽन्दर
मोतवाल क्वरथस मनो हरय ।। हर हर

प्रणव सोरिथ ह्योर २ खस
गगन मन्ड़लस मंज़ चिय बस
ओम ओम तति वज़ान आश्चरय ।। हर हर

. भ्रम किञ स्यद्ध नतऽ बाल खेल
पूर्णस मंज़ कति पाऽदऽ गव मेल
भ्रम ग्वल तऽ ज़र ब्वल अज़रय ।। हर हर

दुई दूर गयि यस हो मनि
हनि हनि तस यी यार वनि
ज़्योन मरुन भ्रमिय अमरय ।। हर हर

रिंन्दो मो माज़ माज़सिय
पान ज़ान पूर्ण दूर करु दुय
चिय वाचि वाचक क्या ब परय ।। हर हर

गूव्यन्द पर त पान कुनुय व्यन्द
त्राऽविथ रिंद चिय द्वन्द्वाद्वन्द।
गम म्य कोसथम दिगम्बरय ।। हर हर

नित्य मुक्त

1. नित्य मुक्त सच्चिदानन्द आत्मा मेरा स्वरूप।।
2. ज़ीव ईश्वर मन बुद्धि दिहादिक हम नहीं।
पञ्चभूतक मायाकारी तमो रज भी हम नहीं।।
3. आना जाना है नहीं मुझ में न आनन्द व बन्द।
मन वगैराह का हूँ साक्षी और हूँ आज़ादी कन्द।।
4. निर्गुणा निर्मल निरञ्जन और हूँ मैं निष्क्रये।
मखज़ने आनन्द लामहदूद सिफ्तों से परे।।
5. सारे धर्मों कर्म से है ज़ात मेरी मा सिवा।
मिसले आकाश हर जगह पूर्ण हूँ बे चूँ व चराग।।
6. वाणी मन से हूँ परे मैं और स्वयं प्रकाश हूँ।।
आदि आखिर से मुब्बरा दाईमे अविनाश हूँ।।
7. एक रस चेतन ब्रह्म हूँ दूसरा है ही नहीं।
पर हैं जलते इन्द्रियों के पास आ सकती नहीं।।

8. ला मकानों बे निशान्रों ईनो आँ से हूँ जुदा।
ला शरीको सर्व व्यापक गम नहीं मुझ में ज़रा।।
9. निर्विकारो निर्विकल्पो अद्वयत हूँ निर्द्वन्द।
वेद गाते थक गए हैं गीत तेरे ऐ गोव्यन्द।।

युस छुय हनि हनि

युस छुय हनि हनि सुय छुय मंज़ मनि
क्याह अनि ब्रोंठ कनि वनि अंन तन ।।
सथ व्यचारऽ नार ज़ाल दिह अध्यास घासऽ
सू हम सू स्वर मंज श्वास उश्वास
कुनिरुक सूर मलतो ह्यरि ब्वनऽ तनि ।।
आप ही दाता भिक्षक जोगी भोगी
पानय वैद्य औषध तय रोगी
युस करि पान सरऽ तस थि पानय ननि ।।
पानय गुरु मन्त्र तय सीवक
पानय पूज्य पूजा तय पूज़क
सुय भवसर तरि यस हो यी ननि ।।
पानय सु बाग भागवान तसुन्दुय म्य लोल
पानय गुल मुशिक तय मुशिक ह्यन वोल
सुय ज़ानि यस हो तसुन्दुय लोल गनि ।।
आगरऽ निशि सागर तऽ सागर कुनुय द्राव
ज्योयन मंज हो गयस ब्योन–२ नाव
ज़ल वुछ कुनुय सागर कुसू वनि ।।
कतरस मंज सागर त सागर निशि कतरऽ द्राव
कतरस मंज़ सागर वुछ किथ पाऽत्य चाव
म्युल गव दुऽशविऽन्य कतर कुसु अथ वनि ।।
स्थूल सूक्ष्म कारज़ कारण
पानय दिह दाता ध्यान धारन
पानय बोज़न वनन वुऽन्य क्याह वनि ।।

पानय विष्णु महेश तय ब्रह्मा
दुय त्राऽव्य सुय जुवऽ रुद नों तम्माह
क्याह वनि गूव्यन्द यस पानस बनि
क्याह अनि ब्रोंठ कनि वनि अन तन ।।

त्रिगुणा तीत

त्रिगुणातीत च्योन घरऽ तऽ लोलो
सूद सूहम छु सू स्वर तऽ लोलो ।।
बच्चपन से था मुझे उसका शोक
खुद वह आशक इशको माशोक
तस रूऽस अख ज़र न ज़रऽ लोलो।।
देखता हूं जिधर उधर वह रूबरो
लोल नारन ज़ाल्य रूदय नऽ आरिजू
ज़ाऽल्यनम कर्म खुर्य तस्य तऽ लोलो ।।
खुदी छोड़ कर पीछे जो रहा
हैरत में उसने मुझ को ड़ाला
रिन्दऽ पानऽ ज़िन्दय मरत लोलो ।
क्याह देखता हूं खुदी छोड़ कर
भीतर बाहर है पूर्ण हर
यि वुछुमो म्य आश्चर तऽ लोलो ।।
ज़ाग्रत स्वप्न सुशप्ती को
प्रकाश करने वाला है जो
स्वप्रकाश तू है अज़र लोलो ।।
दृष्य दर्शुन दृष्टा वह आप
आप ही पुत्र माता बाप
पूर्ण वह चराचर तऽ लोलो ।।

हम को छोड़ा सू में शम
जीना मरना यह संसार भ्रम
कौन मरे तू है अमर तऽ लोलो ।। सूद

व्यवहार कामि अभिमान रूऽस च़ऽ कर
जानो सब कुछ है हरी हर
परद्यन हिऽन्ज़ ज़न छि करत लोलो ।। सूद

खुद को देखा छोड़ कर दुई
हर मुख से हर जलव घर ही
भ्रम च्वल च़ल्य अर सर त लोलो ।। सूद

क्या काबा काशी में ही है वह
और जगह नही है यह क्या कहते हो
यह जहालत सरा सर तऽ लोलो ।। सूद

जिसने जाना है अपना आप
उस के छूटे हैं तीनों ताप
तगियय सर करत तरत लोलों।। सूद

ओम कार माव्राई करतो संज़
सारेय यात्रायि छय अथ्य मंज़
प्रणवुक स्वरूप स्वरत लोलो ।। सूद

न रहा यह जगत ना हम तुम
केवल अद्वयत गोव्यन्द हम
भ्रम मिटा मै दिगम्बर तऽ लोलो ।। सूद

ईकागर चित कर देख गूव्यन्द
गुणातीत अनूप तू है अखन्ड़ ।। सूदश

अवांग मनस अगूच़रत लोलो
सूद सूहम छु सू स्वरत लोलो ।।

क्याह कर्यस

क्याह कर्यस रिऽच़ ज़ंग क्याह कर्यस साथ
सत गुरु यस तारि तसिन्ज़िय छि बाथ ।।
नय तति सिरिये नय च़न्द्रम
नय तति राहत नय तति गम
नय तति दोह तय नय तति राथ ।। सत
नय तति श्रान तय नय संध्या
नय तति धारणा नय पूज़ा
नय अहिंसा तति नय ज़ीव गाथ ।। सत
नय तति नेम तय नय आच़ार
नय तति ज़ल तय नय तति नार
नय तति शीला नय तति धात ।। सत
नय तति गन्यान नय अगिन्यान
नय तति धरती नय आसमान
नय तति न्यूच़ तय नय बड़ ज़ात ।। सत
नय तति ज़्युऽन तय नय मरून
नय तति ज़ तय नय तति कुन
सुय ज़ानि युस बनि पान साक्षात ।। सत
नय तति ज़ीव तय नय ईश्वर
रिंदो वुछुतो यि छु आश्च़र
रिंदय छि पाकवान अद्वयत भात।। सत
नय तति दीश तय नय तति काल
नय तति नाव तय नय खत खाल
द्युत नय प्यालऽ च्युऽन सुय ओस साथ ।। सत
नय तति दृष्य तय नय दृष्टा
नय तति शाह तय नय गदा
रिंदव छु च्योमुत आबे हयात ।। सत

नय तति शिव ताय नय शेतान
नय तति मन तय नय तति प्राण
मस्तान वाऽत्य तय चिति त्वत वात ।। सत
नय तति सुब्ह तय नय तति शाम
नय तति छुऽपऽ तय नय कलाम
नय तति मंद्युन नय प्रभात ।। सत
गूव्यन्द आनन्दस मंज़ फ्वट
दुई हुन्द जाम तम्य पानय च़्वट
तथ्य मंज़ मूद तय रुद कुन्य ज़ाथ ।। सत

कुन्यर ह्युवुय छु

कुन्यर ह्युवुय छु भ्यन्यर नऽ यते
सूय हो मते छु च्योनुय पान ।।
कारण ईरन दीव अथ वते
हाऽरतस प्योमुत यूग गिन्यान
केंह रिंद ज़िन्द मूक्ष्य फोरन न तते ।। सू
सुय बुय प्वज़ वनुन हावुऽ हते
यस तुऽह्य वनान छिव भगवान
मुर्ख मा मारन दति दते ।। सू
व्यग़ार तोन्दरय यस हो तते
सूहम च्वचि त्रफती इवान
पाक अन लोल नार वार स्वति स्वते ।।
न्यबरय अथि यियि नुऽकुनि त्येय च्यते
पान सर करतो पान नाराण
न्यबर मो छान्ड लभहन कते ।। सू
ज़्यन मरुनुक बोर तस हो त्यते
यम्य कऽर पनने पानिऽच ज़ान
मनुष्य दिह प्राऽविथ गव नो ख्वते ।। सू

व्यषय त्राव बा मथिथिय लते
त्रशना ममता करान छि हान
वास नायि सान गाल हबा गते ।। सू

आम खास वननय डुल्य मुत चिऽ वते
यस बनि गूव्यन्द तस ननान
कीऽत्य ह्यथ शर गयि हा जुवुड अते
सुय हो मते च्योनुय पान ।

भव सर तारि

भव सर तारि स्यज़र पज़र
लोल सान सूहम सू चिऽ स्वर ।।

च्यथ नयूव तम्य स्वप्रकाशन
मन बुऽद्ध नो तोर वातन
यंदर्यययन दज़न वती छि पर ।। लोल

दीश त काल रूऽस युस छुयो
दुय त्राव प्रज़नाव सुय चियो
न्यर्द्वन्द व्यगिन्यान भास्कर ।। लोल

न्येसत्रय गुणी शिव पानिय
पननुय ज़ान कास हानिय
साक्षी अद्वयत दिगम्बर ।। लोल

न्यरविकार केवल्य अटल
न्यर द्वन्द्व न्यरभय न्यर्मल
न्यर विकल्प चैयतन्य मात्र ।। लोल

नाव रूप कुय सु आधारय
अखन्ड़ अनूप अपारय
सथच्तिानन्द अज़र अमर।। लोल

अस्ति भाति प्रेय रूप सोरुय
दय ज़ोन यिमव पान तोरूय
शिविय अन्दर शिविय न्यबर ।। लोल

ईकागर करिथ च्यथ
गुणा तीत अखन्ड़ चि़ऽ पथ
पान अवांगऽ मनसऽ अगोचर ।। लोल

दयस व्यन केंह मो ज़ान
अथ्य नाव भक्ति भाव यूग गन्यान
पान सान हर ज़ान ज़रऽ ज़र ।। लोल

सञ्य वुगञ वञ दित्य यस हतो
छाऽरिथ सुय चि़य द्राख पतो
मुकल्योय चुरासी लाख चक्कर ।। लोल

कल प्यत ज़ान छय बन्द मुख्य
चि़य असंग सदा अपरुक्ष
न्यति मुक्त बन्द मुक्ती पर ।। लोल

मन प्राण रठ ईक वटय
दिज़्यख न कुन कड़नय वुटय
कर अभ्यास गछ़ी ईकागर ।। लोल

ह्यथ गयि अति कयीत अरमान
कांछा स्वरि पन–नुय पान
यम्य स्वर तस द्रावोयिशर ।। लोल

काम क्रूध लूभ मूह मदिय
यिमशथिर छिय रैयठाह बदिय
रदिय करूख ती गछ़ी ज़बर ।। लोल

सुय चि़य चि़य सुय त्राव खुदी
अमि खुदी बद्दीं कांह नो रदी
शुऽद्धी बनी कर मन थ्यर ।। लोल

प्रणव स्वरानय व़िय खस
प्राऽरिज़ि मंज़ गुऽफायि तस
पूज़ कर तति शिव शंकर ।। लोल
गछ शरण प्य परण सत गुऽरन
शिनि छटि मंज़ बडिड वीर यिरन
गुफि नीरिथ अड़्यन च़ज थर ।। लोल
वीद गीत ग्यवान गाऽमित्य कली
गूव्यन्द च्याऽ्य च्य सम्शय चली
ज़िन्द मर सहज़ क्रय च़ कर ।। लोल

च्यदानन्द

च्यदानन्द च्यदाकाश
स्वप्रकाश नमस्कार ।।
सत च्यत आनन्द कन्द अविनाश
केवल्य अच़ल चि़ न्यर व्यकार
म्यानि टाठि साऽरिनिय हिऽन्दि गाश ।।
परम ब्रह्मऽ च्याऽनी आश
बुऽज़ साक्षी च आत्मा सार
स्मरण च्यानि पापन नाश ।। स्व
रिंद माज़न छिय नऽ यथ लाश
नाव रुप कुय चि़ऽ आधार
सुय चिय छुख दुय कर त्राश ।। स्व
वीद सन्तन हुन्द बोल भाषऽ
बोज़ निय छु वार कर व्यच़ार
सुय चिय सीर क्वरूख फाश ।। स्व
दय ज़ान गयि छ्यनि आश पाश
सम रस च्यव च़्वल आज़ार
मन्नि मंज़ यी ओसुय खाश ।। स्व

बन्द आऽस्य मंज मुह वाल वाश
छजि भ्रम च्वल ज़गि ल्वग तार
सूहम हमसू द्राव वाशऽ ।। स्व
गूव्यन्द सोरय तमाशऽ
च्योनुय चि पूर्ण अपार
परम सुऽख प्रोव गव न हाश ।। स्व

जुव सोन शिव

जुव सोन शिव वीदुक भजन यिडुमडुम
रूम रूमय परान ओंम ओंमत लोलो।।
दम दम दम ह्यथ दोहय स्वरूम
सूहम मनि गम कोसुम त लोलो
शिविय पान सान च्वपाऽस्य भोसुम ।।
अमि लोल नार सीऽत्य सीन म्य दोदुम
सीनस सूर गोम वोदुम त लोलो
पोंपिर पान तथ जयोति मंज़ हुमुम ।।
दय सुन्दुय लोल दोहय ओसुम
वन हा हाल वुऽन्य ब मोसुम लोलो
प्रथ क्षण दयसिय सीऽत्य मन लोगुम ।।
बालि होशस प्यथ तोति म्य प्वशुम
बल–वान काम क्रधू ठोसुम त लोलो
क्या कर केंह कर कोरुम मऽ जुम जुम ।।
सहज़ भाव प्रोवुममरि क्याह गम छुम
छाऽन्ड़िथ दय घरि ल्वभुम त लोलो
अन्दिर जोश आम न्यबरि छोकुम ।।
पननि जुव मन रदुन गंज़राव म हम तुम
चलाव मनस प्यठ हुकूमत लोलो
गूव्यन्द च्वपाऽस्य वुऽन्य म्य ज़ोनुम ।।

बोलन बीनय

बोलन बीनय सथ २ सुऽन्दर
राधा स्वामी राधा स्वामी
बुज़िथ सुरत सपद्योव मन थ्यर ।।
व्यगज्ञान सागर ज्ञज्ञान भास्कर
सत् च्यत् आनन्द अज़र अमर
आश्च़र अवांग मनस गूचर ।।
सथ पोरशन हुन्द कोर दशुीनिय
सुय दशुर्न अमृत वर्षुनिय
ह्युऽत हर्षुनिय सुय च्य अन्दर ।।
सूरत खसिथ गव आकाऽशिय
वति २ आयस कीऽत्य तमाशिय
गाशी गाशी गाशी आश्च़र ।।
दुःखुक तोर नय छुय निशानय
सुऽखिय सोख बोज़ रोज़ सुऽखसानिय
द्राम अरमानिय सूरूम चक्कर ।
ज्यूती च़टिथ वुछ व्यभूती
ज्यूती म्युल गव ज्यूती सीऽत्यी
ज्यूती अन्दर सुऽन्दर सतगुरु ।।
यूत २ सूरथ खोत ह्युऽर ह्युरिय
त्यूत त्यूत उपद्योव लोल च्वर च्वरिय ।।
क्वरूय तीज़न ज़ोर च्वल गचर ।।
सु कुस त बु कुस यी व्यचोरूम
नकश त्राऽविथ नकाश छोरुम
योरुम दयन द्राविय म्य शर ।।
वन कस दयन ओरय योरुम
तम्य बऽ गोरुस म्य सु गोरुम
छोरुम घरे ओसुम दिलबर ।।

ज़रस बनिथ गव भास्करिय .
कतरस बनिथ समन्दरिय
करुणा करिय टोठयोम ईश्वर ।।
रत छ्यपि गूव्यन्द च्यानिस नावस
तस व्यन केंहनय ब्ययि बऽ हावस
लोल लल–नावस ही करुणा कर ।।

तस कुस मरि

तस कुस मरि सु कस मरि लोलो
सहज़ भाविय प्रावि युस मरि लोलो।।
मुहनी न्यंदरे गव युस हुशियार
पानसिय निशि तम्य वुछ पननुय यार
समरस च्यथ तस नो रुद आज़ार
न्यर द्वन्द न्यर भय न्यष्क्रय अपार
पान ज़ोन पनुन तस कुस खरि लोलों ।। सू
प्रथ जायि हाऽज़िर छुय च्योनुय यार
बे सूद छांडुन गछ़ मो गिरिफ्तार
सुय च़िय तय वुछ वारऽ कर व्यचार
वीद सन्त छिय वनान यी बारम्बार
तस च़्वल गम युस अथ प्यठ दरि लोलो।।
परमात्मा शिव शंकरऽ शम्बू
जुव पननुय ज़ानुन सुय प्रभु
काबऽ काऽशी छुय सुय स्वयंभू
लोल सान न्यथ स्वर सूहम हमसू
च्योन प्रेयम कासि यम थर लोलो। स
सत च्यत आनन्द अखन्ड़ अपार
साक्षी चीतन शुऽद्ध न्यर विकार
स्वयम प्रकाश नाव रूप कुय आधार

पूर्ण सुय बिय छुस तस ल्वग तार
यस दृड़ निश्चय यि गरि गरि लोलो।।
सोशफती मज़ बन्यस ज़ाग्रथ
ज़ाग्रतस मज़ बन्यस सुष्फती
हर सात तस ब्रह्म आकार ब्रथ
अभुक्ता छुय सुय न्यथ ख्यथ च्यथ
ज़ीवन मुक्त सु भव सर तरि लोलो।।
अज्ञानुक च़ल्ययो तस त्यंबर
उद्धय गव यस ज्ञान भास्कर
भीतर बाह्यर ज़ोन तम्य ज़र ज़र हर
परम आनन्द प्रोवुन च़जिस यम थर
दय लुऽभनय पनने घरि लोलो।।
दिह आसिथ दिह तस यिवन न वनि
पान सानिय शिव ज़ोन तम्य हनि हनि
सम्तायि अमृत च्यथ दुयी न तस मनि
ननि तस वनि क्याह यस पानस बनि
अभिमान रूऽस व्यवहार करि लोलो।।
तस त पानस फरर्व नो ज़ानि हवाव
भवसर सरऽ मंज़ तरि तिन्हज़िय नाव
पान पूर्ण ज़ोनुख भ्रम आव जाव
अपज़िस प्यठ भ्वर नो तिमव चिकऽचाव
कल्पांत लरि फेरन लरि लोलो।।
न्यरविकार सच्चदानन्द स्वभाव
च्योनुय छुय चि़य पानिय प्रज़नाव
पान् मशराव दिह अध्यासिय व्राव
अथ्य नाव यूग गन्यान छुय भक्ति भाव
पान सान हर ज़ान ज़रऽ ज़रऽ लोलो।।
अत्यंत अभाव करि दृष्यसिय
नय ज़गत नय रोज़ि बिय तय चि़य

नय हऽरथ नय ऱोज़ि कुन तय जिय
पान अवाचि पद ज़ानुन सुय चिय
फना मंज़ऽ गव बका वरि लोलो।।
क्रेछ्र्य चन्द्रायन दर्य दर्य वृथ
पंच्य अगन्य सोंप्य ताऽप्य ताऽप्यी न्यथ
सूर मल्यतन पानस ति वाल्य तन रथ
आत्म ज्ञान रुऽस मिटन नय अतगथ
तोति न तरि पानस करि फरि लोलो।
सर्व आत्म भाव प्राव प्रज़नाव पान
गूव्यन्द ज़िन्दऽ गयी दयि सिंऽज़ ज़ान
पूज़ायि लाऽगिथ शिवस मन त प्राण
रिंदय च्य ज़िन्दय द्रावुय अरमान
प्वज़ वनऽनुय मुखर्न च्रि लोलो ।।

साऽरी डीठिम

साऽरी डीठिम गरज़ मन्दिय
दर्द मन्दिय असल न कांह
म्यथर शशी भाऽय तय बन्धिय ।। दर्द
शहरन त गामन ह्युऽतुम अन्दिय
छुय अन्द वन्दिय असल न कांह
तिहिन्दी संगनिय तुज दुर्गन्धिय ।। दर्द
यिम छिय ब्यनि भाऽय तय बन्धिय
करविऽन्य फन्दिय असल न कांह
आशा त्राऽविथ कर आनन्दिय ।। दर्द
फन्दिय सम्सार करवुञ फन्दिय
हावुन दुनिया यि असल न कांह
अपोर व्राये तारिऽच स्यंधिय ।।

जठ पठ चठ साऽरिकुय सम्बन्धिय
ह्यसऽ यि गूव्यन्दो असल न कांह
दयस सीऽत्यन कर पयवन्दिय ।। दर्द

पर खिथ वनान छुय गूव्यन्दिय
वुछुम बन्धिय असल न कांह
दयस रूऽय कांह पनुन म व्यन्दिय।। दर्द

कृष्ण रुदा

कृष्ण रुदा राम रुदा
रोज़ि दयि सुन्द नाव
ज़ाल रुसतुम साम रुदा ।।

भीम अर्जुन भीष्म कर्ण
द्रोना दर्योधन
प्रेद्यमन बलराम रुदा ।।
काह शथ पोर स्वनऽ लंका
म्यचि सीऽत्य मीजना
द्वारिका बृज गाम रूदा।
शंकर ह्युव ब्यास काऽलीदास
सन्त तुलसीदास
खास रूदा आम रुदा ।। रो
कुस रुद कुस रोज़ि छुम म्य दिलस होल
रोज़्या वोऊ गूव्यन्द कोल
मोल रुदा माम रुदा ।। रो

पान प्रज़नाव

पान प्रज़नाव दय पननि घरे
गरि गरे सू हम सू स्वर ।।
दुय त्राऽविथ पानय सुये
लछ् नोवुय कुनुय छुये,
मुर्खन म्वकुर म्वरकति खरे।।
हम त्राविथ पथ कुन रुद सू,
सू हमस मंज़ छुय हम सूद,
आदि दीव च्येय ओरय वरे ।।
नऽ छु तिर्थ नऽ छु मेलय
नय छु म्वर तय न छु चेहलय,
रवेलि तसिन्ज़ि सोरुये हरे ।।
पान क्वर सरऽ यऽम्य भवसरय
कालिन च़ऽज्य तस थर, थरय ,
दुय पानस निशि कति सु ज़रे ।।
दयस पानस युस न ज़ानि भ्युऽनुय
पान तस रिन्दस छुय वोनुय,
नत मुर्खन च्यानी च़रे।।
अङ्चन तोरय यिवन नादस,
ज़्यादऽ कोरहय च्याऽिनिस वादस
यी च़्य कोरूथ ती गुय वरे।।
शाहन ज़ान थव आसन दारिय
ॐ स्वरतो मन पनुन मारिय
स्वरियुस सुय भवसरऽ तरे।।
स्वरून केंह नय वुछुन तऽबोजुन
सोरुय पानस मंज़ ज़ानुन,
रिन्दऽ गूव्यन्दऽ ज़िन्दय मरे।।

निशि छुय

निशि छुय वुछ ह्य पानस बुयी
मंज अख मुई च्य तऽस न भीद।।
न्यति शुद्ध न्यविकल्प न्यर्विकार
सारि कुय चिये छुख आधार
सत चित् आनन्द च्योनुय ख्वयी।।
सर्व आत्म न्यश्चयी छु पूर
त्र्यशवय ताफिय साऽपिऽन दूर
हाऽज़िर हज़ूर सदादयी ।। मज
असंग अचल अमर अज़र
साक्षी चीतन दिगम्बर
न्यर द्वन्द अद्वयत निर्भयी।। मज
सम्सार च्य मज चिऽ तथ मंज़िय
आदि अन्त न च्यय मंज़िय
पानिय च्योनुय हर शययी।। मज
दृष्य कुय च्य मंज अत्यन्त अभाव
प्रोवुथ जुव सहज़ भाव
न्यति मुक्त पूर्ण तू ही है यी ।। मज
कारण धारन ध्यान छियी
यसुन्दुय तसुन्दिय च पानिय
नमस्कार च्य भविनय जयी ।। मज
शरमन्द ग्यवान पुऽराण वीद
यस तस पानस ज़ोनुख नऽभीद
शीश नाग मऽज्य दीवी छयी ।। मज
गगनस व्यश युथ नीजर
त्युथ ब्रह्मस मंज़ यि भवसर
कलप्यत भासन असली नयी ।। मज

क्या करि न्यशच्य बुऽद्ध बुऽज़ सु·पर
पान च्योन आंवांग मनस अगूचर
ओगनिस त दोगनिस तती क्ष्ययी ।। मज

वन क्युथ म्योन स्वरूप आश्चर
अस्ति भाति प्रयि रूपिय ज़र ज़र
साऽरिसिय सानि सीऽत्यी ज़यी ।। मज

गाल दिहि अभिमान छय बड़ वुपाध
अक्रय अखन्ड़ आत्मा अगाध
स्वयं प्रकाश विज्ञान मयी ।। मज

अविदितो ज़गथ उोमस
ज़ोन यम्य पान सुय छु हमस
ज्ञानऽ पानि मनि छज्य तम्य खयी ।। मज

कर दम दम सू हम सू हम
च़मि तस वनि यिये यस न च़म
ह्रदयस करि उोमय लयी ।। मज

क्या प्रोव क्याह व्रोव यी अऽऽस्य
भ्रम ओस ज़्योन मरुन यम फांऽस्य
शमिथ क्वर क्याह असि तययी ।। मज

पान सान सोरुय यि नाराण
यि वार ज़ानुन गव गिन्यान
ज़ान तऽ जुवऽ थज़ पज़ कथ छयी ।। मज

विज्ञान सिर्ये गव उद्धय
न्यर्मल बुद्ध गयि शुऽद्ध ह्रदय
गूव्यन्द सोरूय ह्यथ पयी ।। मज

होशस प्योस

होशस प्योस यि ज़रऽ ज़रा
छरा हरी हरा सोर ।।
ज़ोन सोन जुव शिव ह्यथ गव मन
विज्ञान सुऽदुर परि पूर्ण
शुद्ध आत्मा च्यन मात्रा ।। छरा
दीश २ युस असि छांज्याव
छाऽरिथ पानसिय निशि द्राव
सम भाव प्रोव मन गव थ्यरा ।। छरा
सत च्यथ आनन्द अनूप
ब्रह्माहस प्यठ रेयि ताज स्वरूप
सारिनिय हुन्द अज़र अमरा ।। छरा
सोरिय सू पनुन पानिय
ज़ोंन रिंदव च़जिख हानिय
निभर्य पद प्रोव च्वल ज़रा ।। छरा
अस्ति भांति प्रिय रूप ज़रऽ ज़रय
च्योनुय पान छु सरंऽ करय
ज़गि मंज चि मज भवसरा ।। छरा
गगनिऽचं नीलम्बता युथ
ब्रह्माहस मंज ज़गथ त्युथ
कलप्यत मनू मात्रा ।। छरा
तस मंज नो छुय दीश काल
काल सुन्द काल सु अकाल
तिहिन्दे प्रेयमय गज्य यम थरा ।। छरा
भ्रमय वनुन वुज स्वकल्योस
नतऽ कर पानिय बन्दिय ओस
न्यति मुक्त साक्षी दिगम्बरा ।। छरा

सारि कुय अधिष्ठान सोन पान
यम्य ज़ोन तस द्राव अरमान
स्वरूप म्योन आश्चरा ।। छरा

मौज वथ ज़ोन सोर सम्सार
ब्रह्मस मंज तस ल्वग तार
हुबाब म्यूल ओस ज़ल न्यरा ।। छरा

कुस मुकल्यव कुस बन्दिय
अन्द वन्द छुय गूल्यन्दिय
सहज़ भाव प्रोव द्राव शराह ।। छरा

जय अनन्त

जय अनन्त अपार अखण्ड़ आधारऽ
न्यर्विकार न्यर्विकल्प निर्द्वन्द्वो।।
न्यरमल कीवल अचल सारिकुय सार
सत च़्यत आनन्द कन्द न्यस्पन्दो
च्यदा काश स्वप्रकाश अविनाश सानियारऽ ।।
कालिऽकि कालऽ दीश कालऽ रस्ति बो प्रारऽ
यमऽ ज़ालऽ गालऽविऽनि ज्ञान स्यन्धो
जय जयकार आस्यनय बारम्बारऽ ।।
अगोच़र अमर अज़र ध्यान दारऽ
च्योनुय च़्यदानन्दऽ निजानन्दो
शुद्ध च़ीतन च्यानि अऽस्य द्द्य लोल नारऽ ।।
लोल च्यानि जिगरस गोमो पारऽ पारऽ
सतगुर श्री विशुद्धा नन्दो
सत्य्यच़ारऽ नावि क्यथ तरऽ भवसर तारऽ ।।
च्यानि लोल चख हख आमयी बुक़ बार
म्यकलऽ यमि ज़गताय दीन बन्धो
च्यानि ख़ातर प्रेयमऽ अशिस लजिमधारऽ ।।

छिय अनज़ान किथ माऽठ्य वाति ज़ार पारऽ
तिथ करहा च्योन च़्यय जुव वन्दो
च्यान्यन ज्ञान च़रणन हुन्द ध्यान धारऽ ।।
परम गथ प्राव व्रथ थाव ब्रह्म आकार
न्यथचि़य न्यरलीफ परमानन्दो
दिथ ह्यथ करिथ ख्यथ च्यथ निराहारऽ ।।
साक्षी दृष्टा न्यरगुण न्याराकार
अस्ति भाति प्रयि रूप अन्द वन्दो
च बो बो चि़ वीदिच्य यी पारऽ पारऽ ।।
दय ज़ान सोरुय मन त्यलि गछि़ न मारऽ
तस रूऽस केंह नो बिय व्यन्दो
च्याऽज़ी गरि ख्वतऽ गरि गयम गारऽ ।।
ज्ञान सोथ द्युत यम्य सुय तरि संसारऽ
रूद नो सु मंज मायायि बन्दो
मऽर्य ज़िन्दऽ तार तर्य तिम ब्रह्माऽ व्यचा़रऽ ।।
वासन दूर कर दम खार वारऽ
सू हम सू कर प्राण सन्धो
वाय प्रेयम सेतारस सूहम तारऽ ।।
समता प्राऽविथ ममता व्राव वारऽ
दिहि वास नायि च़ठ सम्बन्धो
च़ठ जुवऽ अथ लगी नो कान्ह चारऽ।।
सुष्मणा मार्ग किञ दशमो द्वारऽ
खस वात दारि बर कर बन्दो
अनहद मण्ड़ल बोज़ख वज़न ओ३मकारऽ ।।
मंज ज़ल पद्म पत्र वथ चि़य व्यवहार
वीद गीत ग्यवान च्याऽन्य गूव्यन्दों
पान पाव च़्यतस चि़य न्यति परम्पारऽ ।।

ओम स्वरूम

ओम स्वरूम च़्वलुम गम
शिवो हम शिवो हम ।।
विज्ञान सुऽदुर कीवल
अज़र अमर न्यरमल
छु ज़्युऽन मरून भ्रम ।। शिवो
न्यर विकल्प अचल
सत चित आत्मा मंगल
ब्वज़ पर न्यति मुक्त सम ।। शिवो
सोर पान सान शिविय ज़ान
ज्ञान यूग भक्ति भाव यी मान
अऽथ्य वनान परम प्रेयम ।। शिवो
अथ मंज नो कैंह भीदिय
सुय बुय यस ग्यवान वीदिय
वीद नगारुक यी ड़मड़म ।। शिवो
परमात्म ध्यानिय कर
सम अमृत च्यथ ज़िन्द मर
प्रेयि तस यस बासी न च़म ।। शिवो
सर्वऽ रूपय सदा शिव
सोरिय ज़ान पननुय जुव
साक्षी अद्वयत अगम ।। शिवो
ओमुय कार छुय पथ सार
बारम्बार यी व्यच़ार
तार दियि तारऽ तारि असि ओम ।। शिवो
न्यरन्जन न्याराकार
न्यरविकार युस आधार
स्वयं प्रकाशिय ब्रह्म ।। शिवो

लोलऽ ज़ोलनम नारऽ तन मन
चीतन मात्रण पूर्णन
सूर चक्कर त व्रोव वहम ।।
मुर्खन साऽनी स्यठाह चरि
वनव अस्य यि गरि गरि
छुन गम गेलिते आलम ।।
ओइमिय स्वर ओइमिय पान
ओइमिय धारनायि धार ध्यान
ओइमुक अर्थ सूहम ।।
ओइमिय छुय पानय दय
ओइमिस सीऽत्य च्यथ कर लय
कर लय यियी परम शम ।।
गूब्यन्दस चऽज्य दुय त बुल
ज़ोनुन पननुय पान कुल
शुऽती प्रमाण ईकोहम ।।

गाश दारिय

गाश दारिय छिसय वुछनत लोलो
यि छु सोरुय नारायण तऽ लोलो ।।
प्राणविय सीऽत्य बोज़ प्राणविय सीऽत्यी
ओइमिय म्यव रातर द्यनत लोलो ।।
गाश यियी नाश पापन बनी
शुऽद्ध सपदी बोऽद्ध प्राण मन तऽ लोलो ।।
सहज़ऽ पाऽठ्यी स्वर सूहम हम सू
दम दम स्वर कर मोछ्यन तऽ लोलो ।।
सूहम सूहम सू छुय वज़ानिय
बोज़ कन थव छुसमा छ्यन तऽ लोलो ।।

सहज़ आसन सहज़ प्राणाय़ाम कर
सहज़ ध्यानिय सहज़ स्मरण लोलो ।। यि
सहज़ भावय प्राव सहज़ अवस्था
सहज़ व्यचार सहज़ऽ भजन तऽ लोलो।। यि
नाम रूप भ्युऽन भ्युऽन नाम रूप कलप्यथ
भूषणनिय मंज़ कुनुय स्वनत् लोलो।। यि
सहज़ पाऽठी थलि थलि वुछत सुऽन्दर
अस्ति भांति प्रेयि रूप हन हनत लोलो।। यि
अभय अक्रय पदसिय मंज़िय
छुय गूव्यन्द सन्त–सतज़न तऽ लोलो ।। यि
सहज़ यूग कर सहज़ क्रया
सहज़ समाध दिच्य गूव्यन्दन तऽ लोलो।। यि

वुछ दिलस

वुछ दिलस अन्दर बसिथ दिलबर सीऽत्य सीऽत्य
म्यति वुछ पननुय सथगोर सीऽत्य सीऽत्य।। 1
क्या च़्मे गम क्या च़्ये वोऊ परवाय छुय
सायस यस आसि ईश्वर सीऽत्य सीऽत्य।। 2
शाहन ज़्येन त्यलि शाहन हुन्द च़िऽ शाह
दयि नाविय राथ दुऽह स्वर सीऽत्य सीऽत्य।। 3 म्य
आशचर छुय सथ गोर नुय शब्द
बोज़ आशचर वुछ आश्चर सीऽत्य सीऽत्य ।। 4 म्य
ज़ान कर ज़ान जान छय ज़ान पऽज़िय
ज़ाऽन्य सीत्यन म्वकलख़ कर सीऽत्य सीऽत्य।। 5 म्य
गाशुक गाश स्वप्रकाश शुद्ध च़ीतन
सूहम सू ध्यानिय धर सीऽत्य सीऽत्य।। 6 म्य

सथ गोर सिन्ऽज़ यीच यीच जानिय सपिऽज़
तीच़ तीच़ हानिय च़लि ज़र सीऽत्य सीऽत्य ।। 7
अन्तर बाह्यर द्रावुय च़्वपाऽरी
गूव्यन्द अन्तर बाह्यर सीऽत्य सीऽत्य ।। 8
तस क्या करन त्रट तोफ व्ययि वुज़मलऽ
यस आसि पनुनुय सथग्वर सीऽत्य सीऽत्य।। 9

ब्रह्म व्यच़ारय

ब्रह्म व्याच़ारय भ्रमफांऽस्य म्य च़ऽट
क्रट क्रट ताञ्र ज़ोन सदा शिव ।।
मचि़ न्यंदिरे सत गुरुव कर्य हुशाईयार
हुशियार गयि सोरुय वुछ यार
सम्ता प्राऽविम वासना हऽट च़ऽट ।।
यमऽभयि मर मर वसवास त्रोवुम
शंकायि च़ऽजि परम पद प्रोवुम
नखि त्राव पापऽ ज़्यनऽ मरनिऽची यऽट ।।
अहम वनऽनऽ किथऽ सहम छु यिवान
वहम सोर सम्सारिय ज़ान
सुय तरि यस वहमिऽची फऽट मऽट।।
लूकन निशि बिऽय गोमुत मोत वाल
सुय ज़ानि सोन हाल यस बनियि हाल
आनन्दस मंज़ च़्यथ मन बुद्ध फट।।
स्वयं प्रकाश सत्वित् आनन्द रूप
अज़र अमर अखन्ड़ अनूप
निर्मल बुऽद्ध तोर वऽच़ न वति नट ।।
त्रोवुम हम सू सू म्ये जुव छुय
नोपमुय मन सत गुऽरऽव दोपमय
बाल पान प्यठ म्य वोत दिवान हऽट हऽट ।।

तस कीवलस पथ म्य कर गथ़
सत ग्वरन हिन्ज़िय म्य छम सथ
ख्यूब च़्वल तृष्णा त ममता वार हऽट ।। क्रट

सत की ज़्यत पापनिय गोम सूर
लूभुक चूर यलि म्य गव दूर
दुय त्राऽव चऽज अगिन्यान अनि गट ।। क्रट

अमर पान च़्यतस पाव म मशराव
सम भाव प्राव सम नज़र थाव
चिक चाव भर मऽ आऽखिर छयिन यि ज़ऽट ।। क्रट

बुय सुय सुय बुय अथ नोछु भीदिय
ग्यवान गूव्यन्द च़्येय वीदिय
जोश सान प्रेमयच लहरी म्य छ़ऽट ।। क्रट

प्रीच़ हिऽन्द पाऽठय नच़ान ओस यिदिह
धाऽरिन भ्रम किऽन्य कम कम विह
चुरासी लख चक्कर सूर कर्मिन्य अऽट।।

तोर पान

तोर पान ग्वल यम सुन्द व्रास लोलों
च़्वल मर मर हान वसवास लोलो।।
म्वकलेयि वानस दिथ गछ़ुन फाल
दिहि अभिमान ज़ाल साऽरी शख गाल
रक्षिपाल सारिकुय पान ज़ान अकाल
कालुक काल कसकरि ग्रास लोलो ।।

अमर अज़र अगूच़र आश्चर
च़्यन मातर अद्वयतऽ दिगम्बर
न्यरद्वन्द अपरोक्ष बन्द मुक्ती पर
भीतर बाह्यर बिय सोर व्रास लोलो।।

कर व्यचार युथ ध्यान धारनायि धार
अनन्त अपार निर्विकार आधार
बारम्बार नमस्कार चिय छुख सार
मन मार दीशऽ काल ब्यन निवास लोलो।।

दम दम थाव अखन्ड़ आकार वृथ
ह्यथ दिथ चिय छुख न्यरलीफिय न्यथ
अत गथ सूर ज़ल मंज़ पद्मऽ पत्रऽ वथ
करिथ ख्यथ च्यथ वोपवास लोलो।।

समता प्राव पान सान ज़ान ज़रऽ ज़रऽ
हर ज़िन्द मर दृढ निश्चय यी कर
ममता वासना व्राव सूहम स्वंर
स्वर सान खार श्वास उश्वास लोलो ।।

सतगुर कृपायि सीऽत्यी तरी
कर्म धर्म रस्य अस्य दयन वरी
छ्ऽरी आऽस्य धारिऽन्य वुञ न मरी
मऽस्य ज़िन्दऽ पापन गव ड़ास लोलो।।

न्यर्मल कैवल अचल न्यशकल
च़ऽज्य गांगल ज़्यनऽ मरनिऽच वदल
कल गयि शिविय ज़ोनुम थल थल
वठल कर संकल्प ठास लोलो।।

सुय बिय बिय सुय अथ मंज़ न भीदिय
भीद बुऽद्ध व्राव भीदिय जानुन छु खीदिय
भीदस सूत्य चिऽ खऽर कर च्यवान वीदिय
दिह अध्यास व्राव ती गव सन्यिास लोलो ।।

वोथन ब्यहन ख्यवन च्यवन दवन
असन गिन्दन शुंऽगन तस दयस नऽ व्यन
ज़ान मो केंह कर यी चिय स्मरण
प्रथ वख्तय कर यि अभ्यास लोलो।

सथ च्यथ आनन्द कन्द गूव्यन्दो

न्यजा नन्द न्यस्पन्द जुव च्य वन्दो
चरणन च्यान्यन च्य अन्द वन्दो
स्वप्न मंज युथन गछि द्वयत भास लोलो।।

छांज्याव म्य युस

छांज्याव म्य युस = सुय बिऽय तऽ बऽ कुस
न ह्युथ न युथ = वन क्या बऽ क्यूथ
यी छुस त् ती छुस ।।
केंह न त् केंह नो = दुह नत रेह नो
लोलन ज़ोलुस ।। सुय
घरऽ घरऽ फेरुन = अचुन त नेरून
मोकल्योव क्वड़ मुस ।। सुय
ओरऽ येरऽ नाराण = पानसिय बऽछारान नाहकय थकुस।।
कुस छोड़ कम्य छोड़ = हम छोड़ तुम तोड
भ्रम किञ छोररुस ।। सुय
नन्याव बन्याव = पानस सन्याव
भ्वसर् त्वरुस ।। सुय
न केंह प्रावुन = न केंह व्रावुन
यिथय ग्वलुस ।। सुय
चिय समशये = पान प्रथ शये
ज़ोनुम तऽ म्वकुस ।। सुय
ज़ान्याम भयन्यर = आऽसिथ त कुज़र
अज़र च़्वलुस ।।
गमय चलिम = मुहिय गलिम
ओऽमिय स्वरूस ।। सुय
हम यस गोलुय = सुय म्वकुलुय
हमय मुछुस ।। सुय
भ्रमऽ वाल ब्वरूय = लागान छु म्वरूय
व्यचार वुकुस ।। सुय

वाडितिथ ओतन = वीद लग्य प़ंथन
सन्तव वोनुस।।
नत कोत यिवान = नत कोत गछान
पान सोर ज़ोनुस ।।
गूव्यन्दन व्यचोर = गूव्यन्दय च्वपोर
जान पाऽठय त्वगुस ।।

अमरीश्वर

अमरीश्वर अमृत च्याव लोलो
च्याञि प्रेयमऽ मिटन छु आव जाव लोलो।।
विज्ञन्यान रऽवऽ श्री शिव शंकरय
अज्ञान गट चऽजमो ज़रऽ ज़रय
यम थरय रूज़ नऽ हवाव लोलो ।।
ही न्यमल कैवल न्यष्कलो
सत् च्यथ आनन्द गयि च्याञी कलो
वरऽ ज़रऽ कास अमर बनाव लोलो ।।
गुऽरऽ सेवायि बराबर कांह नऽ तफिय
अज़पा हस बराबर कांह न ज़फिय
आत्म ध्यान ध्यानव मंज़ द्राव लोलो।।
केंह मऽ कर थर जुवऽ द्राव हेय्यह मऽ बर
करनस न करनस वुछुना कर
न्यरविकार च्योञ अक्रय स्वभाव लोलो।।
अभुक्ता अकर्त्ता ख्यथ च्यथ करिथ
न्यरलीफ आकाश वत मीलिथ गीलिथ
न्यथ ब्रह्म आकार व्रथ थाव लोलो।
पत्युम ब्रूंठिम करुन स्वरुन मशराव
ज़िन्दऽ मर रिन्दऽ ज़्युऽन मरुन मशराव
मरऽ मरऽ हान वसवास द्राव लोलो ।।

कुल गुत्र वरण आश्रम मशिराव
सत् असत् धर्म अधर्म मशिराव
दिहि दृष्ट त्राव सम भाव प्राव लोलो ।। चानि

स्वप्न दृष्टा वत् चिय छुख सोरुय
यम्य व्यचोरुय तम्य पान तोरुय
आव कैवल कीवलिय भाव लोलो।। चानि

हम गली ओ३म स्वरनय सीऽत्यी
वुछ ओ३म स्वरनय सीऽत्य तर्य कीऽत्यी
ह्वथ कमलिय वार फ्वलनाव लोलो।। चानि

च्यथ चन्द्रम सिरिय प्राणिय मिलनाव
ब्रह्म रोन्द्रय मंज्य द्वाद शान्त वात नाव
सहस्त्रदलसिय मंज पान साव लोलो।। चानि

भ्रम आना जाना मरना है
पान सोरुय आसिति भाति प्रय रूप है
नत कुस मूद नत कुस ज़ाव लोलो।। चानि

ज्ञान अमृत च्यथ बन आनन्द गण
हन हन ज़ान पानऽ सान नारायण
वीद वनन यी गव भक्ति भाव लोलो।। चानि

काल कस करि ग्रास कालऽ त्रास मशिराव
आत्मा चिऽ तसुन्द पानिय याद पाव
अपुज़ दिहुक भरमऽ चिक चाव लोलो।। चानि

वुछ ज़गतुक स्वतास्यद अत्यन्त अभाव
छुय गूव्यन्द पान पनुन मऽ मशिराव
छांज्याव युस तस म्योन नाव लोलो ।। चानि

दय ज़ान यस

दय ज़ान यस गयि भवसर सुय तरि
मरि मन मद मुह व्यचारऽ सीऽत्य।।
प्रथ वक्त परमात्म ध्यान सुय धरि
युस दिह अध्यास ज़ालि ज्ञान नार सीऽत्य
दृष्टिय अत्यन्त अभाविय करि ।।
ज़ानि दय सोर करि अभ्यास गरि गरि
मन शान्त बनि प्रेयम गुलज़ारऽ सीऽत्य
छांज्याव युस न्यबर सुय ओस पननि घरि ।।
दम दम क्रम पाऽठय दम दम युस स्वरि
चलि गम हम गलि ओमकार सीऽत्य
सहज़ऽ भाविय प्राऽविथिय तरि मरि ।।
व्रावि न् लूभ सु सतस प्यठ कति धरि
मुह ज़ाल वलन आव अहंकार सीऽत्य
दम कपठ यस फरि तस ज़ांहनऽ दय वरि ।।
पान ह्यथ शिव सोर ज़ानि युस मनिमरि
तस ज़ांह नऽ हान गछि व्यवहार सीऽत्य
सुय मरि कस मरि कुस तस कसखरि ।।
हठ कर्म कर्यत्यन पानस सुय फरि
केंह बनि न कम करन आहारऽ सीऽत्य
प्वज़ सोन वनुन च्यार्यन हसऽ खरि।।
ज़ोनुन नऽ भीद तस पानस क्याज़ि व्यसरि
गोव्यन्द वीद ग्वरऽ प्रचार सीऽत्य
करनऽ रोस्तुय सोरुय गव असि वरि।।

वछ अछ

वछ अछ़ रछ़ अप्सरायि
मारन ग्रायि च़ायि सोन ।।
ग्वरऽ ईश्वर पनुन सायि
थोवयो आर इयिनव म्योन
अन्दर दिवता ह्यथ च़ायि ।।
तम्बलावान छि कम्यतानि त्रायि
असि दयि लोल स्यठाह च्योन
रछ करन नत हायि ज़ायि।।
अनाहद चे गोफ़ायि
मंज गोफ़ि यम्य कदम च़ोन
शिव सपनुन शिव मायि।।
शेरि मंज़ मंऽज्य सुष्मणायि
नेरि अमृत वाऽलिथ च्योन
म्वकली सुय निशि वुह्य वायि ।।
मारऽ कर्य यिम त तिम त्रष्णायि
ज़लिर सुन्द जाल मो वोन
कर व्यच़ार च़ठ वासनायि
खोच़न यति मुह मायायि
वुछ करतो च़्यतस प्रोन
दुःख सज़्योव सीऽत्य ममतायि।।
चज्यम गज्यम बलायि
वन्दयो सोर कबील क्रोन
अष्ट स्यज़ऽ सरस्वती आयि ।।
शिव सिन्ज़े दयायि
शिव पान ह्यथ सोरुय ज़ोन
कर क्याज़ि सथ वननस वायि।।

बान्धव ह्युव न कांह समतायि
प्रसन्न तायि विद्यायि मोन
शथिर ह्युव न कांह आशायि ।।
राग दीशऽ वासनायि रायि
वैराग के द्राते लोन
यि घास यम्य लून तिम न ज़ायि ।।
छु गूव्यन्दिय जायि जायि
अभिमान रूऽस्त ख्योन त च्योन
दुय च़ज स्वय आऽसिस छायि ।।

पान पोव

पान पोव च्यतस च़ठ भ्रभ फांऽसी
च्यथ प्रेयम खाऽसी वस वस व्राव।।
पऽर्य पऽर्य कऽर्य कऽर्य वनन बकवऽसी
परिव नतय तुलन टाव
आसे च्योर कांह करनस वनवाऽसी।।
वनवय साफ सथ द्यिन ह्यन फांऽसी
ह्यन कडिन्यि कनि कनि ज़न होर काव
वनि दय अडिसथ गछि़ धर्म रऽसी ।।
व्रावि दिह अभिमान युस सु सन्यांऽसी
ज़ीवन मुक्त ज्ञाऊी तस्य नाव
अभिमान रूऽस युस ख्ययि सु उपवाऽसी ।।
व्यचार दुयी असी आऽसिय
भ्रम ओस ज़्योन मरुन आव जाव
सुय ज़िन्द मरि यम्य सन्कल्प ठाऽसी।।
तऽस्त्य सतगुरु शास्त्र व्यश्सवऽसी
ज़न्मस यिथ तमिस तमना द्राव
सुनो तरि युस आसि वसवाऽसी।।

च्योन जुव शिव छुय बनमऽ उदाऽसी
सम अमृत च्य ताव शेहलाव
यम्य ज़लऽ व्रेशी च़लि युस आसि प्यासी।।
पान सान दय ज़ान सोर व्यकांऽसी
बन प्राव मरि सहज़ भाव
गूव्यन्दन मनि सम्शय काऽसी।।

च़्यन्तन त्राव

च़्यन्तन व्राव साऽस्य बन न्यरवासन
सासन ब्रोंठ कनि ज़िन्द मरत जुवो।।
समाधी दिथ धाऽरिथ आसन
ज़ऽनिथ शिविय अन्दर न्यबर जुवो
नतऽ कर्य मगज़ छ़ऽर्य बकवासन।।
वीद ग्वर वाक्य किन मनि शख कासन
साक्षात शिविय तिमय नर तऽ जुवो
संकल्प विकल्प ठासन ।।
दिह अभिमान व्रावन्कि सन्यासन
साध संतज़न बनाऽव्य आश्च़रत जुवो
रऽट्य नऽ दिह अध्यासन वसवासन।।
मन थ्यर कर स्वर सूहम श्वासन
सीऽत्य श्वासन राथ द्यन बरत जुवो
मस बनाऽव्य अम्य की व्यलासन
क्वर यम्य सु सासन मंज़ अख आसन
अत्यन्त अभाव दृशस करत जुवो
तिम पुरुष रटिमिऽत्य नऽ तलवासन।।
साऽक्षी वथ रुज़िथ सु गिन्दन रासन
रास राधा कृष्ण मनो हरत जुवो
सुय मनि रुखमनि छुम च्वापाऽस्य बासन।।

दीश काल रूऽस तिहिन्द निवासन
आसनन मन कोरुम थ्यरत जुवो
ख्यथ च्यथ यि आसन उपवासन।।
गूव्यन्द मस क्वर ब्रह्म अभ्यासन
अनुग्रहस प्यठ रुद्यि ग्वरतऽ जुवो
तडिरय यमि भवसर यिम तिम विश्वासन।।

कुलस त पानस

कुलस त पानस ईकऽवाट
कर ती गव पूज़ा तऽ पाठ ।।
न्यति शुद्ध शिव आत्मा मान
पानऽ सान हन हन सुय ज़ान
म्वटि रूपय सुय व्यराठ।।

वासनायि सूर कर मन मार
स्वभरिऽथ गंडुस ज्ञान नार
ज़ाल दिहि अभिमान बाठ काठ।।

बालुक छ़ायि कुन नटन
छ़ायि त्रावन छ़ायि रटन
भ्रम किञ कम करन सु चाठ।।

आश पाश दूर कर ओम कार
स्वरान नेर दशमो द्वार
ज्योति ललाटऽ प्यठ ललाठ।।

शाहन ह्यस सान वाल खार
सूहम सू सीऽत्य व्यचार
संङ्कल्पन पयज़ि काठ ।।

त्रष्णायि किञ छुख ज़ीविय
त्रष्णा त्राव चिय दीविय
व्यचार गालुस मूल राठ।। कर

स्वप्न दृष्टावत ईक अनीक
हुआ है यह बात ठीक
आप ही करोड़ पांच आठ साठ ।। कर

सोरुय दय भ्युऽन अखन मुय
भाव मङ्गल रुद न्यर–भय
पानय सु ग्वर मंत्र च़ाठ।। कर

यच्छि़ हन्द्य पच्छि़ हिन्ज़ ह्योल
वाय कर्म बुत राऽच्य यर्ल यर्ल
अथि ह्यथ व्यचार हाठ।। कर

धर्म पाह संत संग ब्योल
त्राव व्व सग गव दयि लोल
अभि नाश फालऽ सुऽम्म दिज़ि फ्राठ ।। कर

स्वरिय दय ल्वग असि तार
गूब्यन्दन पनिऽन्य खार
नखि वाज्य वातऽ नाऽविन घाठ ।। कर

विज्ञान मार तण्डय

विज्ञान मार तण्डय, ही अखन्ड़य शंकरय
केवल सतगुरु कृपा चाञ छमय
सुऽमिय भासुमिय चिय भ्रमिय कासुमय
पर्यमिऽत्य छिम नऽ पोथि पण्ड़य।। । ही

हीथ करिथ गीत पनुनुय छुख ग्यवान
तीथ गुऽणनिय आस वुन चिय भगवान
वाऽतिथ चिय खण्डऽ खण्डय।। 2
भक्ती चाऽ मुक्ती साऽी छयी
परि पूर्ण चिऽ अधिष्ठान च्य व्यन न अख मुयी
हद मुऽव्रुर छुय ख्वतऽ खन्डय।। 3
भक्ति वत्सल शक्ति पातं छय नज़री
छुख दयालो अति कृपालो शङ्करय
वर म्य कर मुऽकलि दिह क्रन्डय।। 4
प्वज़ वनुन मर्खन निशि छुय स्यठा ट्युऽठुय
छिव म व्यषियन वोनुय भवसरऽ खस बोठुय
ख्यय २ ओत बन म मुश्टण्डय।। 5
श्रावऽ शीन ह्यू गोलुस
च्यानि ध्यानय अज्ञान गटऽ चऽज,
गाश आव च्याने प्रचन्डय।। 6
मन गछि यपाऽस्य तपाऽस्य ज़ान व्यापाऽरी शिवय
पान सान सोर ज़ानुन छुय व्योनुय सुय ज़ुवय
यिकर मन गछि गन्डय।। 7
हान चंजमो जान गयमो च्याऽनी
यिनऽ गछऽ निच ज्यनऽ मर नच हानी
म्वकलेयि निश यम डन्डय।। 8
ही सदा शिव रूपिय च्याऽनी छि साऽरी
चिय ब्रह्मा व्यष्ण त दीवय करतम साऽयाऽरी
आदि दीव वक्र टन्डय।। 9
गूव्यन्दो ज़ानुन शिव पनुन पान सुयय
वीदव यी छुय वोन मुत त्राव पननीय दुयी
बन्द गछख न अदऽ मूहनि जन्डय।। 10

वनुन हाल

वनुन हाल पनुन महाल
तोर नो ख्याल बातान लोलो।।
तथ मंज़ न दीश तथ मंज़ न काल
हैरान यूग गन्यान लोलो
लोलऽ तिहिन्दि दद्य गय मोत वाल।। तोर
न ह्युथ युथ सु बे मिसाल
शिन्या ति नऽ रोज़ान लोलो।। तोर
ब्वज़ हुन्द क्या छु मजाल ।। तोर
वीद कारण कन फुट्य शाल
तल्य गय कल्य ग्यवान लोलो
पूर्ण सु छु लाज़वाल ।। तोर
ज्यव गयि कज्य मठ ज़प माल
अति वुठ न फोरान लोलो
क्याह वनि यस यी बनि हाल ।। तोर
वुछि क्या वुज़ नेक बद फाल
सोर दय नेरान लोलो
प्वज़ बननस क्या साऽ गाल ।। तोर
न्य नो ग्योव स्वर तय ताल
पज़्य भारव दिवान लोलो
छुस करन नऽ केंह याल चाल ।। तोर
प्रेयमऽ अमृत माला माल
च्यव द्राव अरमान लोलो
स्वरन छु पानिय कांह खाल।। तोर
अज़र अमर कालुक काल
छु पननुय पान लोलो

सारिनिय हुन्द त्राव यम ज़ाल ।।

दिहि अभिमानिय जुवऽ गाल
सार्युक अधिष्ठान लोलो
चिय द्राख सारिकुय रक्षपाल ।।

सदा शिविय छु दयाल
कासि ज़्यनऽ मरनऽ हान लोलो
अनन्त रूप सुय गूपाल ।।

भक्तयन हिन्ज़ कीर्ती काल
पज़ि मन किञ करान लोलो
अर्पण गच्छ़ चठ मुहज़ाल ।।

गुव्यन्द करखय कमाल
पान सान दय ज़ान लोलो
सोरिय च्याऽन्य नाव लज्य बाल ।।

रस रस असवञ

रस रस असवञ मन म्य न्युवमय
सदा शिव हय विज्ञान रऽव हय।।

सत् च़्यत आनन्द कन्दऽ न्यस्पन्दय
च्यदा नन्दय न्यज़ा नन्दय
न्यरद्वन्द तस कांह नऽ ह्युवय।।

वांग मनस गूच़र अवांग मनस अगूच़र
हर भीतर बाहर ज़रऽ ज़रऽ
आश्चर सु अस्ति बाति प्रय रूप छुवय।।

कल्याणऽ सोदुर असंग अटल
ही शिव न्यष्कल मङ्गल
न्यर मल केवल छुख सोन जुवय।।

साक्षी आत्मा चिऽ च़्यन मातरय
अजर त अमर दिगम्बरय
यम थरय त्राव चऽ मो रिऽवय।।

ब्रज पीरि प्यठ दिहि किस मन्दरस मंज़
तस शिवस पूज़ायि कर संज़
कर लोल ज़ल व्यचार म्यचि लिवय।। सदा

च्यथ मन प्राणिय लाग पोशि कने
अदऽ हनि हने यिथि वने
रूप रूप अकि रूप कृष्ण जुवय।। सदा

यम्य ज़ोन दय मुय २ तस जय जय
गूव्यन्दय रूद न्यर भय
सत् छा असत् यि तोहि वनि वय।। सदा

सत् च्यत

सत् च्यत आनन्द विज्ञान भास्करसिय
प्यतऽ स्वर सिय गछ़ शरण सत गुर सिय।।

न्यर्मलस अचलस कैवलस
मंगलस पूर्णस न्यष्कलस
शीतलस चैतन मातर सिय।। प्यत

न्यरविकारस तय तस आधारस
ओंम कारस अनन्त अपारस
यारस सीऽत्य क्षणऽ क्षन बो भरसिय।। प्यत

अभि नाशस स्वंय प्रकाशस
च्यदा काशस साडिनस गाशस
सीर फाश गोम मंज़ मचरसिय।।

च्यदानन्दस तऽ न्यज़ानन्दस
न्यरसंदस साऽक्षियस निर्द्वन्द्वस
वन्दस जुव बोज़िना आऽरचरसिय।।

अखन्डस अज़रस अमरस
अगूचरस आश्चरस दिगम्बरस
समरस च्यव पारगय भव सरसिय।।

न्यरगुणस न्यष्क्रयस च्यथ गुऽणस
दस्तरस केंह नऽ तोर व्यतस मनस
वनस क्याह अवांग मनस अगूचरसिय।।
र्न्यमयस न्यति मुक्तस असंगस
ज्ञान सुऽदरस दीश काल व्यनस
दृष्टा आत्माहस सदा शिवसिय।।
सत गुरस राधा स्वामियस
हावस नावस लगस गूव्यन्दस
ऊँम स्वरस प्रथ प्रमात परसिय।।
परम् पद प्राव पम्पोशकि पाऽठ्य फ्वल
तिहिन्द्यन च़रणऽ कमलन हिन्ज गर्द मल
हृदयस यम्य मऽछ़ तस जय नर सिय।।
ज्ञान विज्ञान पाद तिहिन्द कर स्मरण
करनय दूर अज्ञान क्यन त्यम्बरेन
हरन पाफ यलि पपि तस नर सिय।।
सतगुर श्री स्वामी श्री सदा शिव
च्योनुय आनन्द कन्द विज्ञान रऽव
द्वन्दा द्वन्द पर सारनिय सर सिय।।
प्रमाध समाध त्राव सतगुर पाद
सीव गूव्यन्द सरस्वती कोरनय प्रसाद
आज़ाद कोरहस नमस्कार करसिय।।

लोल बागस

लोल बागस अजब सब्ज़ार
कर नज़ार वुछ च्यापार्श्व शिव।।
वीदिक्य छिस जानावार
महा वाक्य बोलान
प्रणविय छु सोर प्रणविय छु सार।।

श्रोती हिन्द वुऽथान फम्वार
करान वसान शिवोहम
आत्मऽ ध्यान धार नाये धार।। कर
ज्ञान विज्ञान कुल्य छि शूभिदार
मुक्ती मेव भर्यथिय
आनन्द भर्यथिय रसदार।। कर
हमस रंग बुल्बुल यि गुफ्तार
करान सुय वियं हो
छांड़ान छुहन युस यार।। कर
होश पोश नूल करान आंकार
सथ यि असरार छु हो
ज़्यादऽ क्याह वनऽ छुम नो वार ।। कर
दिहि अध्यासऽ काव तुलन गटकार
मुक्त मेव काव ख्ययि नऽ ज़ांह
तिम ख्यवन व्यष्टा मुरदार।। कर
धार चलि प्रेयम नलि चार बार
सम दुष्टि ज़ल थल थल
बर ज़गि लगी अद तार।। कर
आत्म दीव आगस नमस्कार
लागस च्यत् बुद्ध मन
यिमय पोश बारम्बर।। कर
आत्म शाऽन्ती हन्द्य आबशार
अथ्य मंज़ तन मन नाव
ज़गत ताफ चलि फेरि शेहजार।। कर
वासनायि सुऽयि कर अम्बार
दिहि अध्यास खर खसय
डुव ज़ाल दिस सत संग नार।। कर

भाविक्य गुलिय बे खार
ह्यथ यच्छि पच्छि पुश्चन
आयि आत्म शिवऽ च्य जय जयकार।। कर
स्वधर्म कर्मुक देवार
सन्तूषकुय नल वोट
साहिबि होशो आवो बहार।। कर
अमृत फल युस आहार
करि त्रष्नायि ताव चल्यस
व्रयि तापुक तस यरव बार।। कर
सदा रोज़वुन यि गुलज़ार
हम्सऽ बुल्बुल गूव्यन्दो
अमृत फल ख्योन करुन व्यचार।। कर

आहा अजब

आहा अजब तमाशा देखा तो यूं ही देखा

जाग्रत स्वप्न स्वशप्ती को, नऽदेखते तुर्री को।
जीवन मुक्त हुए जो, हाल, अब किसे कँहू क्या।। आहा
शक शुब्ह मन से उसके = काफूर सब हुए हैं।
आप सहित वह कुल को = जानता है परम आत्मा।। आहा
हर चार अतराफ में = यार ही का रूख देखा।
दीदा जिधर २ को = जाते नज़र वह आता।। आहा
जिस के तलाश में हम = घर घर व दरबदर थे।
खुदी बदर करके = अपने ही घर में पाया।। आहा
सबका मै शाहिद हूं = वाहिद व लाशरीक।
न्यर लीफ हूं अन्दर से = बाहिर से खाता पीता।। आहा
कुल में जो आप माने = आप में कुल जो जाने।
आनन्द गण हुआ वह = हुशियार हो या सोया।। आहा

मय ऐसा मैने पिया = जिस में न तू मै बाकय।
ना मय न साकी है = न पैमाना खाना।। आहा
न देखना न दीदा = न देखने है वाला।
चुप होती है मुझे = अब आगे को कहूं क्या।। आहा
मस्त मदहोश गोविन्द – हो गया है तब से। आहा
मुये मारफत का प्याला = साकी ने जब पिलाया।। आहा

यिनऽ ज़ांह

यिनऽ ज़ांह मशी अज़र त अमर पानिय
मर मर यम थर अरऽसरऽ व्राव दूर कर हानिय।।
कन थव वार बोज़ सरस्वती छय वनानिय
वन्य वन्य कन्य पत्य क्याह च्य गछान कोन सनानिय।।
वननव सीऽत्यी योत केंह नो छु बनानिय
वननस त बननस फेर वुछ जमीन असमानिय।।
समतायि अमर्यत च्यव यिमव तिम मस्तानिय
प्यव होशसिय खस खस ज़ोन तम्य नाराणिय।
भ्रम किज़ युन गछुन तऽ ज्युन मरून भासानिय
ज़र ज़र छु पानय नत क्वत यिवान क्वत गछानिय।।
सर्व आत्म भाव नाव अथ्य भक्ति भाव गन्यानिय
मशराव सत् तऽ असत् व्राव दिहि अभिमानिय।।
यिमन पुरशन निशि सम समाध व्यथानिय
प्रथ वक्त समाधी छि तिमनिय आसानिय।।
वुथन ब्याहन ख्यवन च्यवन दवानिय
असन गिंदन कथकरन तऽ शुंगानिय।।
न्याति शुऽद्ध न्याति मुक्त निर्विकार पान ज़ानिय
न्यर्विकल्प सत् च्यत आनन्द अधिष्ठानिय।।

दीश काल रोस्त च़ऽ न्यर्गुण शिव च्योन थानिय
शर मन्द च्वशवय वीद गूव्यन्द गीत म्यवानिय।।

जिसको कहते हैं

जिसको कहते हैं हिन्दू परम आत्मा वह हम ही हैं
कुतबो कुरान जिसको कहते खुदा वह हम ही हैं ।।
सन्त ग्रंथ और पंथ सारे सरस्वती वेद शेष नाग
ज़िसका गाते गीत सब का आत्मा वह हम ही है।।
जिसके दर्शन की है ख्वाहिश कारणों आदिक को भी
जो सबों को सब से प्यारा दिलरुब्बा वह हम ही हैं।।
देव सारे जीव कारण कुल जगत है नाशवान
एक हालत पर जो कायम है सदा वह हम ही है।।
गगन वत् पूर्ण जो निर्गुण निष्क्रय निर्लीफ है
कुल है कुल में और कुल से जुदा वह हम ही हैं।।
जल में जल है खाक पुथ्वी में अग्न में तेज है
शुन्य में शुन्य और सब में सबा वह हम ही है।।
स्वप्न दृष्टा एक है अनेंक खुद ही बन गया
जो नज़र आता शहनशाह या गदा वह हम ही है।।
देश या काल है न जिसमें वह ही गोविन्द कौल है
है रहित मल से अविद्या के सफा वह हम ही है।।

ज़ऽ ना ह्यकयो

ज़ऽ ना ह्यकयो ज़ांह ब वनिथ यी चि़ऽ छुख तऽथ्य हो लगय
कुन वनुन ते छुम न फोरन च्याञि कुनिरुक छुम कसम।।
नून वछ़ाव मंज़ सुऽदरस पय ह्यने ब्ययन वनव
पान सुय ग्वल कस वने वञ चानि सनिरुक छुम कसम।।
भ्रम किञ द्रास छ़ारने च्येय पान चि़य ओसुख पतव
बुय ना आसो कुनि वने च्यानि ननिरुक छुम कसम।।
बुय ना रुदुस कुनि शाये च्यानि माये वल्य चोपोर
रोस्त न च्यय छुय अख हवावियय च्यानि गनिरुक छुम कस्म।।

पाऽन्य पानस आख वुछने द्राख गूव्यन्दा बनिथ
व्याख च्यय रोस्त योर नो कांह च्याञि कुनिरुक छुम कसम।।

दम दम दम

दम दम दम ह्यथ – ऊं तथ सथ ज़पुम
दम ज़ोन गनीमथ – ग्वरनिय पथ छोपुम
दम वुछ ज़गथ ।। ऊं
वायि शीरिथ वथ – द्वार द्वार त्रुऽपुम
गाशस कऽर म्य गथ।। ऊं
दीश काल रहिथ – सत गुऽरऽव दुऽपुम
पूर्ण छु गगन वथ।। ऊं
अबोक्ता ख्यथ च्यथ – वोनुख़ दुऽपुम
अक्रय दिथ ह्यथ।। ऊं
सोर दय पान ह्यथ – ज़ोन मन न्वपुम
स्यज़र पज़र थज़र यिकथ।। ऊं
पान स्वर रिऽच्य यि वथ लोल नार त्वपुम
मूह तीऽरच्य च़ज पथ ।। ऊं
भ्रम ज़ोन अतगथ – व्यचार पपुम
त्रिगुणा नावि क्यथ।। ऊं
सथ च्यथ आनन्द अच्यथ – वुऽनहम श्रोपुम
सुऽख प्रोव गयि सथ ।। ऊं
ओस गूव्यन्द न्यथ – मूह मस क्रिपुम
गूव्यन्द स्वरस प्यथ।। ऊं

वनुन सुलभ

वनुन सुलभ दुर्लभ सहज व्यचार करुन
रिंद पानोंज़िन्द मरुन गिन्दना नसाऽ छुयी।।

ब्रह्म व्यचारच्ये नावि क्यथ भव सरय तरुन
सूहम के हम वायुन सुय बुय यि गछि जरुन।।
मशिराव पत्युम ब्रूँठिम सोरुय करुन त स्वरून
केंहन करुन करनस न करनस वुछना करुन ।।
व्यवीक वैराग पहल वान ह्यथ प्रथ सात चरुन
सत संग सन्तोष सीऽत्य ह्यथ यन्दर्यय चूरन फरुन।।
लोल सथ च्यत आनन्द अमरीश्वरुन
छुम तिहिन्दे लोल सीऽत्य मन भरुन।।
न्यर विकल्प वृथ थविथ दिहि अभिमान हरुन
पर धर्म त्रावुन स्वधमर्स प्यठ दरून।।
दम दम अथ्य सीऽत्यन रोजुन कोसंग निशि ड़रुन
प्राण के कल्मऽ सीऽत्य मनि कागज़स उोंम मरून।।
दीश काल रोस्त पानय यिय दय सुन्दुय वरून
गूब्यन्द केंहन करुन वुछत कोताह सख करुन।।

चजिम गफलत

चजिम गफलत यि नज़ारा डँयूठुम
बहानय बिय सु पानय यार डँयूठुम।।
सु पानय बुल्बुल जानऽवार डँयूठुम
सु पानय गुल चमन गुलज़ार डँयूठुम।।
सु पानय वैद्य यि असरार डँयूठुम
सु पानय दोद दवा बेमार डँयूठुम।।
सु पानय अनलहक दार डँयूठुम
सु पानय मनसूर सरदार डँयूठुम।।
सु पानय मुर्द तय मज़ार डँयूठुम
सु पानय शिव शुम्शान नार डयूठुम।।
सु पानय मुऽय मयुक खुमार डयूँठुम
सु पानय सुर ताय सेतार डँयूठुम।।

सु पानय गाम तय शहार डँयूठुम
सु पानय कुन त बे शुमार डँयूठुम ।। बहा
सु पानय शैर तय शिकार डँयूठुम
सु पानय शिकाऽस्य बे आर डयूठम।। बहा
सु पानय मुल्क तय सर कार डयूठुम
सु पानय रयत जार पार डँयूठुम।। बहा
सु पानय छुऽपऽ तय गुफ्तार डँयूठुम
सु पानय धुर तय सवार डयूठुम।। बहा
सु पानय घर घरूक खानदार डँयूठुम
सु पानय वैरान बाज़ार डँयूठुम।। बहा
सु पानय गुऽर तय ओमकार डँयूठुम।।
सु पानय च़ाठ करान व्यच़ार डँयूठुम।।
हमस सीऽत्यन यि सांसार डँयूठुम
दमस सीऽत्यन नमस्कार डँयूठुम।। बहा
सु पानय दीव मूलाधार डँयूठुम
सु पानय हंस ताज दार डयूठुम।। बहा
सु पानय कीश गंगाधार डयूठुम
सु पानय साकार न्यराकार डयूठुम।। बहा
कुनुय आऽसिथ रंगा रंगार डयूठुम
सु पानय गाटुल गाट जार डयूठुम ।। बहा
गूव्यन्द सारि कुय म्य सार डँयूठुम
गूव्यन्दस अम्युक एति बार डँयूठुम।। बहा

म्य च़िय अन्दर

म्य च़िय अन्दर म्य च़िय न्यबर
जबर च़िय ज़र ज़र बऽ नो केंह।।
कोरुम वस वस सन्कल्प सन्यास
च़्य रोस्त व्यव़ऽिरथ बु नो केंह द्रास
च़िय बुय बुय च़िय गयि मो खबर।।

अनन्त ब्रह्माण्ड़िय ब्ययि कारण
मंज च़्य च़्यथ सागरस छि यीरन
जय जय भविनय हिव अद बुबर।।

द्युयतिऽच्य च़जिम यामथ भुलिय
छनिथ प्यव दिह अभिमान कुलिय
वैराग व्यचा़रि्च्य तुझ तबर।।

राग दीश त्रेश दम्ब लूभिय कपट
छ्ठ त्राव दिह अध्यास जठ पठ
ज्ञान नार दजि़ ह्यथ वास नायि ल्वबर।।

आशा त्रशना ममता त् न्यंद्या
गालतख वाह वाह रुत गछि़ हे क्या
सरिप्यनि वासनायि हिऽन्दच्य टबर।।

मन ब्वद थ्यर गोम आश्च़र छु म्योन पान
हऽरान सन्त ज्ञान वीदिय ग्यवान
छिय गूब्यंद गीथ फिकिर म् बर।।

च़्य असिन

च़्य आऽसिन सोन नमस्कार
चि़य हो सारिकुय द्राख सार।।

चि़ मूहन दिथ गोहम सन
म्य च्याने लोलऽ दऽज़ हन हन
च़्य आर छुयन यिवान च़्ये व्यन
केंह नो ज़ोन ब छुस बे मार ।।

बऽ अन्दरिम हाल वनऽ कस
या ज़ानि दय नतऽ बनि यस
म्य तस भीद न प्यव च़्यतस
युस न्यर्मल त निर्विकार।।

च्य मंज ह्यसिय अत्यन्त अभाव
करय अथ करनस क्या नाव
म्य कैवल कैवली भाव आव
स्वप्न दृष्टा वथ आधार।। च्य

स्वयं प्रकाश च्यन मातर
आंवांग मनसऽ अगूचर
वति च्यतस दज़न छि पर
च्य मंज़ न्यवरथ दुऽहय सम्सार।। च्य

वनऽ क्या म्य कलन छम ज़्यव
कुन्यर तस म्य कुन्यर हो गव
सु शिव युस विज्ञानुक रऽव
करानिय द्राव सत व्यचार।। च्य

सम अमर्यत मन यम्य च्योव
सहज़ भावियं तम्य तिथ प्रोव
तमी सम्सार हो मशिरोव
करन तिमय छि साक्षात्कार।। च्य

व्यचारऽ नारऽ ज़ाल अभिमान
गूव्यन्दिय छु चयोनुय पान
गूव्यन्दस ब्यन म केंह ज़ान
यम्य वारऽ ज़ोन तस्य लोग तार।। च्य

यवऽ तवऽ

यवऽ तवऽ भवऽ सरय करिथ
तरिथ गछ़ख व्यचारऽ सीऽत्य।।
च्यतस अभाव मंज़ अच्यतस
च्यतस कर पान च्य तस न भीद
च्यतस आनन्द अमृत भरिथ।। तरिथ

भाव अभाव रोस्त च्योनुय स्वभाव
भाव प्वज़ भक्ति भाव बड़राव
भाव अभिमान दि ज्ञानऽ क्वलि बरिथ।।
मरि सुय नऽ सहज़ भाव प्रावि युस मरि
मरि नीरिथ मरि लगी नो
मरि मनि ओम गछि ज़िन्दय मरिथ।।
अज़र अमर च़िय यय ज़र ज़र
ज़रऽ ज़रऽ यी नय ज़र कैंह न बो
ज़र कांह न च़्य सिर्यस ब्योन स्वरिथ ।।
बजर लोलिऽच्य प्ययम म्य जरऽ
बजर च्याने अुऽश जरऽ गोम
बुजर क्याह कर निम दयि वरिथ ।।
बो भर पम्पोश गछ मा बो बरऽ
बर तल चाने व्यशम–बरो
वर रछतम नत क्या बनि ति परिथ।।
लबय कर बन्द रोज़ ह्युव लब़य
लभय दययी लोबुय रोज़
ल्योबुय कोशन हुन्द तुल च़रिथ।।
गूव्यन्द छुख गुरु च़रणन जुव वन्द
अन्द वन्द कुल व्यन्द पननुय पान
गन्द व्राव सतस प्यठ ह्यकिज़ दरिथ
तरिथ गछ़ख व्यचार सीऽत्य।।

न्यर्विकारो

न्यर्विकारो निविर्कल्पो न्यरगुणो हम न्यशक्रयी
नित्योहम न्यति शुऽद्धो न्यति मुक्तो निर्भयी।।
त्रन कालन मंज़ ज़ान बन्द मुक्ती हो च़्य ययी
दीश काल रोस्त न्यवास सोन परि पूर्ण हम हयी।।

च्योमो समरस च्वलमो म्य वस वसऽ गोसऽ गम अब कुछ नहीं
अस्ति भांते प्रयि रुपय पान ज़ोनुम म्य मुऽय मुऽयी।।
मंज़्य गययाव भ्रम यी वनुन ति मन्दछ छ्ययी
यीक रस ब अधिष्ठान अथ स्वरूपस जय जयी।।
सहज़ भाव प्रोव तम्य यम्य ज़ोन पान पननुय हर शयी
ज्ञान ज़लय छज्य तम्य मनि चख दुयी हसद रवययी।।
ओस यसुन्द लोल सु बऽ पानय द्राम यामत ह्योत पययी
ताप व्रशवय साफ साँऽपिन गव पापनिय ख्ययी।।
हमसा सूहम सू च्यतस सीऽत्यनं कर लयी
वीदव छुय वोनमुत अथ्य मंज परम ज़यी।।
केंह म कर करनस नकरनस वुछना कर सुऽय क्रयी
व्यव्हार कामि परद्यन हंज़ हिशि कर भर मऽ प्रयी।।
बन्द मुक्ती ते रहित हम हैं विज्ञान मययी
कुछ न खोया कुछ न पाया क्वर क्याह साऽ म्य तयी।।
सत च्यत आनन्द साक्षी आत्मा पुनुन ज़ोन ब्वड़ दयी
सुय वीदव ग्योव गूव्यन्द अथ मंज़ न कांह सम्शयी।।

योरकि करन

योरकि करन रोस तोरय वोरहस
क्वरहस मंजूर मंजूर मंजूर।।
सूहम व्राविथ छ्ऽर सू स्वरहस
यिमव प्वर शिव रूऽट भ्रम चूर
करोरन मन्त्र कुन ओम प्वरहस।। कोरहस
समरस च्योवहस हस आनन्द ब्वरहस
ज़ांह युस नऽ सोरि सुय ख्वत सरूर
यिन गछन ज्यन मरन ज़ालस न वुऽलहस।।

मनस मदस मूहस फोरहस
अहंकारस बन्योम सूर
हम ताय हांऽजऽ रोस भवसर तोर हस।।
तिम तऽरि यिमव पान पुशरहस
दिहि अभिमान लरि यिमव लूर
पान सान शिव सोर तिमव ज़ोनहस।।
व्यचार नेज़य यलि सिपुरहस
खुदी यख दम गयि कोफ़ूर
मनि कुल शख च़ऽल्य गंडमुच़िर्यहस।। कोरहस
तस दययस नो ज़ाह च ख्वरहस
सूय अन्दर न्यबर नज़िदीखदूर
ज़ोनुथ आर ओय यलि सत गुरुहस ।।
सुय ज़निथ सोर तस्य मंज म्वरहस
सू ज़ोन शमह ब पम्पूर
गूव्यन्द तथ गतस च़िऽ दुऽरहस।। कोरहस

सत् व्यच़ारऽ

सत् व्यच़ारऽ क्वर मन हनन
छ़्यनन तस भ्रम फांसिये।।
बूज्य बूज्य श्रवन कर्य कर्य मनन
सार्य सन्कल्प ठाऽसिये
न्यद्यासन–साक्षात्कार बनन।। छयनन
सत च़्यत आत्मा आनन्द गणन
मन निव रुद्य नो वोदासिये
सू म्योन जुवुय छिय वीद वनन।। छयनन
सुय यति मोकलन यस यी सनन
च़्ययि सुख अमर्यत खासिये
राथ द्यन भरन सीऽत्य सत ज़नन।। छयनन

रुज्यतन बस्ती या मंज वनन
यम्य मनि शख गण्ड़ काऽसिये
बनन यस पानस तस ननन। छयनन

दिहि अध्यास त्रावन शिव सोर ज़ानन
तिमनिय वनन सन्याऽसिये
जीवन मुक्त तिम साक्षात नारायण।। छयनन

मस कर्य अभिमान रूऽस ख्यन च्यनन
तिमनिय वनन उपवऽिसये
तन मन धन सत गुरुन किऽनन।। छयनन

वैराग सन्तोष शम मन स्यनन
मंज बस्ती वनवाऽसिये
रोज पान दय लोलिये छु गनन।। छयनन

ओम कार काम दीन वीदय थनन
महा वाक्य दुऽध च्ययि प्यासिये
त्रयि ताप पाप गछि सू व्यनन।। छयनन

गुऽणा तीतिय पान च्योज़ ननन
युस छ़ोर सुय असी आऽसिये
गूव्यन्द म्वकल्यव गोस याम कनन।। छयनन

नाहक पानस

नाहक पानस चि़ऽ चानन श्रम
ओम स्वरु गम च़ली हो।।
सम अमर्यत च्यथ प्रावख शम
ह्रद कमलिय फ्वली हो
ज़ीवन मुक्त बनिथ रम।। 1
सू सू रठ त्राऽविथ हम
अद वारऽ पम फ्वली हो
शान्त बनि मन प्राव शम दम।। 2 ओम

ज्ञान प्राव जुवऽ व्राव वहम
अज्ञान दोद बली हो
व्यचार चिय छुख ब्रह्म। 3 ओम
बोज़न तस यियी नऽ च़म
अध्यास वीर ठली हो
ज्ञान नार सीऽत्य दियस जम जम।। 4 ओम
मशराव गुत्र वरणाश्रम
च्वन सम दृष्टि नली हो
आनन्द अमर्यत ज़म ज़म।। 5 ओम
दिहि सान ज़ानि ज़गत भ्रम
मुह ज़ाल अदऽ नऽ वली हो
करख क्या क्रिया क्रम।। 6 ओम
कासि यम व्रास च्योन प्रेयम
सोरूय पान म्वकली हो
च्याञि प्रेयम पथ हेयम यम।। 7 ओम
लागन नऽ छिय अऽस्य अम दम
गूव्यव्द क्याज़ि ड़ली हो
पान प्यव च़्यतस च्वलिुय गम।। 8 ओम

शीत पीत

शीत पीत शिनि तीत जय जय जय
च़्यथ चे़ननय ब्ययि ब्ययि भविनय।।
यति तति गूवयन्द चऽ तऽ नय बुय
च़्यि गाऽब चिय न्वन बऽ भ्युऽन च़्य नय।।
ननिये बनिये क्षणऽ क्षणऽ ज़य
ब्ययि ब्ययि गाऽब नय ह्यतऽ चिय पय।।

लोल आमो

लोल आमो म्यानि सालि ग्रामो लों
दितऽ दर्शुन हा न्यष्कामों लों।।
सत्वरऽ गोर म्याने शिव बरत लालय
दयालय तम्मना म्य द्रामो लो।।
च्योनुय गीत ग्यवहा रात्रद्यन
हे भगवन शेहर तऽ गामो लो।।
च्यान्यन पादन साधन बऽ पाऽरी
दम दम दन्ड़वथ करऽ प्रणामो लो।।
सतकुय म्यति हृदयस भरतम नूर
पूर अनुग्रह म्य करतम रामो लो ।।
शिव टोठ्यव हृदसय रऽव उदय गव
आलव म्यति तोरय आमो लो।।
सत् शब्दिय बोज़ नाव रात्रद्यन
छ्यन तथ नय छुय सुब्ह शामो लो।।
च्योनुय नाव लल–नोव रात्र द्यन
छोह मडिर च्य सीऽत्य अनामो लो।।
गूव्यन्दस अथऽ रूऽट क्वर सत्वरऽव
तार ल्वगुस तऽ आस आरामो लो।।

–ॐ–

भजन

ओं

"श्री गणपतो च्य जय जय कार "

दयायि चयाञि म्वकल्यव अतगतो
श्री गणपतो च्य जय जयकार ।।

१. बोज़ श्री सरस्वती वनन छ्यतो
सारि कुय आधार मूलाधार
स्यद्धि दाता मूक्ष्य दिववुन च्यतो।। श्री

२. च्यथ तोन्दरस ओस भ्रम कुय ज़्यतो
भाल चन्द्र होन्दरो वोत यक्बार
ज्ञान विज्ञान पाद सीव च्याऽञ्य ब्तो।। श्री

३. अभिनाश चीतन सऽक्षी चऽतो
असंग कृष्ण प्यंगाक्ष्य द्राख चिय सार
निद्वन्र्द अभय च्येय पत मतो।। श्री

४. मूशक वाहन वक्रटन्डतो
बड़ि बल सस्ति भविनय नमस्कार
ईकदन्त पापन कोरुथ म्य द्वोत द्वोतो।। श्री

५. श्री स्वयं प्रकाश सथ च्यतो
स्वख रूप निर्मल न्यर्विकार
न्यति मुक्त च्येय पथ कर ब् गतो।। श्री

६. पान दयस पुशरून छु चिय बिय नतो
सुय स्वर यी धारणाये धार
परम आनन्द अमृत ह्याथ च्यतो । श्री

७. विनायक फेरऽ च्यय पत पतो
राग दीश राक्षसन क्वरथ सम्हार

ईश गौरी हिन्द टाठि गणपतो।। श्री

8. चिकचाव अपज़िस भर म् लाय लतो
युन गछुन ज़्योन मरुन भ्रम छु सम्सार
आदि दीव आत्मा सार छुय पतो। श्री

9. ज़ान सुय भाऽय बन्ध मऽज्य तय प्यतो
वुऽल्लभा सीऽत्य ह्यथ विघन्हर्तार।
स्यद्धि दाता तस्य स्यद्धत ह्यतो।। श्री

10. दीश काल रोस्त छुखना च़ हतो
पूर्ण ज्ञान सोदुर अपार
ज़ान पान यी मान गूव्यदंतो।। श्री

धन दौलत की भेंट

1. धन दौलन की भेंट न चाहूँ मन की भेंट चढ़ाव
जो कोई अपने मन को देवे उसे मोहे बतलाव।।
2. धन तन दिया तो दिया नही कुछ, इनसे काम न मेरा।
जो मन सिर चरण कमल में लाये, वह सच्चा है चेहरा।
3. धन नहीं दो तुम तन नहीं दो तुम, निज मन चरण में लाना।
वह सब से प्यारा है मुझको, सब में चत्तुर सयाना।।
4. उसके मन में रहता हूँ मैं, वह मेरा आरथाना।
स्वर्ग लोक वैकुण्ठ लोक में, मेरा नहीं ठिकाना।
5. राधा स्वामी सतगुरु पूरे, प्रेम का पन्थ चलाया।
और जतन को मिथ्या जाना, प्रेम को सार बताया।

''गोल्यो मुह अज्ञान''

1. गोल्यो मुह अज्ञान फोलऽयो हृदय।
ब्यलयो फ्रट् फ्रट् गोव्यन्दो हो।।
2. दोशवय छि घरऽदय दरऽदय वोनमय।
गाश तय गट गोव्यन्दो हो।।

3. यम्य ज़ोन सोरुय पान् ह्यथ शिविय।
सुय गव वटि गोव्यन्दो हो।।
4. परमान् पननुय सुय करि सऽरय
प्वखऽतय वटऽ गोव्यन्दो हो।।
5. शाहन ह्यतबा तूल्य तूल्यी।
म्वखऽतय रट् गोव्यन्दो हो।।
6. कन थाव शब्दस मन त् प्राणय।
रठ ईक वट् गूव्यन्दो हो।।
7. भखत्यव पानसिय दित्य प्रणाम।
गछ़मो ख्वटि गूव्यन्दो हो।।
8. करान क्रावान सुय छु पानय।
च़्ये न् केहँ रट् गूव्यन्दो हो।।
9. गऽफिल तिम ग्वर रऽस्य यिम आसन।
वऽनन छिय कऽट् गूव्यन्दो हो।।
10. सऽरि सोबूत यलि अथि इयियि।
तेलि तुल् त वोट् गूव्यन्दो हो।।

''दोर कुन्न''

1. दोरकुन्न छ़ोर कुन्न व्यच़ोर कुन।
कुन द्राव रोवुय दोगऽन्यार हो।
2. और कुन्न योर कुन्न वुछ चौपोर कुन।
द्वन कुन्न कऽरून पानन्यार हो।
3. सन्तव्य पानिय तोर कुन,
यति शिन्याह सीवाकार हो।
4. जान कर ध्यानिय छुय कोर कुन्न,
द्वंन कुन्न करुन पानन्यार हो।
5. स्वपनस जाग्रत जाग्रच़ स्वपुनुय,
मँज स्वशफतीयि हुशियार हो।
6. त्रेशिवन्य अवस्तायन कर कुन्न,
थलि थलि गूव्यन्दऽ च्योनिय प्योर हो।।

''बेहोशी मॅंज़''

1. बेहोशी मॅंज़ होश आसुन, होश बे होशी बनुन,
छवप कथि मंज़ मंज़ कथनऽय, गछि खामोशी बनुन।
2. स्वपनस जाग्रत करुनुय ज़ाग्रच मंज़ वुछ स्वपुन
स्वपुन ज़ाग्रथ कुन्य बनुन, अथ्य हालुच मॅंज़ श्रपुन।
3. गुज़रावि दम अथ यादस मॅंज, युस सु गुज़रावि दोहत राथ।
ग्वर वनान गछियो निवृत, गूव्यन्दो कथि च् वात।

''म्यानि जुवो परम शिवो''

म्यानि जुवो परम शिवो, सथ च्यथ आनन्द गणो
1. दीशतऽ काल रऽसत्यो, रस पूर्ण शूभि सऽसित्यो
दर्शुन दित असित्यो। सथ च्येथ।।
2. ही सदा शिव लगय, विज्ञन्यान रव लगय,
च्याऽन्य गीथ ग्यव लगय।। सथ०
3. थलि थलि छुख च् दय, अस्ति भाति प्रेयि रूपय
जय भविनय जय जय जय, सथ०।।
4. आश्चर छुख च आश्चर अवाँग मनस अगूचर
कीऽत्य गयि ह्यथ शर, सथ०।।
5. वीद त् उपनिषदय, ललवान च्य न्यति शोद्धय
वन्दयो च्यथ रुद्धय, सथ०।।
6. ही शिव च्यानि सीऽत्य आय, अकि आनन्द वुन्दय
मंगलिय छि ब्रह्माण्डय, सथ ०।।
7. प्रज़लान छुख च सोन्दर, हृदय गुऽफायि अन्दर
परमात्मा च ईश्वर, सथ०।।
8. इन्द्रय पोश लागय, होश दिम च्येय ब ज़ागय
बोज़तम बड़ि आगय, सथ०।।
9. चिय वुछनाव म्य चिय, चिय च्वपाऽर्य, रोस् न च्येय बुऽय
भास्तम कास्तम दुय। सथ०।।
10. सरस्वती शरमन्दय, च्येय ग्यवान गोविन्दय
तीथ च द्वन्दा द्वन्दय, सथ०।।

''हर मोख''

1. हर मोख वन्य दिमयो = शूभिदार वन्य दिमयो।
2. हर मोख वन्य दिमयो = हरद्वारऽ वन्य दिमयो।
3. टऽठिस भगवानसिय = सर्वशक्तिमानसिय
4. पननिस पानसिय = पननि यार वन्य दिमयो।
5. नाभि मँज़ छऽरिथय = हृदयस खऽरिथय।
6. त्रिकूटी दऽरिथय = ओंकार वन्य दिमयो।

नाद मँज़ ब्यन्द द्राव

1. नाद मँज़ ब्यन्द द्राव, ब्यन्द मँज़ नाद।
   ज़ानि सन्त तय साध गूब्यन्दो।।
2. वुज़ि गाश वज़ि नाद दज़ि प्रमाद।
   प्रथ विज़ि दिज़ि दाद गोविन्दो।
3. साधस स्वाद यिये दिये समाध।
   ज़ानि सन्त तय साध गूब्यन्दो।

''तन फिदा मन फिदा''

1. तन फिदा मन फिदा प्राण फिदा,
   हा जुव करतस जान फिदा।।
2. धन दौलत सम्पत्ति गाट जार।
   सर फिदा करतस पान फिदा।।
3. स्थूल सूक्ष्म कारण अभिमान।
   कर्म धर्म त् यूग ज्ञान फिदा।
4. दीवी गणेश यम् त् विष्णु ब्रह्मा
   तस छु सिर्य माहिताबान फिदा।
5. ऋषि मुनि योगी सन्त त साध
   अवतार ताऽरी विद्वान फिदा।
6. सत शास्त्र वेद उपनिषद,
   शेषनाग छु ग्यवान फिदा।

7. वर्ण आश्रम कुल त गुतरूय।
   गछ त् बा अम्य यम्य सान फिदा।।
8. काम क्रूध लूभ मुह मद अहंकार।
   करतऽ जुव दिह अभिमान फिदा।।
9. गूव्यवन्द च्योन जुव छुय शिविय।
   तस छुय जमीन असमान फिदा।।

''पनुनय जुव वुछुम चोपऽरि
यिथ पऽठय पोशस मन्ज़ सुगन्ध बसिथ
आकाश वत् अलीफ यारो
साऽरिसिय मन्ज़ आऽस्थिय अन्द बसिथ''

''सन्थन हिऽन्दी''

1. सन्थन हिऽन्दी चरण कमल।
   हृदयस दरत् बा गोविन्दो।।
2. सन्तन हिऽन्दी चरण सीव बा।
   दर्शुन करतबा गोव्यन्दो।
3. सन्तन सीऽत्यी नेरतबा फेरतबा।
   राथ दोह भरतऽ बा गोव्यन्दो।।
4. ग्वर रूप न्यथ ईश्वर माऽनिथ
   आत्मा स्वरत् बा गोव्यन्दो।।
5. सन्तन हुन्दुय महिमा ग्यवत बा
   प्रथ जायि तर त् बा गोव्यन्दो।।
6. सन्तन हिन्दनिय चरणार ब्यंदनिय
   पानिय पुशर त बा गोव्यन्दो।।
7. सम्सार सोरूय हा फनाई।
   साधन मतऽ मऽशरत बा गोव्यन्दो।।
8. सन्तन हिऽन्ज़े नावि मँज बिहथिय।
   भवसर तर त बा गोव्यन्दो।।

''म्ये चान्ये लोल''

1. म्ये च्याने लोल् सपजम तार् रगऽनिय
   वज़न छुम कथ बऽकार सेतार वोन्य छुम।।
2. अमीय न्युव मन खिचिथ वाह वाह वज़न छुम
   छुनय कॉह साज़ युथ मज़दार छोन्य छुम।।
3. कोरूम दर्शुन म्य हर्षुनिय अम्युक छुम।
   वज़न वोन्य राथ त् दोह ओमकार धुन छुम।।
4. सु सथ शब्दस च्य सथग्वर बोज़नऽविथ।
   कोरमुत कुस म्य युथ अपार पुऽण्य छुम।।
5. लगय सथग्वर पादन वन्दयो जुव।
   करून म्य पादनिऽय च्य वार मुऽन्य छुम।।

''वह यार देता है''

1. वह यार देता है आवाज़, तेरा दिल क्यों हुआ फौलाद।
   वह करता रात–दिन फरियाद, सुनो भजता है अनहद नाद।।
2. कोई साँस खाली मत कर, जपो ओमकार निरन्तर
   बने चित्त शुद्ध व ईकाग्र, मिटे यम थर सिद्ध हो समाध
3. कमर बान्दो हिम्मत के साथ, सतग्वरु के मोहब्बत से।
   सोहबत से फकीरों के, जलेंगे, सब तुझे अपराध।।
4. धरो आसन करो शुद्ध मन, भरो प्रेयम से मन प्यारो
   सुमरो ईश्वर को रात दिन, करो मालिक को तुम याद।।
5. लगाकर तीन बन्द अन्दर, मोधुर मुर्ली मनोहर।
   हटेगा डर बने मन स्थिर, त्रिकुटी पर से सुन–फरियाद
6. तमाशा देखकर नज़ारा, अजायब घर तेरे अन्दर,
   मन्दिर शिव का बड़ा सुन्दर, वह शिव शंकर है अगाध।।
7. पुकारता है तुझे वह यार, अरे ग़ाफिल हो होशियार।
   गिरफ्तार किस लिये तुम हो, पढ़ो सरकार का ईरशाद,
8. पकड कर दम ब दम दमको, ओ३म या सूहम हम सू।
   जपो गम मन के सब एक दम, मिटेंगे फिर रहे दिल शाद।।

9. गोविन्द भ्रम जाल को तोड, सकल सन्कल्प मन से छोड।
परमात्मा से मन को जोड, अगर बनना तुझे आज़ाद।

''विध्न हरण सथग्वरन''

विघ्न हरन सथग्वरन, शिव शक्तिये गछ़ शरण।

1. हाऽरी त्रिपोर सोन्दरी, लागय पोश गोन्दरी
लोल चोनुय छु तारन, शिव शक्रि०।।
2. वर वुऽन्य म्य कृपा कर, ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर,
चोनुय ध्यान छि धारण, शिवउ ०।।
3. अन्तर्यामी च़ऽय छुख, सर्व शक्तिमान अथ मैंज़ न शख,
आनन्दगण परिपूर्ण, शिव०।।
4. सथ च्यथ आनन्द अमर, अज़र च़ऽय च्यनमात्र
च्याञि ध्यान् पाप–शाप हरण, शिव ०।।
5. वीदन ति वऽछमिऽच्य अति थर, अवाँग मनस अगूच़र,
कीर्ति चाऽन्य छि क्या करन, शिव०।।
6. सथज़न साध ख्यथ गयि शर, फोरन, केंह न छुख च़ आश्चर,
ज़ऽनिथ रिन्द ज़िन्द मरण, शिव०।।
7. ज़ानि पान् सान् चऽय सोरूय, कँऽसि सऽत्य थ्विन वऽरय,
तस्य छय दीवी वरण, शिव०।।
8. आदि शक्ति हँज्ज़ऽय भखती, दिवन हो छय मुखती,
सीव तिहन्दी च़ चरण, शि०।।
9. छुख च़ऽय सोनुय आत्मा, भविनय च्ये नमो नमः
गोविन्द पान् करू स्मरण, शिव०।।

'ही जटादार''

ही जटादार अख कटाक्षा, करऽत वरऽत कम गछि च्ये क्या।

1. भखति वत्सल कृपा निधान, कल्याण ज्ञान सुदऽरय।
सर्वशक्तिमान छुम तम्माह, करऽत०।।
2. आश्चर अजर अमर, ईश्वर जरःजरः सोन
यीतनय आर शंकरः कर कृपा। करऽत०।।

3. अन्तर्यामी च भगवान। हान चऽजि ज़ान गयि च्येऽन्य,
द्राम अरमान सोन च आत्मा। करऽत०।।
4. सतचित आनन्द सदाशिव, रिऽवऽ क्याज़ि च्ययहुयव न काँह
सीव पाद च्येन्य च्ये नमो नमः । करऽत०।।
5. अमरीश्वर अथि च्य वर अभय, जय जय जय भविनय
पापन क्षय बनि कर क्षमा। करऽत०।।
6. गंगा ज्यटि वासुक हटि, मटि मटि दित् हतो।
मटि सोन चे बोर करतऽ दया। करऽत०।।
7. गोविन्द गच्छ ति च ति अपर्ण, शिवस व्यन केंह म ज़ान।
दुय त्राऽविथ सुय चिऽय अमा। करऽत ०।।

''दम कुय हमस''

1. दमकुय हमस छु बोलान, सूहम सूहम सू
हमस नादस कन थाऽविथ, बोज़ ओम शिव शम्भू।।
2. रोज़ बोज़ जुव सोज़ सानिय, सोज़ ख्याल ब्रोन्ठ ब्रोन्ठ
दून्च्य त्रऽविथ छिऽनिज़ि हतो, कऽरिज़ि अछकन बन्द चोंठ
वऽतिथ पूज़ा करतो, मन्ज़ गोफि युस प्रभू। हमस०।।
3. छ्रठ त्राव मन जठ पठ रठ, प्राण अपान मिलनाव
सहस्रऽ दलस मन्ज़ केंचन द्वोहन करुन ठहराव।
ओ३म शब्दस कन दारून तारून यि पानिय छु हो।।
4. मन्ज़ खराब वथ छि यते, पकिज़ि तते चऽ सूँचिथ।
स्वरऽ रूज़िथ स्वरऽ बूज़िथ वुछमऽ ओर योर गछि च्यत्।।
दिथ कदम ब्रोन्ठ पवन दवन वज़न हू हू।।
5. अमृत च्वन शशिकले, बनुन पज़ि न्यशकल,
शिन्य मन्ज़य हिन्य बूज़िथ, शिन्य प्यठ पख जल जल,
च्येय हो म्युल गछि शिवस सीऽत्य, ना रहना हम या तू। हमस०।
6. तीज़ वुच्छिथ यिन् त्रहरख, त्राव फ्रेख परव ब्रोठंकुन
क्रख प्रणविऽचि नऽन्य क्याह वनय, यि वुछख गछिति व्यपुन
सथ छु सोरूय सन्त शास्त्र, यी छि वनान हू ब हू। हम स०।।

7. शिव शक्ति कुन च्ये बने, कुस वन्ये यूत न्वन,
सथ ग्वरन हिऽन्ज़ छय कृपा, ह्योत प्रेयमऽ अमृत च्वन,
शिव सोरुय ब्योन केंह नो, शिवस व्यन छु कुसू। हम स०।।

8. ईश्वर ग्वर कृपा यस, तस यि अथि आव सोरूय,
पुशऽराऽविथ पान दयस, गूव्यन्द च्याऽञ्य नाविय।
यिथऽ तिथऽ तरि भवऽसरसिय कासी ऐऽब कभू।।

''आसन दाऽरिथ''

आसन दाऽरिथ वासन दूर कर निशि मनय।
श्वासन शनै शनै खार सूहम सू स्वर।।

1. न्यथ प्रभातस वऽथिज़ि टाठ्यया कन थव वनय।
पाद अथ बुथ छल कल त्राऽविथ छिऽन ज़िन्दय मर।।
न्यशकल बन पानस व्यन मो ज़ान अख कनय, शवासन०।।

2. वीद गीथ ग्यवान चऽन्यी च पूर्ण आनन्द गणय,
स्वप्रकाशीय छुख चिऽय आश्चर अज़र अमरय,
च्यन मात्र सदाशिव रूप च् बोज़ मनि कनय श्वासन ०।।

3. सथ च्यथ आनन्द कन्द वाऽतिथ च् पन् पनय,
विज्ञन्यान सागर बन्द मुक्ती पर दिगम्बरय,
अगूचर न्यर्विकार काँह भीद च्य न मे नय, श्वासन०।।

4. शख त्राव लूख वन्यतन ति क्या आख ह्यनय।
न्यलीफ च न्यर्मल ज़ीव भाव छल त्राव यम सऽँज थऽरय।
स्वरतो पानय ब्रह्म अभ्यास कर क्षन क्षनय। श्वासन०।।

5. समशय च़लराव क्या छु प्रावुन गछ़िथ त् वनय,
अस्ति भाति प्रेयरूप पानिय वुछ छुय च्योन, ज़र ज़रय।
गथ क्या छि प्रावन्य कथ प्यठ बो सऽनियाऽस्य बनय श्वासन०।।

6. दोहय अभीद अस्य छि कथ गछ़वो छ्यनय,
ख्वश रोज़ सोरूय गूव्यन्दय अन्दर त् न्यबरय,
वन्य वन्य थऽकरोवथस छुखना मन्दछनय। श्वासन०।।

''है मोहब्बत''

1. है मोहब्बत हम को उस माँ बाप से।
   सत्गुरु ने ही बचाया शाप से।।
2. चाहिए कहना वह जो खुद है किया।
   फायदा क्या है अनाप शनाप से।।
3. तीसरे तिल से शुरू कर दो अभ्यास।
   क्या कहूँ प्रगटे तुझे सब आप से।।
4. खूब मज़ा आवे जब शुद्ध होवे मन।
   दिल लगाना है अजपा जाप से।।
5. जो सूरत की धार ऊपर फेर दे।
   सुख को पावे शब्द के मिलाप से।।
6. जिसने मन को जीत कर जाना है आप,
   वही बचता देख तीनों ताप से।।
7. आदि से है गुरु दयाल की दया मुझे,
   हो गया गोविन्द का मन शुद्ध पाप से।।

——oo——

परदह तुलथिऽय वुच्छतन सु दर्दय,
मर्द मर्दय मरदानतये।
गाश परदय ग्वट हो परदय, आकाशी मोट हो परदय
गोट होठ फोट चोट परदह परदय,
मर्द मर्दय मरदानत्ये

''गुरु दयाल की दया''

गुरु दयाल की दया, अन्तर कपाट खुल गया।

1. बजता सुनो नकारा है, अब खूब ही उजियारा है।
   दूर हुआ अन्धेरा है, देखो जिसे हो देखना। अनतर ०।।
2. छलाँग मार कर चढे, गगन के ऊपर चले खडे।
   सतगुरु शरण तहाँ पडे, देखो जिस हो देखना। अन्तर ०।।

3. झट–पट प्रकट हुए वह नाथ, कहने लगे चलो जी साथ,
आगे चले पकड के हाथ, सतधाम में पहुँचा दिया। अन्तर०।।
4. ज्योति प्रकाश है अखण्ड, ब्रह्माण्ड पिण्ड में प्रचण्ड।
उसका ही है सब यह घमण्ड, मन का जी वाह चला चला। अन्तर०।।
5. ओम शब्द प्रकट हुआ सब बन्द किये चशमो गोशो व लभ।
रब ने रचाया बीच नभ अजब तमाशा हो रहा।। अन्तर०।।
6. सुन सुन के शब्द धार को जाना है सारे सार को
जाकर गुरु दरबार को उसने दिया हमने लिया। अन्तर०।।
7. चीज क्या अमीरी है बेहतर मुझे फकीरी है।
अजब रोशन ज़मीरी है मेरी भी थी यही इच्छा।। अन्तर०।।
8. गिरामी है अनामी है, अन्तरयामी है निष्कामी है।
पूरण दयाल स्वामी है सदा भये नमो नमः। अन्तर०।।
9. बाहिर का बन्द किया जो पट झपट के चला कपट।
देखा तुझे घट–घट प्रकट झट पट संकट मेरा कट।।
10. कृपासिन्धू तू गुरु कृपा करो मुझे प्रभु।
सदा अखण्ड श्री शम्भू गोविन्द शरण तेरे पडा। अन्तर०।।

''कीऽत्य आलम''

1. कीऽत्य आलम वुछ म्य यारो आलमन मँज़ आलमी
दिहसिय मन्ज़दिह काऽत्या, यिम छि च्यऽनी विह हतो।
2. ज़ाग्रत ज़्येन स्वप्न ज़्येन सुषुति ज़्येन बा जुवो।
चिऽय ज़्येन तुरयातीत कऽथय करनेय क्या जुवो।।
3. अंह त्रऽविथ वहम गाऽलिथ ब्रह्म याने चिऽय पतो।
गोविन्द कौल च्यानि लोल् मारण छुसय शोल् भो।।

कऽरि कऽरि तदबीर

कऽरि कऽरि तदबीर हा हऽव्य हऽवी।
भऽवी न फेरान ज़ाँह जुवो।

1. कलस कनि ति छऽव्य छऽव्यी
फेरान न अख फुर्का जुवो।।

क्याह गोय च्ये सोरुय यि हऽव्य हऽवी।। भऽवी

2. *नल, राम, युधिष्ठर फिरनऽवी,*
   दीश, दीश, गदाये जुवो,
   पाण्डव ति केंह दोह छ्यपि दिवऽनावी
   भाऽवी नऽ फेरान ज़ांह जुवो।।

--oo--

गोविन्दऽ छुय हो

1. गोविन्दऽ छुय हो सु च्योन जुवुय।।
   परम शिवय वनुख यस ।।
2. स्वप्न मँज़ ति यिनि भीद बुऽद्ध वुऽपदी ।
   भीद न जाऽनिजि पानस त तस।।

पान सोन

पान सोन् सोरुय गोविन्द छुय हा गोविन्दो।
छारण यस राथ ध्यन चिऽ सुय हा गोविन्दो
शब्द सवारि चिय सपद्योख कोरुथ गगनस सऽल।।

सू सू वज़ान चोपऽरी हिवुय हा गोविन्दो।।
सथ ग्वरऽविय कथ् च्ये भऽविय वथ हा हवऽय याम।
यखदमिय वुच्छति राऽविय दुय हा गोविन्दो।।

●

लगयो पादन पाऽरि

1. लगयो पादन पाऽरि पाऽरी।
   सथग्वरू धन्य धन्य राधा स्वामी।
2. बूज़िम मुरली बाज्य बीनय
   वज़न धन्य धन्य राधा स्वामी।
3. शुन्यके अस्थानय खरिथिय
   छन छन छन छन राधास्वामी।
4. ओम ओम रग् रग् बोलन पानय,

राथ दोह वऽन्य व्न्य राधा स्वामी।

5. पादन साधन चिऽय हय ज़ाऽनिथ,
कोरमख म्ये मुऽन्य राधा स्वामी।

6. कोसुय भव भय भ्रम सोरूय,
पाप तय पोन्य पोन्य राधा स्वामी।

7. गोविन्द आमुत शरणे च्येय छुय
सतग्वरु धन्य धन्य राधा स्वामी।।

''सीऽत्य स्मरणस''

सीऽत्य स्मरणस सथग्वर ध्यानस भजनस सीऽत्यी रोज।
भजनस सीऽत्यी रोज़ जुवो मन प्राणिय कर लीन।।

मन प्राण कर लीन जुवो, बोजुन सुऽन्दर बीन।
बोजुन सोन्दर बीन जुवों वुछतन स्वप्रकाश।।

वुछतन स्वप्रकाश जुवो, युस छुय गाशुक गाश।
युस छुय गाशुक गाश जुवो, सत्वरसिय सीऽत्य मेल।।

सत्वरसिय सीऽत्य मेल जुवो, सत् शब्दस सीऽत्य खेल।।
राथ शब्दस खेल जुवो, ऋषियव मुनियव बूज़।

ऋषियव मुनियव बूज़ जुवो, गूव्यन्दह च़ऽति बोज़।
सीऽत्य स्मरणस सथग्वर ध्यानस भजनस सीऽत्यी रोज़।।

गरि गरि स्वर

गरि गरि स्वर दयि सुन्द नाव।
ललनाव लोलय नाव।।

ललनाव लोलय नाव जुवो, दयिसिय पान पुशराव ।
दयिसिय पान पुशराव जुवो, दिह सम्सार मशिराव।।

दिह सम्सार मशिराव जुवो, परम आनन्दय प्राव।
परम आनन्दय प्राव जुवों, सथ शब्दस कन थाव।।

सथ शब्दस कन थाव जुवो, गूव्यन्द बऽडराव भाव।
गरि गरि स्वर दयि सुन्द नाव, ललनाव लोलय नाव।।

मन्ज़ लालन लालि लाल हो।
अज़ मन्ये दर्शुन दितम।
जय दया करऽव्न्य दयाल हो
अज़ मन्ये दर्शुन दितम।

''सान्य ज़ोर''

सानि ज़ोर क्या बनि तोरक्यन ज़ोरन
यी सथगोर्न भोवुय म्य।।

1. होश कर दमसिय मिलविथ खोरन
   हर दम सू सू च्योवुय म्ये
   भक्ति बड़ि बोज़ भा वक्तन च़ोरन, यी ०।।
2. ऊं शब्दस क्यथ गगनस दोरन,
   हमसन सीऽत्य उडव त्रोवुय म्य
   तूर्य सू खिचान योर छुन छोरन, यी ०।।
3. सुय वुछ बसिथ सतविन्य पोरन,
   शिन्या गऽछिथ शिन्य छोवुय म्य
   तथ जायि ज़्यव नय वुठ छिन फोरन, यी ०।।
4. दामऽसु दरियाव च्यतभा फोरन,
   सु च्यनऽ दोगन्यार रोवुय म्ये,
   सू कुन मन्त्र छुय करोरन।। यी०।।
5. रेह गँज्येयम पननी शोरण,
   लोल् नार सीनय ज़ाज्योवुय म्य,
   यूत कऽरिथ तोति मन छुन मोरन, यी ०।।
6. पतवथ गूव्यन्द अनज़ान दोरन,
   दयसिऽय पान पुशरोवुय म्ये,
   युस यस दार्न सुय तस छु होरन ०।।

''शान्त शीतल ज्ञान सऽत्यी''

1. शाँत शीतल ज्ञान सीऽत्यी असविन्य गूव्यन्दो।
   तिम साध छिय दोहय लसऽविऽन्य गूव्यन्दो।
2. नील नभ चन्दरय शोलान छि सोन्दरय।
   रवत यूग्यन्दरय खसवुन्य छि गोव्यन्दो।।
3. सायस तल छि लालस सथगोर दयालस।
   छिन मायायि कालस फसवुन्य गोव्यन्दो।।
4. वति ज़ान पोशड़लसिय फ्वलिमिऽत्य छि कमलिय।
   सोन्दर तीज़ जलस्य बसऽ विऽन्य गोव्यन्दो।।

''सूरत शब्द अभ्यास''

परम कल्यानस दिववुन छुयो, सूरत शब्द अभ्यास
सत ज्ञानस दिववुन छुयो, ...
निर्वाणस दिववुन छुयो .....
भव सोदरूक जहाज़ छुयो, ...
येगियन होन्द राज़ छुयो, ...
सत लूकुक दरवाज़ छुयो .....
करवुन रूहस ताज़ छुयो .....
आसान छुयो सहल छुयो .....
करवुन च्यतस निर्मल छुये
न्यश्कल छुयो मगँल छुयो, ...
करि युस तसुन्द जीवन सफल छुयो .....
उत्तम निर्विघ्न छियो .....
अथ नाव अनमोल रत्न छियो .....
पापन ज़ालवुन अग्न छुयो, ...

करवुन मनस मगन छुयो,
सार छुयो तार छुयो, ...
महिमा तम्युक अपार छुयो .....
सथ ज्ञानुक भण्डार छुयो .....
गूव्यन्द चोनुय यार छुयो .....

च़्यति व्री सीऽत्य शक्तिपात''

1. च़्यति व्री सीऽत्य शक्ति पातय
   दयी छु दातय सोन्दरो।।
2. तस रोस म थव कंऽसि हन्ज़ आश,
   ईश्वर छु दातय सोन्दरो।।
3. च़्यति अनीगटि मँज़ गाश, दयी छु दातय सोन्दरो।
4. सुय स्वरिज़्यन प्रथ प्रभातय, दयी ०।।
5. शर छुय च़्यति ब् कर वात,दयी छु ०।।
6. श्री सथग्वर है पारिज़ात, दयी छु ०।।

——oo——oo——

सु लाल ल्वभमो बुम्मि बाल़ फन्डिथ।
छऽन्डिथ सतगोर म्ये ल्वल्ये मँज़।।
सन्थन हिऽन्ज़ छम तनाब गऽँडिथ।
मुखर्य मण्डिस मेय कोल्य मँज।।
यीरि तेय वसि बोठ खारि पण्डित।
छ़ण्डिथ सतगोर म्ये ल्वल्ये मँज़।।

''दिल फिदा जुव फिदा''

दिल फिदा जुव फिदा सर फिदा,
कर फिदा तस जानान सिय।।
यज़ छुख आशख तिहुन्दुय च्ये लोल।
ज़र ज़र् फिदा कर भगवानसिय।।
श्याम सोन्दर वुछभा सुब् शामय।।
सर फ़िदा पननिस पानसिय।।

''च़ऽय आऽसिख''

चि़य आऽसिख तय चि़ऽय आसख छख
ओं नमों भगवती सरस्वती
राथ च़्यथ आनन्द चि़य प्रत्यक्ष छख।। ओं

1. ऊज छख तीज़छख तीजुक तीज़ छख,
सोरूय सार च़ऽय आलम चि़य छख,
सारिनिय ब्योन छख च़ऽय कुनी अख छख। ओं
2. च़ऽय स्वतः स्यद छख बऽड छख शोद्ध छख,
सऽरिसय मँज़ च़ऽय अनहद छख,
च़ऽय अज़पा ज़प छख अलोक्यख छख।। ओं
3. सथ छख च़्यथ छख न्यथ छख त्वथ छख,
च़ऽय पऽतिम ब्रूँठिम कथ छख,
चऽय रहमथ छख चि़ऽय अमृत छख।। ओं
4. निर्मल छख न्यशकल छख न्यशच़ल छख,
च़ऽय केवल चि़य मँगल छख,
भक्त वत्सल त् भखत् सहायक छख।। ओं
5. चि़य श्री छख चि़ऽय आदि शक्ति छख,

भगत भगवथ भक्ति छख,
मुक्ति छख मुक्तिदायक छख।। ओं

6. निर्भय छख चिऽय निर्विकार चिय छख,
निर्द्वन्द निरादार चिय छख,
उोंकार छख ओकार चम्क छख।। ओं

7. पराशक्ति छख मध्यमा चिय छख,
वैखरी छख त् शारिका छख,
चिऽय राज्ञन्या मऽज्य भक्ति रक्षख छख।। ओं

8. सारिन्य हिऽन्ज़ चिऽय आत्मा छख,
चिऽय वैशनवी शिव त् ब्रह्मा छख,
ओमा छख माता दीव आदयक छख।। ओं

9. हमसासन छख टाऽठ्य वासन छख,
दर्शन संकट कासन छख,
मनि भासन छख रछविऽन्य सीवक छख।। ओं

10. चिय स्यद्ध लक्ष्मी नारायण छख,
आनन्द धन परिपूर्ण छख,
च्यथ बुऽद्ध मन सारिचिय प्रेरक छख।। ओं

11. सर्व आत्मा चऽय परमात्मा छख,
धर्म पनन्ये धर्मात्मा छख,
सदा छख चऽय सर्व व्यापक छख।। ओं

12. सथ धाम छख चऽय अनाम छख,
सान्यि हृदयुक आराम छख,
सथ नाम छख सथ शब्दचि क्रख छख।। ओं

13. चऽय राज़ यूगी चऽय पूरक छख,
चऽय प्राणयाम तीज़ ग्रख छख,

व़ऽय रीचक छख चऽय कुम्भक छख।। ओं

14. म्वखस प्यठ चि़ऽय मंज़ वोन्दस छख,
थावान मँज़ आनन्दस छख,
गोविन्दस चि़य करिथ ऽख छख।। ओं

15. चि़ऽय अनहदनाद छख ग्वर प्रसाद छख
चि़ऽय सन्त सथज़न चि़ऽय साध छख,
अगम अगाध छख चि़ऽय अलख छख।। ओं

''यूगियव उपनिषद ग्योव''

यूगियव उपनिषद् ग्योव नाद ब्यन्द।
ध्यानसय मँज़ रूज़िथऽय बोज़ सोन्दरो।

1. *न्यबर अन्दर त्रऽविथय बोज़न सु छन्द*
पानसिय मँज़ रूज़िथय बोज़ सोन्दरो।।
2. *चऽय ओसुख छुखति आसख अन्द वन्द*
ज्ञानसिय मँज़ रूजिथ बोज़ सोन्दरो।।
3. *सऽरिसय मँज़स चि़ऽय मंज़य च्ये गोविन्द।*
मनस्य मँज़ रूजिथिय बोज़ सोन्दरो।।

अर्पण बन

अर्पण बन मन प्राण सोन्दरो।
स्वर भगवान भगवान सोन्दरो।
सुबहस त् शामस प्रथ प्रभातस।
सुय अमृत च्य अर्घ रातस।
दातस ह्य हरगाह च्य बान सोन्दरो।
स्वर भगवान भगवान सुन्दरो।।

''अस्त उद्धय रोस्त''

1. अस्त उद्धय रोस्त रव हो,
   परम शिव हो टूठ यस,
   ग्वर शब्दय गाश आमो,
   गाश सीऽत्य ह्रदय पवलुम।।
2. अस्त वोदय रोस्त रविय
   परम शिविय जुव छु सोन,
   सोन जुव क्याह सारिनिय हुन्द
   ज़ाह न यि निश्चय ड़ोलुम।।
3. ईक अनीक छुय अनीक,
   ईक ठीक सू पान दय,
   कर त् विवेक वुच्छुत् अलीफ,
   अमिकुय झगडऽय चोलुम।।
4. युन त् गछुन ज़्योन त् मरून,
   भ्रमय ओस् सोरये,
   व्यचारकुय औशुद्धि ख्यथ,
   भव कुय रूगुय बोलुम।।
5. ब्यन्द छु स्यन्धिय स्यन्ध छु ब्यन्दिय,
   हाव भावय रूप त् नाव,
   अन्दः वन्दय गूब्यन्दय
   ब्यन्द स्यन्धसिय रोलुम।।
6. वुछ च्वपऽरी पान पननुय,
   ज्ञान पननुय प्रोव पूर,
   दूर सन्तन मुह त अज्ञान,
   म्यति सुय ह्रदयस गोलुम।।

''शिव छु सोन''

शिव छु सोन जुवतय सुय वुच्छ च्वपऽरी
धारनायि आत्म ध्यान दाऽरि दऽरी

1. दर्शुन दच्युतनय छय शिवरात
भखत्यन हुन्द शिव छुय पारिजात
शक्ति पात कोर्नय पननी प्यऽरी।। धारनायि

2. भक्ति वत्सलन्य न्यर्मलन्य
दया कऽरनय न्यशकलन्य
मंगलनिय दपिथ पननी यऽरी । धरनायि

3. बन्योय च्यति सथगोर प्रसाद
वज़नि ल्वग पानय अनहद नाद
मनि साध मुच़रन ओरय तऽरी।। धारनायि

4. आत्म सोख खोत् बोड् कांह न स्वख,
प्रोवुथ सुय च़्ये सऽरी च़लि दुःऽख,
सन्मुऽख शिव वुछुथ दुःऽख तऽम्य हऽरी।। धारनायि

5. गूव्यन्द शिविय प्रथ तरफ वुछ,
दिह अभिमानिय सोरूय मुछ,
तुच्छ संसार असत सत् व्यच़ाऽरी।। धार॰

''ग्वर शब्दय वुज़ानिय सोन्दरो।''

1. ग्वर शब्दय वज़ानिय सोन्दरो
रान्थन होंन्द सु खज़ानिय सोन्दरो

2. तथ नो छ़्यन छुय रातर दच्यन छुय
वन छुय पान्य ग्रजानिय सोन्दरो।।

3. त्युथ काँह स्वरनय बीन नय सुरनय
शुक्लवर्ण गाश प्रज़लानिय सोन्दरो।।
4. धन्य तस दोस्तस सऽलिकस विश्वासस,
मन्ज़ अम्यासस स्यज़रानिय सोन्दरो ।।
5. विड़िनि वनवन छि बोज़ निवन मन छि बोज़,
ज़न छि बोज़ बिजली दज़ानिय सोन्दरो।।
6. लोल च्यानि वेरि ग्योवमय म्य क्याह सिर।
मा सऽ ज़ानि अनज़ानिय सोन्दरो।।
7. ग्वड गछि बननुय नज़रि सु अननुय,
अद वननुय ति पज़ानिय सोन्दरो।।
8. अन्तर बाहर गोव्यन्द सथग्वर
चिऽ कर लगयो स्वयं ज़ानिय सोन्दरो।।

''ह्रदयस थौ सतुक राग''

1. ह्रदयस थव सतुक राग, त्त्युम कर सोरूय त्याग।
त्थ्य मँज़ बाग ह्य तस जाग, वज़न राग सूहम सू।।
2. थऽविथ पछ़ बरिथ यछ़, अन्दर अछ़ ह्येरि बोनऽ नछ़।
शरण गछ़ त चली कछ़, वुछ रचि रचि सूहम सू।।
3. न कुन द्रास न कुन चास, न जाँह मूदुस न ज़ाँह ज़ास।
च्वल तलवास थौव विश्वास, बोलन श्वास सू हम सू।।
1. गोरय मऽज्य ग्वरय मोल, ग्वरय लोल कास्य होल।
ज़ानन वोल गूव्यन्द कौल, च ते बोल सूहम सू।।

''ह्रदयस मो थव राग द्वेष बोज़

1. ह्रदयस मो थव राग द्वेष बोज़,
ग्वरूनुय हुन्दुय उपदीश बोज़।।

2. न्यन्दुक पनुन जानुन म्यत्र
न्येन्दयुक म् जॉह ज़ानुन शऽत्र।।
3. न्येन्दिकिस वुछिथ ख्वश गछि गछुन,
नेन्दिकिस प्यठ रूत रूत यछुन।।
4. नेन्दिकिस भरून गछि लोल पूर,
तऽम्य सुन्द दुःख जल कर च् दूर,
5. नेन्दिकिस पऽज़ि मन लोल बर,
नेन्दिकिस प्यठ थव रऽच नज़र।।
6. नेन्दिकिस दि आसन आदर,
योरय नमस्कार कर।।
7. न्येंदिकिसुन्दय एहसान छुय,
त्युथ कॉह मेथऽर नऽ मान छुय।।
8. न्येन्दयुक छुय वावथ,
ग्वरनय च्य कऽरनय बावट।।
9. न्येंदयुक पनुन सन्थन न ख्वर,
तिम ति ताऽरिख त् पान ति तऽरि।।
10. योदवय च़ छुख सन्थय पोथुर,
गम्भीर च्यथ बन ज़न स्वदुर।।
11. त्थ्य मॅंज़ भगवथ ख्वश चे़ बोज,
भगवत ध्यानस मंज़ च़ रोज़।।
12. न्येदयुक वुछिथ क्रूध न खसुन,
सन्थन मन रोज़ान प्रसन्न।।
13. सन्थन तवय दय छु वरण,
तिम कँऽसि प्यठ क्रूध नय करन।।
14. गूय्यन्दऽ सन्थन हुन्दय च़ दास,
सन्थन हऽन्दि पऽठय ख्वश च़ आस।।

''ग्वर शब्दस छ्यन छुमा''

ग्वर शब्दस छयन छुमा। हा सोन्दरो वन छुमा।।
बोज़ रातर दयन छुमा। हा सोन्दरो वन छुमा।।
यस वनान नारायण। सथ शास्त्र भगवन।।
आनन्दगण चऽय भ्यन छुमा। हा सोन्दरो०।।
राऽच़ दयनसिय मंज़ वीर, यूग साधान बोज़सीर
कौंह गम्भीर युथ वन छुमा, हा सोन्दरो ०।।...

पाऽन्य पानय लोगयो

1. पाऽन्य पानय लोगयो पान ग्रज़ने,
बोज़ वुज़ने बर् तथ लोल ओं सू।।
2. क्याह मऽधरूय अमृत सोदरूय छुय
प्राणवुय बोज़ प्राणवुय बोल ओं सू।।
3. खसि वसि ह्यस रूज़िथ श्वासन म्येन्य,
च्येन्य उपदीश शाहव तोल ओं सू।।
4. रऽवऽ सऽन्दि ख्वत गाह प्थव गोट् गव दूर,
नूरय नूर बोज़ रऽव ख्वत शुहोल ओं सू।।
5. नाद ब्यन्दस सऽत्यी युस रोज़ी,
सुय बोज़ी गूव्यन्द कौल ओं सू।।

''हृदयस हमसू''

हृदयस हमसू ह्यंयिव ज़ाग
छिः तऽथ्य मन्ज़ भाग सोन्दर दीवी।।

1. ग्वरय चरणन च् न्यत्रिय लाग,
तीरथ तिमनऽय अन्दर दीवी,
ग्वरिय गँगा ग्वरिय प्रयाग, छि ०।।

2. मुर्खन क्युत नावुन माघ,
छऽरी चापुन्य चन्द्रायुन दीवी,
दयस रूऽस कर च् सोरूय त्याग, छि ०।।

3. हृदयस थव सतकुय राग,
तथ अन्दर यूग्यन्ध्र दीवी,
तिम छावान मानसरकुय नाग, छि ०।।

4. वज़न क्या छुय मनोहर राग,
खऽसिथ ब्रह्मरन्ध्र दीवी,
गूव्यन्दो बोज़ च्ये छिय रऽत्य भाग, छि ०।।

''अमृत वाऽणी बोज़''

अमृत वाऽणी बोज़ भऽवाऽणी, छिय च्यवाऽनी कन थाव सोन्दरो।
वुऽन्दि द्राव द्वन्दिह गन्ध बहार आव त्राव, जन्द पोश फ्वल वावियं सोन्दरो
च् म्योन ब् च्योन वन म्ये नोव प्रोन, अस्य मोन जुवुय पज़ि भाव सोन्दरो।
फव्ल राव आनन्दद्यनय च्येय मंज़, भगवन मन ज़न फ्वलान छावि सोन्दरो।
हेच्छि नावि समय कथि थावं कन स्वन, ज़न फ्वल नार ताव् सोन्दरो।
सोरूय छुः प्वज़ च्योन व्यचार म्योन, जुव तय फ्वल दयिनाव सोन्दरो।

''लालऽच कऽद्र''

1. लालिऽच्य कऽद्र मनऽरूय ज़ाने।
अनज़ऽनिसनिश कने पल।।
सोनऽच कद्र सोनरूय जाने।
खार कव ज़ाने स्वन सरतल।।

2. दीपऽच कद्र पोम्पुर ज़ाने
मच्छ्च्य कव ज़ाने पोम्पिऽस्च्य गथ।
कमलिऽच कद्र बोम्बुर जाने
मोह कव ज़ाने यम्बिरज़ल।।

3. पोशन कद्‌र बुलबुल ज़ाने।
काव कव ज़ाने पोशे डल।।
जन्गलुक कद्‌र हाँगुल ज़ाने।
नत तस पाथलि वालन खल।।
4. सिर्युक कद्‌र न्येथऽर वोल ज़ाने।
ओन कव ज़ाने रातऽ म्वगुल।।
शुर्य सुन्द कादिर मोल माऽज्य ज़ाने।
हाय़न्त्य कवो ज़ाने ड्रम्युक फ्यल।।
5. म्वखतुक कद्‌र हंसऽय ज़ाने।
कव ज़ानि क्वकुर तम्युक म्वल।
साध सुन्द कद्‌र साध्य ज़ाने।
गूव्यन्द साधय पादय छल।।

''थव अछ्य पननी हुशियार''

थव अछ्‌य पननी हुशियार
दर्शुन छु रोज़ि रोशन।।
1. मुचरिथ ह्वदय वुछुम सुय
गन्डिथ मुदय वुछुम सुय
पानय सु दय वुछुम सुय।। दर्शन
2. उऽद्धय गुऽविय रऽविय
वज़न छु प्रणविय
करून अनुभविय।। दर्शुन
3. अन्दरिम शर म्य च्वलुय, सहस्र कमल म्य फवलुय
तीजस तीज़ रोलुय।। दर्शुन
4. वज़न छु साज़ सन्तूर, अनहद बाजि तम्बूर
प्रथ तरफ नूरय नूर।। दर्शुन

5. अनुग्रह कोरूख भरपूर, ओरय कोरुख मनजूर
हृदयस गट् सपुन्य दूर।। दर्शन
6. तोरय आव आलव, दया कऽर दयालव,
अस्य क्याज़ि पान गालव।। दर्शुन
7. सु म्य वुछन छुस ब तस, आलम पनुन वनय कस
ननि तस बनि यस।। दर्शुन
8. टोठ्योय गोव्यन्दस, वुछुन सु मँज़ वोन्दस।
म्युल गव ब्यन्द स्यन्धस।। दर्शुन

''यलि ज़ाख वोदुथ''

1. यलि ज़ाख वोदुथ योर कोर आस।
पत अकलि कम्य कोरनय डास।
2. योर यलि गच्छ्क त्यलि गछि असुन।
लूखय वदन च रोज़ प्रसन्न।
3. मोछि जु वऽटिथ ज़ाख योर कोर आख।
यति योर अथ हावान द्राख।
4. यति वन त् क्या न्यूथ सऽत्य खाख।
ओनुथ यी ती खर्चऽविथ द्राख।
5. युऽत यिथ वोनुथ सोरूय छु म्योन
पतव न लारी फ्वत ति प्रोन।।
6. संसार सोरूय तावनिय।
साऽरी गयि अथ हावनिय।
7. रंग रंग सोम्बरऽविथ च्ये चीज़।
मूहन वोलुख क्वत गोय तमीज़।।
8. काँह नो सीऽत्य पकी वख्तिकार।
बासान छिय च्य यिम भऽय बन्ध त् यार।

9. लारिय न केंह अफसूस रोस्त।
अफसूस तस युस यति फोस।
10. प्वज़ यार गोविन्द कॉह छुनो।
साऽरी ठग भ्रमिख छि हो।।
11. कम्य चीज़न भ्रमरोवखिय।
मायायि मस च्योवखिय।।
12. कष्ट तुलिथय ज़ाख चिय।
यमि काम बापत आख चिय।।
13. सोय कऽम कऽरथो पान च्ये।
डऽलिज़्यन पनने ध्यान चिऽय।।
14. छुय वाद् क्वरमुत याद कर।
राथ दोह भगवथ नाव स्वर।।
15. हाय क्या गोय क्वत गयी च्ये बुऽद्ध।
कऽम्य चीज़न खोरुय च्ये मद।।
16. लोकचार यावुन रोज़ि कस।
कुस रोज़ि गोविन्द कर् च् ह्यस।।
17. युऽद आसनय लछि बदि करोर।
अख हार वसि न सीऽत्य तोर्।।
18. त्रभुवनुक राज् योद् त्य कऽरख।
तम्य सीऽत्य क्या आऽखर मरख।।
19. तोर क्युत कोरूथ सामान क्या।
आऽखऽर मरून छुय वनतऽहा।
20. यम्य साहिबन सूज़ुख च योर
करऽनावित्थ रऽत्यन सऽत्य च्य दोर।
21. कम्य बुथि अचख निशि साहिबस।

हावख तति वन क्याह च़ि़ऽ तस।।

22. क्या ह्यथ गछ़ख वन च़ तोर।
वन जान काऽम कऽर मिऽच़ छ्या योर।।

24. बाकय यिमय दम तिम खार रथे।
खारूख मो गछ़ लूक कथे।।

25. ब्रोंठ्य यि गछ़ि बोजुन यते।
कुसु रूद कस रोज़ुन यते।।

26. विषस रसव बेह्यस कोरूख।
कस क्या करूथ पानस फोरूख।।

27. लूकन अपुज़ प्वज़ वोनुथ यते।
खुर पाऽन्य पानस अनुथ यते।।

28. तोर्‌च़ म थाव ग्राव कँह च़ऽय।
यी वाद छुय ती याद पाव च़ऽय।।

29. यावुन यि लोकचार रोज़ि नो।
परिवार घरबार रोज़ि नो।।

30. हशमत हकूमत रोज़ि नो।
धक्कऽ मार मऽ दौलत रोज्य नो।।

31. आऽकऽल यि ब्रोंठ बोज़ि हो।
कँह चीज़ यति नो रोज़ि हो।।

32. पान कर हवाल तस दयस।
सदा शिवस त़ मृत्यन्ज़यस।।

33. गोव्यन्द गूव्यन्दिय स्वरून।
अर्पण पनुन पान तस करून।।

34. गोविन्द थव च़ तसला पूर।
कोरूमुत तऽस्य च़ ब्रोंठिय मनजूर।।

''लोलय हत्यन''

1. लोलय हत्यन कऽरिज़्यख यति सम्खन याम
   सास्चेन सन्थन साधन पादनिय प्रणाम।।
2. लोल यिमव तऽरीफ कऽरिहय तिम च़्य साऽरी शूभनय।
   भखतव कऽरि च़ऽरि चऽरि तिम च़्य साऽरी शूभनय।।
3. फ्वज यम्बरज़ल लोल चाने बागुकि बादाम कुल्य
   हरण चशमन चान्यन यिम सोरम टऽरी शूभनय।।
4. हृदयकि पम्पोश वथरय वति चयाऽे दिमयो, मीठ
   लगयो पम्पोश पादन पऽरि पऽरि शूभनय।।

''सपुद मन्जूर नज़र खुऽशी''

सपुद मन्जूर नज़र खुऽशी
दिल खोश दिलबर खुऽशी।।

1. सथ बोज़ प्रथ हाल खोश्य सपुद दयाल खोश्य।
   चेहल खोश सथग्वर खोश। दिल खोश्य।।
2. वथ हऽवनम खोश्य, कथ भाऽवनम खोश्य,
   मन्थर खोश्य दिथ गोम वर खोश्य।।
3. यि गयि सहज़ समा ध खोश्य, ज़ानन साध खोश्य
   अन्दरय न्यबरय खोश्य।।
4. फ्वल हृदय वुछुम सु दय खोश्य,
   नूर खोश्य रोज़ि खोश्य, खोश्य खोश्य क्वर खोश्य।।
5. खोश वुछिय आश्चर खोश्य,
   अन्द वन्द खोश गेविन्द ख्वशिय,
   खुल गोस नादः ब्यंद ख्वशिय।।० दिल

''आश्चर छुय''

आश्चर छुय सथग्वर धाम सोन्दरो।
निर्वाण पद घरऽअनाम सोन्दरो।।
सन्थन लग पाऽर्य पाऽर्य चरण कमलन।
दण्डवथ कर पादि प्रणाम सोन्दरो।
चऽति छुख बोज़ ऋषि पुत्रिय साधय।
न्यति परमधाम अनाम सोन्दरो।।
छुय तोरकुय अनुग्रह गूव्यन्दस।
तसति टोठ्यव शिव सालिग्राम सोन्दरो।।

''अनुग्रह कऽरनय च्य पूर''

अनुग्रह कऽरनय च्य पूर।
पानय कऽनरय सुय मन्जूर।।
समशान्ति अमृत च्याऽवनय।
प्रथ तरफ दर्शुन हाऽव्यनय।।
थलि थलि वुछुन चिय सोन्दरय।
यम्य वुछ सुय छु यूग्चयिूग्चन्द्रिय।।
सथग्वर च्ये दियि ज्ञान यूग।
अटल भखती ध्यान यूग।।
समतायि रस च्ये च्याऽवनय।
सम्सार मन्ज़ म्वकलाऽवनय।।
सदा थवनय श्रीमान चेयय।
अन्दर शिव निर्वाण च्येय।।
शरीर किन्य थवनय कुशल
च्यथ शांत निर्मल अचल।।

सूरत खसी सतधामसिय।
अगम अलख अनामसिय।।

''लोल आमो दूभार''

लोल आमो दूभार भार च्योनुय।
ध्यानिय गंगाधारऽ धारऽ च्योनुय

1. लोल वोपदच्यव गरि ख्वत गरि ज़्यादय।
   हरद वन्दय बहार हार च्योनुय।। लोल
2. भक्ति वत्सल दर्शुन दिम लोल आम
   म्यति छुयो गमखार खार च्योनुय।। लोल
3. ग्वर म्वख आख साक्षात शिव पानय।
   हर म्वख चऽय हर द्वार द्वार च्योनुय।। लोल
4. सारिनऽय शर छुख आश्चर च ईश्वर।
   महिमा अपरम्पार पार च्योनुय।। लोल
5. तार भवसर मँज़ अस्ति ग्वछ़ दिनुय
   नाव छुय कर नाव तार तार च्योनुय।। लोल
6. पोशव कनि मन त् प्राण पूज़ि लागय
   अर्घिय ओं वोशचार चारऽ च्योनुय।। लोल
7. करूणा कर ही सथग्वर शम्भू।
   म्वकलाव्यम लोकचार चार च्योनुय।। लोल
8. दास छुस दासव न होर बाज़ि अन्दर।
   अद क्याज़ि बख्यन हार हार च्योनुय।। लोल
9. वाद थऽविथ वाद पननुय कर् पूर।
   गन्ज़रान आयि वारि वारि वार च्योनुय।। लोल
10. गोविन्द ही काशीनाथो बोज़
    फोलरिथ वुछ गुल ज़ार ज़ार च्योनुय।। लोल

11. पऽरि लगयो शिव नावस चऽनिस
नावय योत संसार सार च्योनुय।। लोल
12. चानि अनग्रहकुय उम्मेदवारिय छुस।
छुय अलोक्यख दरबार बार च्योनुय।। लोल
13. पतित गोस पतित पावन च्ये नाव
बख्चुनुय सरकार कार च्योनुय।। लोल
14. गोविन्दो लोल ग्यव सऽ रातर दच्यन
बोज़ानिय हुशियार यार च्योनुय।। लोल

''श्याम सोन्दर''

श्याम सोन्दर मन मोहन नारायण नमस्कार।

1. शंख चऽकऽर गधाधर पद्मवरऽ श्री श्रीधरः।।
मनोहरऽ मधुसूधनऽ नारायण।।
2. सारिनऽय हुन्दिय कुनिय स्वामी चिय अनाऽमी चिय अगाऽमी
अन्तर्यामी परिपूर्ण, नारायण।।
3. सीवन च्येन्य पम्पोश पाद, बोज़न साध मुरलीनाद।
दिवान दाद छिय क्षण क्षण, नारायण।।
4. तस कति गटऽ संकट कटऽ, यस चेय सीऽत्य गौ सट्वट।
मोर मुकट गरुऽवाहनः। नारायण।।
5. यस च्योन राग तस बऽच्य भाग सासऽ मुखः शेषनाग।
अनन्त राग वीद ग्यवनऽ, नारायण।
6. सन्मोख हाव ज़ोतवन्य तन, तनि सीऽत्य तन मिलनावतन।
सन्थन हिऽन्दे निरञ्जनऽ, नारायण।।
7. श्रीकृष्ण कर प्रसाद हृदयस लाग पनन्य पाद।
चऽल्यम व्याद आनन्दघणऽ, नारायण।

8. लागय लोल ही तुलसी, च़रणन तल छय लक्ष्मी।
स्वरस्तीय छय वनवन, नारायण।।
9. च़िय माता च़िय पिता च़िय बन्धु च़िय भ्राता।
च़िय दाता अद कस वनह; नारायण।।
10. छुसय मटे तार यमि लटे, दर्शुन हाव दिम मटि मटे।।
हटे छय च़्य कोस्तुब मणऽ, नारायण।
11. यितम लाल दितम डाल, रऽटथ नाल ही दयाल।
च़िय गोपाल गोवर्धन, नारायण।।
12. ही मुकुन्द परमानन्द; रामा कृष्ण ही गोविन्द।
दीनन हिुन्दे ज़नार्दन, नारायण।।००

''सोखसान वोथस बेहस शोगँस''

1. सोखसान वोथस बेहस शोगँस,
नँगस न्यंदऽर प्रंगस प्यठ।।
2. खथ च्योन वोतुम थोवुम हंगस
ग्यवुम लोलय चँगस प्यठ
खोच़्न नय छुस कऽलि जंगस,।। नंगस
3. होशय रूज़िव तोहि रस संगस,
ज़ऽनिव कदर सथ संगस प्यठ,
वऽक़्फ पानय पननिस रंगस, नंगस

''भगवान सुन्दुय इन्तिज़ाम च़्वपऽरि''

1. भगवान सुन्द इन्तिज़ाम च़्वपऽरि।
यस रछि राम तस आराम च़्वपऽरि।
2. जान माल्यो रोज़ मोजस प्यठ।
युथ न् तोशख लशकरि फोजस प्यठ
श्री सत अकाल बोज़ सत नाम च़्वपऽरि ।।

3. यस रछि तस रछि त्रेटि मँजय,
गाश हाव्यस पननुय गटि मँजय,
बदलि सुय सोरूय इन्तिज़ाम च्वपऽरि।।
4. काल कतिनस न ज़ीवस छु मारवुन,
अक्य जायि ब्येयि जायि पत् सु लारवुन,
कुनी कथा छि शहर गाम् च्वपाऽरय।।
5. सारिनऽय गछि च्योन तसला द्युन,
अस्य मोकलावि कुन्य न युन न गच्छुन,
सायस छु शिविय सालिग्राम च्योपऽरि।।००

''बे रंग-रंग-रंग चऽन्यी चाल''

1. बे रंग–रंग–रंग चऽन्यी चाल।
छुख बे ज़वाल छुख बे मिसाल।।
2. प्रेयम स्वर छुस बो वायान तार।
रंग–रंग न्वन छुय सुय कुन यार।
दूर चिय करतम मुह झंजाल।। छुख
3. कलवाल चोवथस मसकि प्याल,
व्यथ बो गोसो साक्षात्कार,
सोरूय चिऽय छुख बे खत खाल।। छुख
4. आदि दीव रोज़ चिऽय म्ये रक्षिपाल,
कामन त् क्रूधन तुल म्य घटकार,
दूर कर अहंकार पथ हेयि काल।। छुख
5. आदि दीव बोज़तो म्योनुय हाल,
कड़तम दिह अभिमानुक खार,
दूर त्राव मनि संकलपिऽच्य माल।। छुख

6. च्येय सीऽत्य गोसो ब् नाऽली नाल,
दुयी जामन च्ये दच्युतथम नार,
कर्मय नाव च्ये रऽटथम बाल।। छुख

7. दच्यन तय राथ तय माह तय साल,
तस दीवस करू जय जय कार,
सऽरिसऽय मँज़ शूभवुन नव निहाल।। छुख

8. दूर कर मन निशि साऽरी ख्याल,
नय तुम नय हम कुन ज़ान यार,
दच्युत हय प्याल च्योन गोख मोतवाल।। छुख

9. प्यठ ओस प्योमुत अज्ञान बाल,
आदि दीव सोर ज़ोन पनुनय यार,
दूर च्योल यति ल्येदि ह्यथ ज़न शाल।। छुख

10. त्रयगुऽणऽ वुऽलँगिथ शिवस छु साल,
छ़्यत गव अज्ञान अम्बरस नार,
च़ोट् तऽम्य दिह अभिमानुक ज़ाल।। छुख

11. गोविन्द दिह अभिमान च़िय गाल,
छ़्यन कोरूमुत छुय पानय यार,
पान ज़ान पान छुख कालुक काल।। छुख

पननि भाऽस्य पुशराव दयस।
मशिराव पुऽण्य पाप तिम गयि लयस।।

पननि भाऽर्च़ि पुशराव दयस।
मशिराव पुऽण्य पाप तिम गयि लयस।।
खोच़ म् बा पपनस त् रयस।
साकय पानय च्यावि मयस।।

आऽशी मननावि कीऽशयस।
अनाम धाम यनाम दियस।।

''नित्य मुक्त सत् चित् आनन्द''

नित्य मुक्त सत चित आनन्द आत्मा मेरा स्वरूप
ज़ीव ईश्वर मन बुद्धि दिह आदिक हम नही।।
पँच भूतक मायाकारी तम व रज भी हम नही,
आना जाना है नही मुझ में न आज़ादी व बन्द।।
मन वगैरह का हूँ साक्षी और हूँ आनन्द कन्द,
निर्गुण व निर्मल निरन्जन और हूँ मैं निष्क्रये।।
मख ज़ने आनन्द लामहदूद सिफतों से परे,
सारे धर्म कर्म से है ज़ात मेरी मासिवा।।
मिसले आकाश हर जगह पूर्ण हू बे चूँ व चराग।।
वाणी मन से हूँ परे मै और स्वयं प्रकाश हूँ।।
आदि आखिर से मुबरा दायिम व अविनाश हूँ,
एक रस चेतन ब्रह्म हूँ दूसरा है ही नही।।
पर है जलते इन्द्रियों के पास आ सकते नही,
ला मकानो बे निशानो ईनो आँ हूँ जुदा।।
ला शरीको सर्वव्यापक गम नहीं मुझ में ज़रा।
निर्विकारो निर्विकल्पो अद्वैत हूँ निर्द्वन्द।।
वेद गाते थक गये हैं गीत तेरे ऐ गोविन्द

''होश फ्वल पोशि गोन्दरय''

होश फ्वल पोशि गोन्दरय।
टाठि सानि श्याम सोन्दरय।।
1. रवथ वोत प्वर श्याम सोन्दरय।
लोलसिय म्य लोलिय ब्वर।

ओर् लोल योर लोलिय।
फवल ह्रदय च्वल होलिय।। होश

2. रव रोशन वुच्छनुय,
गाश यस आसि अछिनऽय,
रऽवसिय मँज़ न अधंकार,
न्यरमल सु न्यरविकार।। होश

3. लोल वाल्यन नमस्कार,
जय जय बारम्बार,
गूव्यन्दनुय जुविय
सुऽन्दर सु परम शिविय।। होश

4. मँज़ श्लोकन खथ सोज़
सोज़सिऽय मँज़य रोज़,
दर्शुन कर दय सुन्द,
वुछ पान् फ्वलि ह्रदय।। होश

5. भायन वनिज़ि सोन लोल,
मन्जूरिय लोल वोल,
लोल औषध सीऽत्यी
रूगी बलेयि कीऽत्यी।। होश

6. लोल औषध च्योनुय,
रूग कासि नोवत् प्रोनिय
श्री माऽज्य सरस्वती, च्येन्य करन अस्तुती।। होश
आऽही तम्यी च्ये कऽर्य,
राथ दोह चरा चरय,
गूव्यन्दय छु सोन्दर,
वुछ न्यबरय सु छु अन्दर।। होश

''ओम ज़ोपमय हम हय ग्वलमय

ओम ज़ोपमय हम हय ग्वलमय,
अज़ म्य च्वल मय गोस गम।।
ज्ञान सिर्ये गोमय उड्ढय
ह्रदय आकाशस्य
प्रेयम पम्पोश ड़ल हय प्वलमय।। अज़

1. च्योवहस सम शान्ति अमृत
सथग्वरव पनन्यव
ज़्यन मरनुक दोद बोलमय।। अज़
2. च़ड्जमय मूहनी तीड़रिय, आड्स क्रीड़रिय स्याठाह
भखत्य भावुक दुशाल वोलमय।। अज़
3. ज्ञान गंगायि मन्ज़ श्रानक्वर
प्वर सूहम हमसू
मनि गम बम भ्रमहय छोलमय।। अज़
4. छाँजाम युस हनि हन्ये
मन्ज़ मन्ये वन्य आम
आत्म निश्चय ज़ाँह नय ड़ोलमय।। अज़
5. ड्यूठ मय प्यठ होश गोशस
तोशना तमना द्राम
ग्वरू च़रणन जुव हय मोलमय।। अज़
6. विवेक मक्ड वैराग पर, ज़र ज़र हय च़ड़टिमस
दिह अभिमान कुल हय थोलमय।। अज़
7. वीदव युस ग्योव गूव्यन्द, न्यरद्वन्द सोनुय सु जुव
ब्यन्द स्यन्धस सीड़त्य रोलमय।। अज़

''ओं तत सथ कऽरिथ''

ओ३म तत् सत् करिथ
ओ३मिय स्बरतो।
ज़िन्दय मरतो मरख नऽ जांह ।

1. आदि दीव गणीश ज़ानुन छु परतो
ओ३मिय ज़ाऽनिथ कर नमस्कार
दियी शाऽन्ती कासी डरतो।। जिन्दय
2. ज़ानतो पननुय पान अमरतो
त्रऽविथ दिह अभिमानुक मार।
शिव शिव साऽरिसिय मन्ज़ चिय स्वरतो।। जिन्दय
3. सुय चिऽय चिय सुय पानय हरतो
ज़ानतो असथ सोर सम्सार
सन्कलप च्याने गोमुत खर तो।। जिन्दय
4. ओमुय स्वरतो छुख अज़रतो
ओंमकार्य छुय सारिकुय सार
तारी सुय च्येय व्यशम्बर तो।। जिन्दय
5. सऽरिसुय मन्ज़ छुय हरी हरतो
त्रऽविथ दुयी वुछतन यार
आनन्द स्वरूप चिय दिगम्बरतो।। जिन्दय
6. ज़ानुन आत्म दीव सुय छु बजरतो
ज़ानुन सुय गव मूलाधार
अद्वयत बननुक द्युतनय वर तो।। जिन्दय
7. ग्वड़निऽकि थान चिय ओ३मिय व्यचरतो
तति छुय आदि दीव विघ्न हरतार
सारिकुय सार छुय सुय लम्बोदरतो।। जिन्दय

8. ह्रदयस मन्ज़ छुय व्यशीश्वरतो
लटि लटि ओंम स्वर करी पार
तऽम्य सुन्द ध्यानिय ह्रदयस धरतो।। जिन्दय

9. ओंम के ध्यान सीऽत्य मुच़राव बरतो
वुछतन आनन्द निराकार
तती छु वज़ान ओमुक स्वरतो।। जिन्दय

10. आदि दीव गणीशन दयुतनय वर तो
गूव्यन्द करतो साक्षात्कार
सोरूय पानय वुछ आश्च़रतो।। जिन्दय

"जिन्द पान मऽरिथ पान छुख शाह"

ओ३मिय व्यचाऽरिथ रठ त्राव शाह
जिन्द पान मऽरिथ पान छुख शाह।।

1. वहदत खान गछि़ च्युऽन जामि जम
जामि जम युस च्ययि तऽस्य चलि गम
दुयी हुन्द जाम पऽराव म ज़ांह।। जिन्द

2. कलवाल दयुत्थम च्य प्याल च्वन
प्याल च्यथ वुछमख प्रथ जायि न्वन
प्रथ जायि प्योमुत छु च्योनुय गाह।। जिन्द

3. पनने पान निश दुय करसऽ दूर
मल पानस वोन्य अद्वयत सूर
कुन रूज़िथ पान् मरख न जाँह।। जिन्द

4. च्यानि नाव सीऽत्य ग्वल दिह अभिमान
दूर गव अहंकार ज़ोन असि पान
बोज़तम वोन्य चिय क्वर क्या म्य राह।। जिन्द

5. आनन्द अमृत च्यथ गोख चिय
   रिन्दो यति गलि चिऽय तय बऽय
   यी रोज़ि पथ कुन ज़ान ती शाह। जिन्द
6. भ्रमकुय गम ओस सुय गव दूर
   साऽरिसऽय मन्ज़ वुछ नूरूक नूर
   मस द्युत यारन क्वर वाह वाह।। जिन्द
7. मस च्याऽव्य यारन च्यव भरपूर
   दूर गव अहंकार रूद्य मसरूर
   कुन रूद पानय वुछ वोन्य क्याह।। ज़िन्द
8. माया चिय बिऽय वनुऽनिऽच्य छाया
   कायायि हिंऽन्ज़िय त्राव राया
   दिह अभिमानस द्यू वोन्य दाह।। जिन्द
9. तमहुक चूर छुय नफ्चस अन्दरय
   न्यबर त्रऽविथ स्वरून चिय सुय
   वुछ कति मेलन छु हु तय हाह।। जिन्द
10. गूव्यन्द गिन्द रिन्द ज़िन्द पानय
    ज़िन्द मऽरिथ छुख शूभानय
    ज़िन्दय मूदखो मरख न जाँह।। जिन्द

"पान दयस युस"

पान दयस युस पुशरावे। सुय प्रावे तस केंह न रावे।।
आनन्द मस तस दय च्यावे।।

1. तीन बन्धों को कर दो बन्द
   सिरे जाना देख लो आनन्द
   ज्योति निरन्जन दिखलावे। पान दयस

2. खुद ही प्राण करता है सूहंग।
सुन तू मुरली बीण और सारंग।।
अनहद का बाजा बजावे।। पान

3. प्राण अपान कर ले इक्ट्ठा
जीत राखे इड़ा पिंगला।।
दश्मो द्वार में प्राण चढ़ावे ।। पान

4. उतरेगी अमृत की धारा
सुन तू धन्टा और सितारा
ओमकार वाणी से सुन जावे।। पान

5. बे खुदी की जिसने पी भंग
सुनेगा वह शँख और मृदंग
मानसरोवर में जो नहावे।। पान

6. प्राण करता दिन रात सूहम
यही माला जाप दूर होवे गम
मन से सन्कल्पों को हटावे।। पान

7. भम्र से साबित होता यह मेला
मन ही ने सब कुछ है खेला
मनोराज सब कुछ दिखलावे।। पान

8. दुयी चख ज़ख दुय करबा दूर।
दुय त्रऽविथ सु हऽज़िरि हजूर
चोपार्य रूफ तस दय हावे। पान

9. शम दम से मन को जो मारे
नित अनित वह ही विचारे
हम तुम का भेद जो मिटावे।। पान

10. आदि दीव च्येय तोरय छऽनन नाद
गूव्यन्द बोज़तो दशमो नाद
तारि सुय पान च्यानी, नावे।। पान

तारीफ शब्द

11. शब्द मँज़ऽ प्रकट गब सम्सार
शब्दिय ज़ेन शब्दस गछ़ च पार
बन्द मुक्ति पर ध्यान प्रावे ।। पान
12. शब्दियदच्यन तय शब्दिय शब
शब्दिय ज़ल अग्न पवन नब
शब्दिय पृथ्वी कन सु थावे।। पान
13. शब्द रूप ही है हम और तुम
शब्द है यमपुरी और है यम
शब्द किनी मनसिऽय सु पावे।। पान
14. गगन मण्डल में करे गमन
जीत लिया हो जिसने यह मन
सुय दयस हो परज़नावे।। पान
15. सुन के गोविन्द उसी में हुआ मगन
लय हुआ इसमें तन थिर मन
रात और दिन आनन्द पावे। पान

''यस सु पालि तस कुस गालि''

यस सु पालि तस कुस गालि।
बोजबा मालि सदाशिव।।
1. माया काल तस नो ड़ालि
यस अथ डालि सदाशिव,
लोलिऽय न्यूमस म्य ड़ालि।। बो

2. शब्दिचि खसि युस प्यठ तालि,
ग्यवि सुय तालि सदाशिव,
नऽचि म्वज़ि कऽचि ब्येह पनन्य आलि।। बो
3. लगय अथ यालि त् चालि।
दुऽख सोन न च़ाऽलि सदाशिव।
गगनसिय खसि सुय छ़ालि।। बो
4. गोफि पनन्ये अचि़ दमालि,
अमृत वालि सदाशिव,
पान हवाल क्वरमस मालि।। बो
5. दम दम दम युस सम्भालि,
क्रम पाऽठ्य पालि सदाशिव,
अज़पा ज़प ज़पि प्यठ मालि।। बो
6. यस सु खारि तस कुस वालि
गूव्यन्द बालि सदाशिव, पुऽण्य पापन सुय दय ज़ालि।। बो

"दर्शुन दि दया कर ही दये"

दर्शुन दि दयाकर ही दये।
मृत्यन्ज़ये नमस्कार।
1. कालस निशि रछ़वुन च़ म्यये
नाविय च्योन काल संहार,
यिम रऽछ़िथ तिम अपम मृत्य न मोये।। मृत्यन्ज़ये
2. ही दय कम क्या गछी च्येय,
भखती पननी ओरय म्य यार,
मंगान गूव्यन्द ब्ययि त् ब्यये।। मृत्यन्ज़ये
3. ही गोसानि च्याने लोल्य
स्वन गलि अद बनी कुन्दनकार,
च्ये रोस्त गूव्यन्द अद् क्या लये। मृत्यन्ज़ये

''तावन है दुनिया बडलिये''

कम गुल बर् कडरि मोतिन्य वावन,
तावन हय दुनिया बडलिये।।

1. कम गुल म्यचि मन्ज़िय मिलनावान,
म्यचि मन्ज़ सावन बडलिये,
ज़ाल नावानडय क्याह च़ाल् नावान।। तावन
2. सुय ज़ानि लखडत् जिगर यस रावान,
दिल कतडरावन बाडलिये,
होशे मन्दनडय म्वत बननावान।। तावन
3. पान वडन्य भायन लडनावान
कलड च़टडनावान बडलिये
क्युथ अशखाश गव कमन यावनन।। तावन
4. बे आर समयन अथि ख्याडव्य कावन
दिल छुम रावन बडलिये
जाम च़टनावन पाम ध्यावनावन।। तावन
5. कालडनि तलवार कस न कतरावन,
ह्यस व्यस्रावन बडलिये
कुम्भकरूण आदि कडति रूद रावण।। तावन
6. अन्द्रुम अन्द्रय छुख श्रोपरावन,
अफसूस ख्यावन बडलिये,
कुस करि कस ग्राव शरिय थावन।। तावन
7. साडरी गाडमित्य यति अथहावन
कस हाल भावन बडलिये
बडड़्यन वीरन बारडव द्यावन।। ताव

8. कऽत्या म्वख संसारिय हावन,
छु भ्रमरावन् बऽलिये,
भगवानिय तस छुय बचऽरावन।। तावन
9. मुह त्राव मुहिय बुथि बुथि दावन,
बाकि वदनावन बऽलिये,
दुऽख बऽडरावन कनि छावनावन।। तावन
10. ख्यवन यिम न् आऽस्य नोजुख पोलावन,
गोह ख्यावनावन बऽलिये,
त्रहिमाम त्राहे छुख परऽनावन।। तावन
11. ज़ोरावार ज़ोर क्याह थ्यकनावन,
काल कस न पावान बऽलिये,
क्रकि सीऽत्य मुलकन आऽस्य च़लऽनावन।। तावन
12. यावगी कति रूज रोज़्या यावुन
कन थाव ग्रावन बाऽलिये,
नफरत तिहन्ज़िऽय यिम छि तम्बलावन।। तावन
13. फऽलिलय मऽलिलय आऽस्य मलनावन,
तन आऽस्य नावन बाऽलिये
र्स्वगय हूरन आऽस्य तम्बलावन।। तावन
14. काल विक्राल काऽल्य कॉऽसि नय त्रावन,
ख्यन मऽशिरावन बाऽलिये,
मोतुन प्याल वन कस न च्यावन।। तावन
15. वदनस मंज़िय छुस वननावन
सोज बोज़नावन बाऽलिये,
सान्यन कथन छुखना कन थावन।। तावन

16. ग्वर उपदीशी छुस याद पावन
दम गऽजरावन बाऽलिये
यिम कन थावन तिमय प्रावन।। तावन
17. सथ ज़न दयसिय पान पुशरावन,
तिमनय रावन बाऽलिये
गूव्यन्द मुहुय छु शूख बऽडरावन।। तावन

''नरकीय स्वर्गीय कऽसि मो वन''

1. स्वरसती भगवती छय वनवन,
नरकी स्वर्गी कँऽसि मो वन,
2. ज़ान पाऽन्य पानय सु नारायण
ब्वड छुँख गूव्यन्द चि़य सथजन,
लूकन हऽन्जि कथि मो थव कन।।
3. मन कन वऽटिथय पख पानस,
पुशरऽविथ पान भगवानस,
ध्यानस मन्ज़िय रोज़ शरण। नरकी
4. दखल मो दि दय कारखानस,
युस युथ सु ल्युथ छय पानस,
भगवानस खबर छय हन–हन।। नरकी
5. अन्द्रिम हाल्च़ तस छि खबरिय,
क्याज़ि छुख लागान बे सबरिय,
न्यबर्य छठ मऽ छुयना व्यपन।। नरकी
6. लेन देन त्राव वोन्य पान म्वकलाव
शिव पादऽनिय पान पुशराव
राथ दोह ललऽनाव नाव मन।। नरकी

7. आऽही कर रात्र दयन
शत्रन म्यत्रन त न्यंदिकन
सम्बन्धियन भायन बन्धन। नरकी
8. बुहरूप्य भगवान च्योनुय छुय।
पऽज्य पाऽठ्य संतव मोनुय सुय।।
ज़ोनुय यिमव तिमय सत् ज़न।।
9. सारिनिऽय गूव्यन्द लोलिय भर
पज़ि भाव आदर सथकार कर,
ईश्वर रूप ज़ऽनिथ त्रभुवन।। नरकी

''पानस पानय चावान सु म्वय''

कुन करू प्राणस् अपानस त् ध्यानस,
पानय पानस च्यावान सु म्वय
1. आदि दीव वऽतिथ छु साऽरिसिऽय जहानस
रिन्दन छु वनान दूर कऽरिव दुय,
आदि दीव लगयो ब च्याऽनिस ध्यानस।। पानय
2. आदि दीव बिहिथ प्यठ ड़ालानस
आनन्द मस च्यय च्यावान छुय,
वहदत खानकिस तथ मुऽय खानस।। पानय
3. सुय छुय गालान दिह अभिमानस,
दुय त्राऽविथ सोरूय छुय सुय,
रिन्दय छुख वन तऽस्य जानानस।। पानय
4. सुय छु यति खसान व्यमानस
पर त् पान कुन युस ज़ानान छुय
रिन्दय छि गिन्दान शिन्य मऽदानस।। पानय

5. रिन्द छि प्यवान ओम किस दानस,
अद्वयत च्वट तिम पाकनावन,
युस सु च्वट करि सुय न्यरवानस।। पानय

6. कुन करू पानस त तस नाराणस
वीदव ग्योवमुत युस पान छुय
तस्य मँज़ मर त्रिय मेल भगवानस।। पानय

7. सु अख त ब अख यी कति ब मानस
शिन्या छु फना करन बुय,
पानय वुछमय सुय पाऽन्य पानस।। पानस

8. मस्तान बिहिथ छु अद्वयत वानस
मस पनन्यन छुय सुय च्यावान,
ज़ान करनावान छि यूगस ज्ञानस।। पानस

9. गूव्यन्द वन्य द्यू पननिस पानस
वन्य दिथ दयी सोरूय छुय
पान कर अर्पण तस लामकानस।। पान

''अनहद शब्द बोज़''

आदि शक्ति हुन्द ध्यान करसाऽ च्वपऽर्य,
अनहद शब्द बोज़ मुच़राव तोर।।

1. प्राण युस रटि तय तऽस्य वज़ि ओम,
प्राण छुय कऽरान सू हम सू
तऽस्य सीऽत्य मीलिथ मतऽ यितऽ योर।। अनहद

2. तथ जायि वाऽतिथ छुय वज़ान हू
तन मन किन्य स्वर सूहम सू
शिव शिव ओमकुय छुय वज़ान शोर।। अनहद

3. स्वप्रकाश रूप अस्यि यार वुछ वुन
युस बोज़ि प्रथ वख्त ओमकुय धुन
च़िय बिऽय ग्वल तय सुय ध्यान दोर।। अनहद

4. प्यठ ब्रह्माडस ज्योति रूप ज्ञान गाश,
नाद ब्यन्द असि करि पापन नाश
पोम्परि सिन्दय पऽठय पान तति मोर।। अनहद

5. पान कर यमि भवसर सरय,
गुणातीत द्राव च्योनुय घरय,
भवसर सोद्रस त्वरखो अपोर।। अनहद

6. नाम रूप त्रऽविथ छु आनन्दमय
पान प्रज़नऽनिथ पानय दय,
दुयी वेह म् थव पानस लोर।। अनहद

7. यार च्योन हनि हनि मन्ज़ छु प्रज़लान
त्रिगुणी वोलन्गिथ शिव च्योन थान,
दिह अभिमान्च लऽर च़िऽय लोर।। अनहद

8. आदि दीव चोवथस आनन्द मस
सोरूय च़िऽय पान कुस मंगि कस,
छोह द्युचत पानस दय द्राव सोर।। अनहद

9. दृष्टा छुख पान दृष्य म् ज़ान पान,
स्वप्न दृष्टावथ पान च़िय ज़ान,
स्वप्रकाश द्राव पान असि यलि छ़ोर।। अनहद

10. टोठ म्योन अवांग मनस अगूचर,
गोव्यन्द ओम स्वर ज़िन्दय मर
मनि मँज़ वनि आव असि यलि गोर।। अनहद

''आनन्द मस तऽम्य च्योवनस''

आनन्द मस तऽम्य चोवनस त लोला,
गछ़त शरण सतग्वरस त लोलो।।

1. चोर वीद तय अरदाह पुराणय,
दीवी शीश रात ध्यन ग्यवान्य,
शरमन्द गयि ग्यवान यस त लोलो।। आनन्द
2. चिऽय बिऽय यति न रूद पथ छु हाऽरथ
सू हम त्राव छोन सू छुयी सथ
नाव छम मन्ज़ कुनिरस त् लोलो।। आनन्द
3. दम रऽटिथ सोदरस मन्ज़ दयू दम
दुर्दान दान तुल सूहम सू दिस त्रम,
अथि ह्यथ बोठ् चिय खस्त लोलो।। आनन्द
4. नाभ्यस्थान प्यठ फेर प्रणुवुय व्यचार
अष्टदल ह्रदयस मन्ज़ कर करार,
नेरू कण्ठ प्यठ ब्रह्माँडसत लोलो।। आनन्द
5. अनहद मण्डल बोज़ ओम ज़ीर बम,
छुय वज़ान दम करान सूहम हम,
दुय गऽज्य तय सुय हा पान् अस्ति लोलो।। आनन्द
6. च्यत पारिऽद्य अस्य कस्यायि चन्चल,
कृपा कऽरिथ्य गयिय न्यमल,
कुशत गोम सीमा बस्त लोलो।। आनन्द
7. तफ ब्वोड छु राथ दयन अज़पा ज़फ
तस चऽमियोयस नो चमन छुय हफ,
सुय सोरूय वुऽन्य बऽ कस वनऽ लोलो। आनन्द
8. वहदत खान चव म्ये मये माऽरिफत,

दुय त्राव यी भाऽविऽन म्य तऽन्य कथ,
मस्तान मस च्यथ छि मस्त लोलो।। आनन्द

9. सथ च्यथ आनन्द सु परिपूर्ण
ग्यवहा गीथ रूदि न हवस त् मन
सुय जानि बनन छु यस त लोलो।। आनन्द

10. चिऽय सोरुय ब् नो ति बहानय,
अमि प्येठ पूज़ा ब नसाऽ ज़ानय,
अवँग मनस अगूचर त लोलो।। आनन्द

11. भ्रम च्वल ती रूद यी ब्रोन्ठ ओसुय,
भ्रम किन्य युन गछुन यम सिऽन्ज़ फऽँसी,
भ्रम च्वलुय गूव्यन्दस तऽ लोलो।। आनन्द

---०००---

शाह शाहय स्वरतन दय शाह अख मो रावराव,
छ्या खबर यि शाह नीरिथ फीरिथ आव या न आव।
शाहनिय सीतऽय दोह भर गूव्यन्द शाह सवार।
स्वशम्नायि मँज़ गुरशब्दय वति द्राव।।

''शिव शिव करान''

1. शिव शिव करान शिवयि सपद्योस।
शिवयि ओस त् शिवयि रूद।

2 सु म्योन ज़ुव तय ब तसुन्द ज़ुवय।
ननि तस बनि यस आत्म बूध।।

3. स्वप्न मन्ज़ ति यिन भीद ब्वद उपदी।
भीद नो जाऽनिजी पानस त तस।।

4. गूव्यन्द छुय हो सुच्योन ज़ुविय।
परमऽ शिवयि वुऽनुख यस।।

''वज़ान बीन बाजे सोन्दरो''

1. अनज़ान क्या ज़ानि यस छय ज़ान
   वज़ान बीन बाजे सोन्दरो।।
2. च ग्वर शब्दय वुछुन भगवान।
   खऽनिथ मनि वाजि सोन्दरो।।
3. मशिर सोरूय पुशर तऽस्य पान।
   वज़ान बीन बाजे सोन्दरो

''अज़ताम कालन कुस त्रोवुय''

अज़ताम कालन कुस त्रोवुय
नाम रूप सम्सार न्यंगलोवुय।।

1. कल प्यत नाम रूप सम्सारिय।
   असि ति भाति प्रय रूप च़िय सोरूय।
   आधारय पान् च्योन द्रावुय।। नाम
2. क्राल व्यक्राल छुय काल शाहमार,
   ब्रह्माध्यकन ति च़ाऽनिन लार,
   हार माऽन्य सारिविय याद थोवुय।। नाम
3. काल सिऽन्ज़ सारिनिय च़ाम्च़ थर,
   रेय प्यठ ब्रह्माहस तान्य कर नज़र
   दयी सोरूय क्या च़्य रोवुय।। नाम
4. काल छुय क्रूरूय महाबली
   काल सुन्द बूज़िथ वीर ड़ली,
   च़ली न कालन ति कुस न पोवुय।। नाम
5. कालस तिमविय कोरूय ग्रास,
   सथ स्वरूपस प्यठ यस छु व्यशवास,
   सथ स्वरूप पननुय याद पोवुय।। नाम

6. दीश काल रोस्त छुख च शूभायिमान,
प्रऽविथ पननुय आत्म ज्ञान
थरऽ थरऽ रूज़िय नऽ शर द्रावुय।।
7. गूवयन्द छुख अकाल पुरुषुय चिऽय
स्वप्न वथ काल सम्सार सोरूय,
दुय त्राव सथग्वरविय भोवुय।। नाम

''मसहाकऽर्य अस्य च्येन्य''

आनन्दघण परिपूर्ण त लो लो
मसहाकऽर्य अस्य च्येन्य कुनिरन त् लोलो।

1. हनि हनि व्न्य दितमय सऽन्य त वोगन्य,
चिय सोरूय ब्योन किथ अस्य सपन्य,
च्वपऽरि चिय केंह न च्य व्यन त लोलो।। मस
2. ओम स्वरि अचि अन्दर प्राण युस रटि,
वोटि अकि छ़टि प्यठ गछि शिनिह्चि छ़टि
अति बलवीर कम कम यीरन त लोलो।। मस
3. दमदिथिय स्ऽदरऽ मँज़ ब्वठ चिय खार,
दुर्दानऽ तुल अम्य मन्ज़य सुय च़ार
दुरदानय रिंद छि च़ारन त् लोलो। मस
4. अनहद मण्डल बोज़ ताज़–ताज़ साज़
साऽरी दीव ह्यथ यिवन छु तति इन्द्राज़
सलाम दिच़ तति इन्द्रन त् लोलो।। मस
5. अछ़ रऽछ़य तति हो छि तम्बलावन
युस तम्बल्य तस्य क्युत हो छु तावन,
गछ़ त् शरण सथग्वरन त लो लो।। मस

6. साध आज़ाद यस तोरय छ्ऽनन नाद
सर करि पान युस बोज़ि दशमो नाद
पत लारन तस कारण त लोलो।। मस

7. रस् रसय रस ल्वग म्य रस च्यवान
शशि कलि छुय तति ज़म ज़म वुज़ान
च्यव यिथुय छिन फ्यारन त् लोलो।। मस

8. अष्ट स्यज़ पतऽ लर्स्य लर्स्य सु वुछन नऽ स्योद
क्या बकार तस सु छुना सारिनिय थ्वद
च्यानि नावि ति दय छु तारन त लोलो।। मस

9. व्याथानस मन्ज़ आयी समाऽधी
अम्य खोत क्या दियि दय हो शाऽदी
प्रणविय शब्द उश्चारन तऽ लोलो।। मस

10. सथग्वर सिऽन्ज़ दया यस न आसी
सु कति म्वकल्योविय यम फाँसी
क्रॉजिल्यन छुय पोन्य सारन त् लोलो।। मस

11. सूहम त्रोव तय छोन सू ज़ोपुय,
यिथ तिथ पाऽठ्य मन म्योन नोपुय,
सुय तार दियि आऽबदारन त लोलो।। मस

12. बन्द कर सीर पनुन प्रकट मो कर
करि युस प्रगट तस हो छि थर थर
राज़ मरतब निशि गिरन त लोलो।। मस

13. गूव्यन्द सोरुय छुय गूव्यन्दय
दुय त्राव गूव्यन्द्य छय च्ये द्रिय
जोलनस अमी लोल नारन त् लोलो।। मस

''आदि दीवऽ पादि कमलन''

आदि दीव पादि कमलन ल्गय सथग्वर
ईश्वर अन्तरयऽमियो।।

1. व्यघन्न सारिन नाश कर विघन्न हर
चलि थर् अन्तरयऽमियो,
आश छम च्याऽनी अज़र अमर।। ईश्वर
2. नमो नमः च्ये ही वोमा पोत्र
लोल भरू अन्तरयऽमियो,
होल कास खोश आस गछिन्य ज़र ज़र ।। ईश्वर
3. दर्शन च्यानि अनुग्रह सीऽत्यी तर
भवसर अन्तरयऽमियो,
ही शोद्ध बोध अद क्याज़ि ब् गाबर। ईश्वर
4. सोरच्योम ल्वकचार यावुन गोम ब्र
क्याह कर अन्तरयऽमियो
बुजरस मँज़ डर नो च्यानि ब्जर।। ईश्वर
5. क्याह कर क्याह कर कासुम मर् मर्
अरसर अन्तरयऽमियो
पनन्ये अथ सीऽत्य कर म्य खर खर।। ईश्वर
6. मूलाधार प्यठ तान्य ब्रह्मरन्ध्र
ओं स्वरू अन्तरयऽमियो
प्राण पोशव सीऽत्य पूज़ा च्ये ब् कर ।। ईश्वर
7. स्यद्धि दाता छुख चिय प्रथ दफ्तरऽ
अफ्सर अन्तरयऽमियो,
तोरूय मुचराव अन्द वन्द प्रथ बर।। ईश्वर

8. दयायि पनऽने ही दया सागर
आगर अन्तरयऽमियो,
गाश अन साऽरिसिय ह्यर ब्वन गाशर।। ईश्वर

9. लोल सान च्योनुय ध्यानिय बो दर
पाठ करऽ अन्तरयऽमियो
चरणन च्यान्यन करहा ब् चामर।। ईश्वर

10. सारिनिय हिऽन्दे ही गणीशर
आसर अन्तरयऽमियो
अष्ट स्यज़ सारच्चय च्याऽनी नोकर।। ईश्वर

11. नेत्रन लोल ओश छुम वसान ज़र जर
निशि शर अन्तरयजमियो
रछतम प्रथ प्रकार बोज़ परमीश्वर।। ईश

12. गूव्यन्दस च्याज़े सीऽत्यी वरऽ
आसर अन्तरयऽमियो
सथ धाम अद वाती पनऽनुय घर।। ईश्वर

पीरस त् पीरानि पीरस

पीरस त् पीरानि पीरस
दस्त गीरस नाद लाय

1. गोसुल पाक गोसुल अज़मिय
पुश्त पनाह च्योन अन्दं वन्द
वख्त सख्ती याद कऽरिज़्यन
जल पीरस नाद लाय।। पी

2. मदतस हज़राथ छि साऽरी
याऽरी करऽविऽन्य च्य छिय

नकश बन्द महबूबि आलमस
अमीरस नाद लाय

3. सुय करि हलि मुशकिल च्ये
कुनिकुय परऽवाय मऽभर
दोस्त च्योन मन्जूरि हक छुय
नब्बीरस नाद लाय।

4. मुहम्मद साऽबस ताजदारस
शेखुल आलमस कर अर्ज़
खोदायस पनऽनिसिय
फकीरस नाद लाय

दूसरा पाट

आचार्यस परम ग्वरस
सत्वरसिय नाद लाय।।

1. ओमकारस सूहंग पुरूषस
सथ पुरूषस अगमस
महा दीवस महा भैरवस
महा वीरस नाद लाय।।

2. गणपतजियस आदि पुरूषस,
माजि दीवी गछ़ शरण,
वीर भद्रस सदा शिवस,
गम्भीरस नाद लाय।।

3. दयालस सालिग्रामस
लालस वन गूव्यन्दो
सन्तन हिऽन्दिस सरताजस
संत कबीरस नाद लाय।।

4. परम सन्त सालिग्रामस
लालस चिय गूव्यन्दो, राधा स्वामियस
संत कबीरस।। पनऽनिरस पीरस नाद लाय।।००

''च्यानि दर्शन सीऽत्य''

च्यानि दर्शन सीऽत्य हृदय, फ्वलि म्य भगवानो वलो
गोस गम सोरूय यखदम, चलि म्य भगवानो वलो।।

1. रऽवऽ सिऽन्दे खसनऽ सीऽत्यी, गटऽ मा छय रोज़निय,
मूह त शूखुय अज्ञानिय, गलि म्य भगवानो वलो।।
2. लोल बेमारस खबर ह्य, सान्य विज़ि बे आर म् लाग,
स्यदि बुथि यिम युथ न अथ् खोर, डलि म्य भगवानो वलो।।
3. अज़नत अद वन्त वोन्य कर, हृदयुक म्य नेरि शर
भवरूग त्रेयि ताप तप ज़र, बडि भगवानो वलो।।
4. शुर ब् च्योन छुस लल नऽविज़्यम, बबत् माऽज्य मऽशिराऽव्य ज़्यम
ह्यथ अमृत चावनऽविज़्यम, लोलऽ म्य भगवानों वलो।।
5. रोज़ि रोशन यिमच्य तोशन, लोल पोशन छावयो
च्य रोस नो कँऽसि सीऽत्य यिमन, रलि म्य भगवानो वलो।।
6. आश आऽसम राऽत्य रातस, गाश तारूख खस्यम
अछ़ लोसम छम न यिवान, ज़्वल म्य भगवानो वलो।।
7. दिम पनऽन्यी अभीद भखती, भखती मुक्तीछि साऽन्य
अदन जाँह काल ज़ालिय, वलि म्य भगवानो वलो।।
8. गूव्यन्दस लोल वोन्दस, गूव्यन्दसिय सु वुछि हे,
दर्शुनुय हाऽविथिय, थलि, थलि म्य भगवानो वलो।।

भजन

ओं

ओं शिव शंकर अज़र अमर
गंगादर हर ईश्वर जय ।।

1. च्यंतायि भस्मा मलिथ शुक्ल सोन्दर
त्रिन्यथिर दाऽरिथ निर्भय
हटि वासुक जटि गंगा वसन जर ।। ग.

2. म्य गम कऽिसथ च़्य द्यगंबर
पापन सान्यन कोरूथ क्षय
निष्क्रय व्वरथस त् तोरथस भवसर ।। ग.

3. प्रेयमऽ मस च्योवथस पननुय आश्च़र
सर क्वर पानिय चि़य पानय
भ्रम यन कोसुथ तन च़ल्य अर सर ।। गं

4. साक्षी सथ च़्यथ आनन्दीश्वर
न्यष्कालऽ निर्मल च़ न्यरामय
मंगल कल्याण ज्ञान समन्दर ।। ग.

5. चाने प्रेयमय गज़् यम सिऽन्ज़िय थर
मर मर कोसुथ च़्य मृत्यंज़य
गाऽल्यथक राग दीशिक यम केंकर ।। ग.

6. भक्ति वत्सल शक्ति पात् नज़र
कर वर अस्य च्याऽनी प्रय छय
आर्यत्यन हुन्दुय यीनय ज़र ज़र ।। ग.

7. भस्मांस्वर म्योन मन भस्माधरऽ
ज़ाल नावुन पनने अथय
आनन्द अमृत च्याव अमरीश्वर ।। ग.

8. च़्वयशीथ लछ ज़ीव जाऽच़्य हिऽन्द चक्कर
निशि मोक्लोवथस कोरथम ज़य
करिथ दया दया सागर ।। ग.

9. वुनि छुस बालुख बुथि छुम बुजर
प्रेयम अुऽश छुम वसान जरय
मस छुस गछ़ान वुछिथ च्योन बजर ।। ग.

10. पान् रठ च़ठ वासनायि हुन्दि पर
ज़र ज़र च़टिथ मनि कास खय
अदनो फेरख वोपर घर घर ।। ग.

11. क्षणऽ क्षणऽ च़्ये सत्य व्यशम्बर बर
रछिवुन लछि नोव चि़य ब्वड दय
आनन्द दायक चि़य नन्द कीश्वर ।। ग.

12. यिमव यति क्वर पननुय पान सर
तिमव ज़ोनुय हर हर शय
गोविन्दनि बहान चि़य पान शंकर ।। ग.

''लोलन वनऽ नाऽव्य''

1. लोलन वनऽनाऽव्य न्वन च़्योन प्राऽनी,
सुऽन्दर अमृत वाऽञी बोज़।
लेखऽ नोवनस यी लेखनन च्याऽञी।।

2. खत च़्योन परिथिय छुस म्यवाऽनी,
वुऽनमय म्य गूव्यन्द बाऽनी बोज़।
जवाब ल्यूखमय म्य रऽवाऽनी।।

3. नमस्कार सूज़िय च्याऽञनी क्राऽनी,
तिमनिय बऽति सोज़ाऽनी बोज।
साऽरी रूफ छिय च्याऽञी प्राऽनी।।

4. यऽम्य यी व्यव तस ती भवाऽनी,
काऽल्य छुय तथ ख्यवाऽनी बोज।

न्चव दिथ न्चव न्चव न्चव नवाऽनी।।

5. हव्दयस चलिनय च्य परेशाऽनी,
यिम छि कर्मिय प्राऽनी बोज़।
बऽड़्य ज्ञाऽनी छिय भूगाऽनी।।

6. केंह यूगी भूगी अज्ञाऽनी,
केंह रूगी विज्ञाऽनी बोज़।
कर्मय हाऽनी छिनऽ व्यापाऽनी।।

7. केंह संयमी धर्मी दाऽनी,
केंह छि कर्मी नादाऽनी बोज़।
केंह माऽनी केंह निर् अभिमाऽनी।।

8. केंह वाचक या ब्रह्मय ज्ञाऽनी,
साऽरिनिय कासि सुय हाऽनी बोज़।
पनऽने तरफय करनी जाऽनी।।

9. संत साध करऽविऽन्य व्यदवाऽनी,
तिम न्यमदि छिय निर्वाऽणी बोज़।
दकलन छय यति तति हाऽराऽनी।।

10. फारसी कथऽ करि काऽरिस्ताऽनी,
शरणिय छिय रोज़ाऽनी बोज़।
तिम तर्य यिम वर्य पानऽ भगवाऽनी।।
11. साऽरिय तोरची छय मेहरबाऽनी,
अदऽ कऽर म्य गज़िल खाऽनी बोज़।
स्योध वुछनय म्य कर्मय लाऽनी।।

12. ज़िन्दऽ दिलनिय हिऽन्ज़ गयि ज़िदगाऽनी,
ब्वन पनऽनी मस्ताऽनी बोज़।
म्वंदऽ दिलन हिऽन्ज़ि कथि छि हाऽराऽनी।।

13. तऽथ्य वनन वाऽञी छय भवाऽनी,
च़ायस आयस्थाऽनी बोज़।
द्रायस तोरऽ ब्ययि ला मकाऽनी।।

14. तथ जायि बुऽद्धि वऽस्य प्यवाऽनी,
मन ज़्यव वुठ नऽ फोराऽनी बोज़।
होश कर होशी होश म्वच़ाऽनी।।

15. गाटस गाटऽ प्यव छुऽनाऽनी,
गाटस दुऽग दिवाऽनी बोज़।
च़ाटस पज़िहे करिऽन्य आनमाऽनी।।

16. लोलऽ च्याञि केंह अच्छर छुस लेखाऽनी,
दर्शनऽ विज़ि ज़बाऽनी बोज़।
सन्तन हिऽन्द पाद रोज़ सीवाऽनी।।

17. रऽवऽ सिऽन्दि ख्वतऽ रोज़ ताबाऽनी,
रम्बवुन ज़न मंद्याऽनी बोज़।
आलव बोज़ खस प्यठ असमाऽनी।।

18. रऽवऽ सिऽन्द पाऽठी खस असमाऽनी,
रऽवऽ सिऽन्दि ख्वतऽ चम्काऽनी बोज़।
नूरूक नूर छुय नूर नूराऽनी।।

19. पान पुशिरनऽ रूऽस केंह नऽबनाऽनी,
वनऽनव सीऽत्य नऽ केंह बनाऽनी बोज़।
वासनायि ज़ालिय छुनऽ छ्यनाऽनी।।

20. ज़गत बनोव सर्वऽ शक्तिमाऽनी,
च्याऽज्य म्याऽन्य छय नादाऽनी बोज़।
बुऽद्ध छय नऽ वुनि च्य तोर वाताऽनी।।

21. करतम अकरतम अन्यथा करतम,
कथि शास्त्र प्रमाऽणी बोज़।
शरणागतनिय छुय वराऽनी।।

22. लूकन हिऽन्ज़ऽ कथऽ क्याछि करनी,
दमऽ दमऽ रोज़ शरणिय बोज़।
कथऽ कर पननी क्या छु प्रावाऽनी।।

23. आश्चर्य वत् आश्च़र वुछाऽनी,
द्यन द्यन न्यर्वाण वाऽनी बोज़।
पानऽ गूव्यन्द पानस छु छ़राऽनी।

24. होशिचि त्रकरे पूरऽ परमाऽनी,
दमऽ दमऽ छुय तोलाऽनी बोज़।
केंह त्रऽख बाकय वुनि छिय साऽनी।।

25. ठेकऽ छा क्वरमुत छुय अमाऽनी,
आश थव काश कराऽनी बोज़।
गाठिय मुजवज़ऽ वातनावाऽनी।।

26. माया वुछिथिय छिय वोलाऽनी,
बडऽज्य मुनीश्वर ति गाबराऽनी बोज़।
त्राहि माम त्राहे छिय पराऽनी।।

27. अृषी मुनी उद्ध गीथ छिय ग्यवाऽनी,
यूगी छिय बोज़ाऽनी बोज़।
छुऽपि हुन्द मन्त्र 'सू' वुज़ाऽनी।।

28. सारिनिय नमस्कार कर म्याऽनी,
क्या वुनि छिना बख्याऽनी बोज़।
मरनिन्य दुऽह वुऽन्य पूरऽ कराऽनी।।

29. ताऽलीम ग्वरविय दिऽच़ रूहाऽनी,
पऽज़्य पाऽठ्य स्व छि लाहाऽनी बोज।
गूव्यन्द क्या गुऽयती ज़ाऽन्य ज़ाऽनी।।

——oo——

सन्त कथा

ओं

श्री गुरुवे नमः प्रथम भाग

1. कथा भक्ति हिन्ज वनय म्येय बूज़भुच छम
दयस नय केंह ति त्युथ टोठ युथ छु प्रेयम ।।
2. सदा शिव द्राव अकि दोह गौवरिये ह्यथ
करनि ल्वग सऽल वनन्य भ्रष्बसिय क्यथ।।
3. पकानिय आऽस्य वति प्रेयमिय ग्यवानिय
तिथुय वागुर तिमन आवय् मियानिय।।
4. सदाशिवन ब्रशभय प्यठ वोठ छिन्य
नजरि यामय गोविय मैदान तिमन शुन्य ।।
5. करनि ल्वग जायि अथ प्रणाम ढन्ढ वथ
वुछुय गौरी दोपुन क्याहताम छय कथ ।।
6. त्युथुय छिन गौरिये वोठ क्वरून प्रणाम
प्रिछनि लज् शम्भुहसकम्य सुन्द यिछुधाम ।।
7. वोनुस फीरिथ शिवन योरय असानिय
नेत्रन दारि ओसुस अुऽश वसानिय ।।
8. शम्बू ल्वग वननि ही गौरी वनय बोज
अमा मन साविधानिय ग्वड़ करिथ रोज़ ।।
9.गछ़िथ दह सास व्रिये वोथन साध्रब
करानय आसनय सथ संग साघ्य ।।
10. वनिथ क्याह ह्यकि ज़्यव सुमरन करिथ मन
सो जायी श्रूच़ युथ छुय व्यष्णभवन ।।
11. तिहिन्दनय पाद्नि प्रणाम करि म्येय
थोविय करिथ म्य ब्रोंठिय वोनमय च्येय ।।
12. यि बूज़िथ गौरिये आवय असोनुय
हयोतून प्वत फीरिथय भ्रशबस रवसोनुय ।।

13. शिवन द्वोप गौरिये छ्यख बोज़ नादान
चि भ्रख्त्यन हुन्द महिमा छरव न ज़ानान ।।
14.ज़पन छुस नाव यमि सुन्द राथ तय दयन
सु राम्य फेरनय पत् पत् छु भरवत्यन ।।
15. ब वाये वायि अकि दोह वयकुण्ठस चास
वुछुम खऽली स्वर्ग भगवान न तति द्रास ।।
16. वनिथ क्याह ह्यक वापस यिथ छ्यनिथ प्योस
वुछुम पथकुन म्य सुय सन्थन निशे ओस ।।
17. छुयी म्योनुय रूप साधिय सत जन
म्य छिम टऽठी लगय तिँहीद्यन ब् चरराान ।।
18. वनय क्याह भक्ति मानिऽय म्येन्य प्राणिय
करन तिम प्रेयम गँग ज़लय छि श्रान्य
19. तिमन काहं मल न हृदयस तिम छि निर्मल
सरल च्यथ ब्ययि छि उपकाऽरी त न्यशकल।।
20. छु असली रूप म्योनुय योत सोरूय
तिमय गयि स्यद यिमव जोनुय व्यचोरूय ।।
21. करन तिम साऽरिसय मंज ओम ओमुय
परन तिमनिय छि रूम -2 ओंम ओमुय ।।
22.स्यठाह शरमन्द गयि दीवीति बूज़िथ
दुबारह खऽच् सो ब्रशभस ड़न्ढ़वथ दिथ ।।
23. रर्वासथ शम्भूति द्रायि वाऽत्य कैलास
वनान शम्भू अमीसँ दासन हुन्दुय बऽ दास।।
24. बनिथ यलि आव सन्थिय पान भगवान
बले राजस मोन्गुन त्यलि तम्य द्वितुस दान ।।
25. अमा पुशि प्योस तोते अर्ध पाद्य
द्युतुनस जुव पनुन कोरनस न वादि्य।।
26. तुलिथ ब्रह्माण्ड़ऽ प्यठऽ अरव पाद होवुन
दोयुम खोर तल पताल वात नोवुन ।।

27. युथुय ब्रहमा जियस मां ऩजरि सुय गव
छलन बापत ब्रह्माजियन तुजिन दव ।।
28. छलिथं च़रनोदकय च्योन गोस प्रसन्न मन
तवै दोपमय लगय बो सन्त च़रणन ।।
29. फिरिथ बाकी गड्स थ्वव प्यठ कलस म्ये
छु गँगा नाव कोरमुत अथ जलस म्ये ।।
30. लगन साधन हिऽन्द खोर् यतिथिय बोज़्
तिमय छिय बऽड्य तिर्थ शरव त्राव रवोश रोज ।।
31. वोथन ब्येहन तिमन छुय म्योन ध्यान्यि
वुछान तिम म्येय च़्वपऽरी पान सानिय् ।।
32. वुछानय् छिय च़्वापऽरी ग्वरिये म्ये
गछन योत योत त्युहुन्द प्रकरम छु सुयम्ये ।।
33. तिमन छयना समाधी रोजि रोशन
तवै दोपमय लगय बो सन्त च़रणन ।।
34. त्युहुन्दुय रव्योन त च्योन गयि म्याऽन्य सीवा
ब्ययें केंह करनय गयि म्याऽन्य पूज़ा ।।
35. शोंगुन त्युहुन्दुय छुय डन्ह वथ करून म्य
छि कथ तिहन्ज़िय करनि गीथय परन्य म्य ।।
36. निरूद्धुय करन रोस्त छुरव च़्यत निरूद्धिय
तिमन छुय दूर गोमुत काम क्रूधिय ।।
37. यिमय सऽरी छि कर यिमनिय नमस्कार
यिमय दिवव्न्य छि यथ सम्सारसिय तार ।।
38. छि यिम पद्म वथिय यथ भवसरस मंज़
करिथ व्यवहार निर्मल छिय घरंस मंज़ ।।
39. तिहिन्दे दर्शनय पापन बनन नाश
उद्वय गछन्य मञे मंज ज्ञान प्रकाश ।।
40. बनन छय साध संगय सऽत्य मुखती
बनन अटल श्रदावानन छि भाखती ।।

41. यमिस बनि साध दर्शुन तस छि बड़्य भाग
तमिस करनय सोफल गयि तीर्थ प्रयाग।।
42. तम्यी कर्य दान तप ज़फ तिर्थ साऽरी
तम्यी कर्य तिर्थनय हन्दि श्रान साऽरी ।।
43. अकिस सातस ति साधन निशि बेहनस
सु फल छुय यी करिथ तप वरिय सासस ।।
44. बड़्यन पोन्यन हुन्दुय फल साध दर्शुन
दयो गूव्यंदसिय गोछ यी दोहोय द्युन ।।
45. कऽरन सथसंग युस अद सूऽत्य सन्थन
वनय महिमा तम्यस अद कूत आसन ।।
46. करन तिम यस कृपा तस क्या वनोनुय
वुछन तिम शिव च़्वपऽरि जुव छिय पनोनुय ।।
47. गछिथ तिर्थन छु अख फल ज़ीव प्रावन
यमिस सन्थिय छि समरवन तस छु चौगुन ।।
48. वोनुस गौरी दोयुम सन्थय कथा वन
स्यठा गोम पाऽद प्रेयम छस थविथ कन ।।
49. वननि ल्वग गौरिये कुन पान शम्बू
सुऽदुर कल्याणकुय युस छुय सु शम्भू ।।
50.भरत रवन्ड यमि स्न्दे नावुक छु यथ नाव
वनय बिलकुल छोटुय कथ वार कन थाव ।।
51. भरत राज़स यले वैराग आव्य
सु संथन साधनय छारान द्राव्य ।।
52. यछ़ा असऽस मनस मंज ह्यम ब वोपदीश
तमी अम्य सन्कल्प किन कृत्य छ़ंऽडिन दीश ।।
53. दोह अकि वातनय वोतुय तपो वन
वुछिन अति रंग रंगय साध सथ ज़न ।।
54. वुछिन यूगी मुनीश्वर ब्रह्मचऽरी
वुछिन मन्ड़ेजि साधन हिऽन्ज़ च़्वपऽरी ।।

55. अजब ईकान्त यामथ नज़रि आसिय
मनन योछ नस करून ग्वछ़ यति निवासिय ।।
56. वुछिन गंगा वसान बोलान शिवय शिव
स्यठाह रवोश गव भरथ राज़स वुछिथ जुव ।।
57. वुछिन ल्वग गौर यिमन मंज कुस ब धारन
भारथ राज ओस मनस मंन्ज़ीय व्यचारन
58. शरन गछि 2 प्यवुय सारिन परणिय
नेत्रन ड़ाल नय सन्थय च़रणिय ।।
59. वुछुन अन्द कुन यिमन मंज अरव छु साधा
अलोक्यक अऽच़्छ मुच़रिथ यस समाधा ।।
60. स्यधय यूगी ज्ञानी वीद् वानिय
जित्येन्द्रय शान्त रूप शूभाई मानिय ।।
61. तिमन चरणन मलन आऽस्य ज़नि जोरा
भरथ राज़न युथुय वुछ तुजिन दोरा ।।
62. द्युतुन प्रराम बारम्बार अति नस
थोवुन सत संगसिय अति कन लोगुस रस ।।
63. ग्यवान अऽस्य विज़ि 2 भक्ति अमृत
युथुय ती बूज़ भरथन तस गयी सथ ।।
64. वथित चररान कोरून प्रणाम ब्ययि तम्य
शरण गछिथय परण प्यव वोन यि अदतम्य ।।
65. जन्म कऽत्या गयम मे तोहि छारान
म्य लभिमव अज़ वोअ कहिताम कहि ताम ।।
66. छिवना तोहि दीन बन्धो ज्ञान सागर
दया दृष्टी करिव तोहि वरिव म्य इश्वर ।।
67. शरन आस भक्ति वत्सलो कृपालो
अनाथस प्यठ दया करतो दयालो ।।
68. यि बूज़िथ तस गोरूव दित मटि मटे
दपूहस केन्ह न फिक्रा असि च मटे ।।

69. प्रणामा दिथ भरत जी रवोतुय जंगल
अनिन फल फूल तुलसी पूज़ि कित ब्यल ।।
70. करिथ आव सू गँग ज़लय श्रानय
अथस क्यथ अर्ग पोशी ब्यल पानय ।।
71. गोरु पादन निशे थऽविन कोरून म्यूठ
करिथ प्रराम गुलि गन्डिथ पथर ब्यूठ ।।
72. छिना सथगरु दयाये हिऽन्द निधानिय
भरत भक्तिस द्युतुख सथ नाम दानिय ।।
73. गोरव पानय मुचि़रिथ थोवुस तोरूय
दोहय दोपहस करून क्या गछि़ ति सोरूय।।
74. गछि़थ केंह दोह त्रिबीनी तिर्थ आविय
करनि लऽग्य सरवर लऽग्य बरनि चाविय ।।
75. गछनि लगि साध ग्रहस्ती यात्रायें
तुलिक डेरय पत्यकिन ह्यथ ति द्राये ।।
76. भरत राज़नि संगी गयि अज्ञन्याये
गछ़व असिति गोरन मंगनि आये ।।
77. गोरव दोपहरव अच्छा गछिवस्यठा जान
करिथ प्रराम गोरन तिम द्रायि दोरान ।।
78. भरत जी पान ब्यूठ सीवायि बापत
मलिनि लोग् गोर पादन अज्ञन्या ह्यथ ।।
79. वोनुस ग्वरनिय चऽ कोनो गोरव भरथो
अम्युक कारण छु क्या प्रिछनिय छुसय बो ।।
80. भरथन फीरिथय दोप ही भगवन
समिथ तिर्थय छि यति नस तुहुन्दि चररा ।।
81. यि बूजिथ कोर ग्वरऽव भरथस शाबाश
बनी न्वन बोज़हन्द्विन नेत्रन च्य जल गाश ।।
82. गोरव भरथस वोनुय वोअ बेह च न्यबर
फिरिथ थऽविज़ि च पत कुटियायि हुन्द बर ।।

83. बऽ कर् आराम चि़ऽ गछु फेर या न्यबर बेह
करी रवोश यरवतियारिय करत छुय रऽछ ।।
84. करिथ प्रराम भरत भक्तन्यबर द्राव
वनय कोताह मने मंज़ ओस तस भाव ।।
85. फिरिथ बर थोव तम्य कुटियायि हुन्दुय
त्युथुय ब्युठ्य युथ रूज़िस नज़रिय ।।
86.गछि़थ पहरा प्रदूशे सात भरथन
वुछ्यन घुरिनिय् प्यठिय त्रिय तार दोरन ।।
87. स्यठाह मलीन वुछनरव नाऽल्य वस्त्र
कनन ज़ेवर क्रहुन ज़न ओस शस्त्र ।।
88. स्यठाह मोकुरूय वुछिथ गयि तसति नफरथ
भरथन नय कर्ं नय कर् यिमव कथ ।।
89. गुर्यव प्यठ वोठ् छि़न्यख नन वारि आये
ज़ने त्रेशवय तिमय कुटियायि चा़ये ।।
90. अचि़थ अन्दर कोरूरव कुटि यायि बन्दबर
मलनि लजि सन्त चररान द्रावखिय शर ।।
91. भरथस गव यि शरव क्याहताम छय कथ
अचिथ बर बन्द यिमवि्य क्याजि़ कोर अथ ।।
92. भरूथिय वुछिन ल्वग यिम नेरनिय कर
गछि़थ पहरा न्यबर तिम द्रायि सोन्दर ।।
93. नज़र यामत प्यस मुचुरूय तिमव बर
भरत मनसिय अन्दर ल्वग करनि आश्चर ।।
94. वुछिथ भरतस यिमय गयि अकल तसदन्ग
वुछुन आश्चर युहुन्दुय रूप तय रंग ।।
95. स्यठाह तिम रूप वानिय तीज़ भरिथिय
मनोहर क्या सोन्दर पैराव करिथिय ।।
96. भरतस आव द्यमाग सपुदु मोहतर
पकन तिहिन्दे हरन ओस मुशिक अम्बर ।।

97. रवसिथ त्रनवय गुर्यनय दोर त्रऽव्ख
भरतस बुथ पनोनुय वार होवुरव ।।
98. यिथय पाऽठ्यन वुछुय भरतन पगाह ती
वुछुमत काल ओसुस आश्च़र यी ।।
99. तिथय पाऽठ्यी तिम आये त द्राये
भरथिय ब्ययि अज़ अद रूद जागे ।।
100. युथुय तिम द्रायि गुर्यनय रवसनि लजेय
भरथन थप कर्ख पत्य किन करिथ जय ।।
101. भरथस क्वर तिमव फ़ीरिथ जय कार
भरूथ ल्वग प्रिछिनि तिमनिय वुछिथिय वार ।।
102. दोपुनरव नाव क्या छुव तोहि माता
दोपुस गँगायि छस गँगा यि जमना ।।
103. यि छय माता सरस्वती त्रेयिम ज़ऽन्य
म्य नय रवटिथिय थऽविय काहं कथ वनी नऽन्य ।।
104. भरथन याम बूज़ क्वरनरव प्रराामय
भरथ राज़य व्यच़ारनि ल्वगयि तामय ।।
105. दोप नरव योर तोहि आयेव क्याज़े
मनस मंज छ्यम गमिऽच़ अरव शंरवाये ।।
106. तुहुन्दुय रूप ओसुव ब्रोंठ मोकरूय
वुछन छुस ओर नीरिथ आऽन नूरूय ।।
107. अम्युक कारण छु क्याह माता वनिव जल
सथिय वनिज़्यम त केंह वनिज्यम न छल बल ।।
108. यि बूज़िथ त्रनवय लजय असन्ये
वनानिय अद लजि गुरिनिय खसन्ये ।।
109. भरथो भ्रम च़्य गोमुत छुय मनस भंज़
छि किथ तिम संकल्प नारायणस मंज ।।
110. भरथो मन च़ कर ग्वड़ साविधानिय
च़्य क्याह गोय भ्रम चि़य अऽसिथ विद्वानिय ।।

111. त्रिबीनी तिर्थस लगि मिऽत्य त्रे दोह वऽत्य
छि तोत आमत्य स्यठाह अज़ पऽपीय यऽत्य ।।
112. स्याठह र्त्य आयि भरिल्त कांह नयपूर
करिथ पाफिय न ह्योक हय सोनुय दूर ।।
113. तवय यिहन्द्यन चरणन निशि अस्य वऽत्य
अज़िकिस समयस पूर्ण यिमय याऽत्य ।।
114. अगर यिम त्योत् यिहन असि त्यलि न युन ओस
अवय योत यिथ असि सन्कल्पिय कोस ।।
115. स्याठह तोत आयि पऽपी कोरूरव श्रानिय।
छलिथ मन प्राण व्यज़ पाऽठ्य द्युतुरव दानिय।।
116. तिमन च़लि सानि श्रानय पाप साऽरी
तिमय असि लग्य त अस्य संऽपनि विकऽरी ।।
117. छिनय यिम पाप तोत तामथ हरऽणिय
न योत तामथ लगन सन्थय च़रणिय ।।
118. तवय असि सन्थ चररान आय शरणे
हिऽरिनि लोग तीज असि पापिय हरने ।।
119. लगन यामथ छि़ तिर्थस साध चरणिय
बनन निर्मल सु अद पापय हरनिय ।।
120. छि सऽरी पाप सऽनिय तिम ह्यवानिय
मगर सन्थन न यिम केंह छिय करानिय।।
121. छि यिम रोजान हवालय ईश्वरसिय
छि वऽतिथ ईश्वरी सुय ज़र ज़रसिय ।।
122. छु र्कमुक फल दिवन सुय पान ईश्वर
यमिस यी वाति दी तस ती बराबर ।।
123. करन यिम साधनिय हन्ज़िय छि न्यन्दा
छि यिम पापिय रवसन अद तिमनिय क्याह ।।
124. छि यिम सन्थन त साधन ग्येलन्य बोज़
यिमय पापयतिमनिय मेलनय बोज़ ।।

125. करन निन्द्या दिवन साधन छि पामय
तिमन क्युत ईश्वरन थोव यी यनामय ।।
126. ह्यडन असनिय कडन् ब्रेड यिम छि साधन
रवसन पापिय तिमन यिम बारि थव कन।।
127. भरन भाविय करन तोता छिसन्थन
तिमन सन्थन हुन्दुय पोन्य फल छु मेलन ।।
128. न सन्थन छिय पुऽण्य तय पाप रोज़न
वुऽनुय असि प्रेयम किन्य छुरव कन च़ थावन ।।
129. यमिस सन्थन हुन्दुय योत भयि च़ाविय
सु सन्थय दीवकिन्य तस ब्रूठिं आविय ।।
130. वनानिय यी तिमय त्रनवय द्राये
गये तिम तोत यति प्यठ ब्रोंठ आये ।।
131. भरूथ ल्वग दपनि हय हाय हाय हाये
यि क्याह क्वर म्य यि क्या बुऽज़ गोम वाये ।।
132. गरू न्यर्मल छि मनसिय क्याह गयम राय
मनस मन्ज़िय गोरय न्यन्दा करिम हाय ।।
133. म्य पानय नरकसिय मंजिय करम जाय
ज़िन्दय भ्वर वाति ज़ालुन यीछु उपाय ।।
134. वनन शास्त्र छु प्रायाचित अम्युक यी
ग्वरय निन्दा करवुन पाानऽ छुय ।।
135. भरथ जी पातकी ओस पन्डि़थ पठ्यथिय
सुज़ानन कथ कथय क्या वातनिय छुय ।।
136. रवसिथ जंन्गल अनुक ज़्युन कोरूरव अम्बार
द्वोपनय ज़ाल पान्य कोरूरव व्यच़ार ।।
137. ग्वरस ग्वड़ अज्ञन्या ह्यथ गछि़ युनुय
तवय पत पान ज़ालुन पज़ि करोनुय ।।
138. नतय रवसि दूशसिय प्यठ ब्यारव अपराध
दवन 2 ग्वरस निशि गव रटिन पाद ।।

139. वदन 2 ग्वरस वोननय वृतॅांतथिऽय
दियव आज्ञा म्य पानिय ज़ाल वोन्य बिऽय।।
140. ग्वरन दोपनस भरथो छुरव च मुखिर्य
करन कोनो छुरव व्यचार केंह चऽय ।।
141. तिर्थ सपुद ब्ययि म्यानि दंशनय शोद्व
च्य कति छिय पाप वोन्य ती कोन छय बोद्व ।।
142. भरथन याम बूजुय आव तस होश
दवन 2 चररान लाऽग्यनख पोश ।।
143. दिहय जालरव यि दिह छा च्योन वनतम
भरथो क्याह गवुय अथ वुनि छुया भ्रम ।।
144. मनन क्वर पाप दिहसिय कथ च्य पुशरूथ
चि़ऽ नय दिह मन च्य क्याज़े पान मशरूथ ।।
145. चि़ऽ छुख न्यर्मल करिथ क्राऽविथ ति सोरूय
अहंकारय किन्ये रवोतमुत च्य बोरूय ।।
146. अहंकार त्राव त्रावुन गव हतो यी
न ज़ानोनय जगथ गछि़ नय चि़ऽतय बुय ।।
147. परे छ्यन भाव त्राव प्राव ब्रह्म भाविय
शिविय ज़ान पान सानिय प्रथ हवाविय ।।
148. योहय निशचय चऽ दर कर बा व्यचारय
छु आत्म न्यर्विक्लपिय त्राव विकारिय ।।
149. भरथ बूजि़थ बन्योवुय निर्विक्लपिय
बन्यव ज़ीवन मुक्त दवन दवानिय ।।
150. धर्मराज़न यमय दूतन वोननय
समय भरथस छुय वोन्य गछि़ अनोनुय ।।
151. धर्मराज़नि कलमय केंह दीतव
टिकानिय गयि ज़ि़ भरथुन ज़ीव अनव ।।
152. वुछुरव अन्दरय तन्यबरय शिव सुगोमुत
बऽछुस भरथुय अम्युक अभिमान प्योमुत ।।

153. वुछिथ यी आश्चरस यम दूत सँापिन्य
लगी पोत 2 चलनि ह्यतिहय कँाऽपिन्य।।
154. तिमव वोन क्याह हावव धर्म राज़स
छु यति सोरूय शिविय वोन्य क्या वनवतस ।।
155. कड़ोनुय कुस निमोनुय हाय तोरूय
अन्दर न्यबर बन्योमुत शिव यिसोरूय ।।
156. गयि यम दूत शच्छ हयथ धर्म राजस
तोहे महाराज अऽस्य सूजिव निशि कस ।।
157. भरूथ नय नाव मात्र तान्य ति तोरय
बन्योमुत अन्दर न्यबरय शिव सोरुय ।।
158. वननि लग्य धर्म राज़स यम केंकर
च़ली चूरे वुछिथ सुय चायि थर थर ।।
159. चि़ या मारख जि़ सन्त तय साध साऽरी
तिहिन्द उपदीशनिय यिम जीव ताऽरी ।।
160. करन उपदीश छिरव आत्म ज्ञानिय
तवय तिम च्यति असि छिय बुथ फिरानिय।।
161.लगन यिमन छि सन्थन हिन्द चरणिय
बनन निर्मल तिमन छिय पाप हरनिय ।।
162. करव क्याहअऽस्य चि़ क्या कऽरख तिगनिय
जि़ सायस सन्त सथगरू छिय यिमनिय ।।
163. करव क्या असि सन्थन निशि न केंह ह्योक
सिर्फ असि दिह अभिमानी अनिथ ह्योक ।।
164. धर्म राज़न वोनुरव बूज़िव थविव कन
न गछि ज़ाह तोत गछुन यति आससथ ज़न ।।
165. तमी सातय बिऽ ते गौरी तोतुय गोस
सिक्षम दृष्टी किनी वुछमय स्वरन ओस ।।
166. बछुस सोरुय कुनुय चीतन दीवय
छुसय सारी निशे अतीत ते बिऽय ।।

167. मनुक धर्मिय कथन च़्यनतन छु सोरूय
ब चीतन अमिति निशे छुस अतीतिय ।।
168. अतीथय अमिति निशे छुस अतीथिय
वनन पानस सुयी ओसुय म्य वुछमय ।।
169.म्य वोनमस ही भरथो धनि च़्य धन्य धन्य
स्वरूपस पननिस छुरव म्यूल मुत वोन्य ।।
170. भरथन ओर असुना छुनिथ वोननम
म्य मन्ज़ म्यलुन न म्यलुन छा च़्य छुय भ्रम ।।
171. छु मायाये त दृशस मंज यि म्येलुन
म्य च्याऽनिस अन्दरनय पज़ि च़्ये तेलुन ।।
172. म्य वोनमस यलि चि़य चीतन सोरुय
त्यले चि़य दृष्य अदृष्य म्यलुन न म्युल छुय ।।
173. भरथस छोंप गयि गव न्यविकल्पि
अवस्था तस बनेयी क्या वनय बुय ।।
174. म्य त्व पतय दोयि लटि वोनुस भरथो
चि़ऽ वन कुस छुरव म्य प्रिऽछानिय छुसय बो ।।
175. यि बूजिथ भरथनिय तमि विज़ि न केंह वोन
तमी विज़ि भरथ भाविय तस निशे छ़योन ।।
176.गछ़िथ केंह काल वनने ल्वग छुआश्चर
छु पानय शिव प्रिछ़न पानस कथय कर ।।
177. म्य वोन मस ही भरथो च़्ये निशे आस
चि़ऽ कर आत्म निरूपय शख म्य चि़य कास ।।
178. म्य निशि गछ़ दूर वोन भरथन फीरिथ
अवाचे़ पद सुज़्यवि किन ह्यकि न नीरिथ ।।
179. दोयुम कुस छु म्य भ्योन युस हावनय बुय
बऽ यमि रूपय छुसय चीतन गणिय ।।
180. वनन यी गव भरूथ ब्ययि मंज़ समाऽज़िय
सुगोय मंज़ त्राविनय सारय्य उपाऽज़िय।।

181. विद्व मुक्ति ति प्राऽविन परम पदवी
वनी तम्य सिऽन्ज़ कथिय पानय म्य वुछ थिय ।।
182. शिवन दोपनस ज़ि यिम सन्त आश्चरी छिय
स्यठाह प्रसन्नयि बूज़िथ गयि सो गौवरी ।।
183. दोपुस दीवी म्य वनतम वार पाऽठ्यी
छि किथ तिम आसविऽअ यिम च्याऽन्य टाऽठी ।।
184. शम्बू नाथन वोनुस फीरिथ वनय बोज
अमा ग्वड् साविधानिय मन करिथ रोज़ ।।
185. स्यठाह दुर्लभ छु प्रज़नावुन भरव्त ज़न
वनय किथ आसविऽन्य छिय तथ च थव कन ।।
186. अमा बोज़ तोति केंह तिहिन्दी चि़ऽ लक्षण
करन उपकार रात्रद्यन छि सथ ज़न।।
187. ग्रहस्ती आसनय या तिम व्यरक्तिय
म्य निशि दोनवय हिवी छिय तिम ज़ भक्तिय।।
188. करन उपकार साधन पननि वाँऽसे
दिवन तिम सारिनिय सोरव दोरव न काँऽसे ।।
189. तिमय गयि साध यिम पर उपकाँऽरी
तवय वोनमय लगख बो पाऽर्य पाऽरुयी ।।
190. तिहुन्द हृदय छु रागय द्वेष रोस्तुय
दयाये हन्दि न्यधानिय ज्ञान सोस्तुय ।।
191. उद्यूगी आस विऽन्य तिम छिय जित्यन्द्रय
करन ज़ीवन सतुक उपदीश निर्भय ।।
192. सहज़ यूगुक अभ्यासी तिम छिसाधिय
उतम यूगी तिमय गयि थव चि़ऽ यादिय ।।
193. यिमय सन्थय छि छुख सरल सोभाविय
छु भख्ति वत्सल्य अद युहुन्द नाविय ।।
194. महागम्भीर च्यथ निर्मल छु साधन
तवय वोनमय लगय बो सन्त चरणन।।

सन्त कथा का
दूसरा पाठ

उँ

195. स्वाभावस पननिस तिम ज़ांहनऽ त्रावन
दिवन स्वरव सार्यनिय योद दुऽ:ख तिप्रावन
196. तिमय गयि साध यिम निर्वासना छिय
तिमन सोरूय पनुन जुव भास्निय छुय ।।
197. करिथ अष्टांग यूगिय ज्यूनमुत मन
तवय दुऽपमय लगय बोसन्त चरग़ान ।।
198. सतुक भापन दोहय छिय तिमं करानिय
तिहिन्दि दरशनय दुऽ:ख छुय हरानिय।।
199. तिमन च्यथ थ्यर सपिदमित्य निर्वासिय
तिहिन्द नज़रि मंजनय द्रयतुक भासिय।।
200. छि निर्भय लूभ रोस्तुय मुह रोस्तुय
करान न्यशकाम कामे प्रेयम सोस्तुय ।।
201. महा उतम मनोरथ धैर्य वानय्
छि न्र्यमल च्यथ सन्त शुभायि मानिय ।।
202. तिमन निश छय त्वतान्यंदा बराबर
तवय दुऽपमख कृपा कर वोन्य कृपा कर ।।
203. स्यठाह तरनुय सरव्त संसार सागर
अखिय कर नोव तारवुन संत सथग्वर।।
204. स्यठाह छिम टाऽठय सन्त तय साध 'सतजन
म्य तिहन्दे लोल क्यथऽ छुय न्यूमतिय मन ।।
205. ब् छुस यथ बुरज वारे थऽविथऽय कन
न ज़गतस मंज़ न् आकाशस ब् वातन।।
206. अमा वोतुस ब् भक्तन मंज़ मनसिय
तवय वोनमय चिऽ जल गछ दर्शनसिय ।।
207. म्य यस दर्शुन द्युतुय तस संन्त रूपय
अगर वुछहन सन्तिय छुय प्रत्यक्ष दय ।।

208. यछा यस आसि म्याने दर्शन ची
गछिन सन्तन निशे ब् आस् ततिथिय।।
209. छनय म्येऽन्य जाय वैकोन्ठ नय् छि कैलाश
छुसय आसन ब् तति यति छि म्येऽन्य दास।।
210. उदासय दास आसन छुसय उदासिय
मनन तिहिंद्यन अन्दर छुय म्योन वासिय ।।
211. वोनुस गौरी क्या वुन्य क्यन ति कांह छा
म्य तिहन्दे दर्शनची सख छि काँक्षा ।।
212. स्यठा गोम पाऽदऽप्रेयम क्या वनय बो
ब् चान्यन सन्तनिय चर्णन लगायो ।।
213. शम्बू नाथन वोनुस कृत्या छि वुन्यक्यन
यंछायलि छय त परव कर त्युंहन्द दर्शुन ।।
214. तुजिन गौरी ति ह्यथ वाऽतय तपोवन
लोगुस हाऽिवन्य दूरे साध सथजन ।।
215. गंगा बठिस प्यठ वुछ तिमव जि़ साधिय
वुछिन गँगय ज़लस त्रऽविथ समाधिय ।।
216. वुछुन सुय सिद्व दाऽरिथ स्यघ आसन
जितयंद्रीय उपकऽरी निर्वासन ।।
217. वननि लऽज्य शंभूहस कुन पान गौरी
दियिव तोहि अज्ञन्या म्य ही प्रभू जी ।।
218. अमिस सादस कर्य बो इम्तिहानिय
च् छुरव सन्तन हुन्दुय महिमा थ्यकानिय ।।
219. वुछय बो सथ असथ छा च्योन वननुय
छि त्या यिम तिथ जि़ यिथ तोहि छिव
थ्यकानिय।।
220. शम्बू नाथन वोनुस अच्छा स्यठाह जान
परीक्षा यलि करन्य छय कोन करान ।।
221. यि साधिय छुय स्यद्ध पर उपकऽरी
स्यठाह चालुन अमिस स्यठा छु आऽरी ।।

222. अमिसपनुन गरज़नय काँह रव्यालिय
अमिसुन्द नाव आसवुन दीन दयालिय।।
223. यि बूज़िथ दीवी बनोव व्युच शरीर्य
दिच़न व्वठ मंज गंगाये वऽछुस्व यीर्य ।।
224. कोरनय आऽखिथिऽय रवसनुक वोपाई
गंगाये मंज सो साधस कुन हा आई ।।
225. वुछिथ छ्ट -2 बिचस्न्ज साधनिय व्वद
त्युथय बे यखतियारिय गव वथित थ्वद ।।
226. दिथय थफ साधनिय रवोरूय बठिस प्यठ
दिच़न साधस अथस टवफ ब्ययि दिच़न व्वठ।।
227. युथय साधन वुछय प्यव मंज गंगाये
दुबारय रवोरूनय कम्य प्रेयमय त् मायें ।।
228. यिथुय रवोरून त्युथय तम्य तोरनस दन्द
अथस साधस तिथुय लज्य वोथनि दुऽर्गन्ध ।।
229. हनिथ गव साधसिय अथ् तथ वछ़ऽस दग
दुखन्य लग्य तम्य्स प्रथ कांह अंग अंग ।।
230. शंम्बू आव रूफ बदलिथ वोनुन साधस
हतो मुरर्वो चि़ऽ प्रेयम छुरवकरान कस ।।
231. म् रवारून ब्युच यि छुय ज़हर भरिथय
अमिस्न्जि टवपि स्त्यन गछुरव मरिथिय ।।
232. अम्य सुन्द छुय स्वाभविय दन्द तारून
हतो साधो च़्य क्या गोय ब्वठ म् रवारून ।।
233. छुनुस साधन फीरिथ ओर् असुना
स्वभाव यलि अम्य न त्रोव त्यलि क्या ब् त्रावा।।
234. अम्य सुन्द स्वभाव प्रथ कँऽसि च़्वप द्युन
मगर वात्या म्य तौपत प्वत फेरून ।।
235. पर उपकार खऽत्र दी प्राण तामथ युस
आसि साध तस निशि छायि कांह कथ ।।

236. त्रेयमि लटि लाऽय बिच ज़लस मंज़ व्वठ
युथुय साधन वुछ तम्य रवोर जट पट ।।
237. कोरून न् परवाय दाद्युक तम्य अथकुय
दयावानन वुछिव क्युथ छू स्वभावय ।।
238. जल्द दोरूय दीवी रूप पननुय
चरणन प्यठ पेयस ह्योतनस वननुय ।।
239. बिऽछऽस गौरी गयस रव्वश केंह चि म्य मंग
मोंगुस साधन दोहय संतन हुन्दुय संग ।।
240. स्यठाह गयि रवोश स्व दीवी द्युतनस दर्शुन
वुछिथ साधन स्यठा ह्योत नय हर्शुन ।।
241. द्युतुस दर्शुन शिवन तय साध रव्वश गव
चर्णन प्यठ वदविऽन्य भावकिऽन्य प्यव ।।
242. त्वता ल्वग करनि परने भाव सानिय
ति बूजिथ रव्वश सपुद शिव शक्ति मानिय ।।
243. दोपुस शिवन च कोनो केंह मंगानिय
मोंगुस साधन दितम म्य भक्ति दानिय ।।
244. सन्तय समागम खोत क्या
हीदयि च्यानि प्रेमय ख्वतऽ क्या।।
245. मंगुन भगवन छुम कीवल
हृदय बोद्ध म्येन्य करतह निर्मल,
शीतल न्यशकल शम खोत क्या।। ही दयि
246. ज्ञन्यान सिर्ये रूप हावतम,
हदयुक पम्पोश फोलरावतम।
ओम ओम बोज़नाव ओम खोत क्या।। ही दयि
247. जन्म जन्म आसुन बऽ चोनुय दास,
खुश आस च्वोपऽरी चई म्य भास,
कास्तम मोह ठोर भ्रमह ख्वतऽ क्या।

248. वासना क्षय मनोनाश करतम
ज्ञान दिम पननुय लोल बरतम
वरतम पननि आत्म ख्वतऽ क्याह ।।
249. अथ ज्योति रूपस करहऽय गथ
बोज़नावतम सार-धुनुय न्यत
सत शब्दिकि ज़ीर-बम ख्वतऽ क्या।। ही दयि
250. अख दयायि भऽरिथई नज़रा म्ये त्राव,
दुय दूर कऽरिथिय लोल बऽड़राव
लोल ललनाव सूहम खवतऽ क्या। ही दयि
251. सहज़ समऽज़य मँज़ म्य थाव, सम शाँति अमृत
चि़ऽय म्यति चाव,
मोकलाव यम भय गम खोत क्या ।। ही दयि
252. कर चान्यन चरणन हुन्द ध्यान, तथ अन्दर लय
कर म्योन मन त् प्राण
दिमदान संतय क्रमह खोत् क्या ।। ही दयि
253. बऽनिनय ती वनन द्रायि शिव त्शक्ति
बऽनिनय ज़न्म ज़न्मय साऽन्य भक्ति ।।
254. वोनुस शिवन थिथी छिय साध साऽरी
तवय वोनमय लगरव बो पाऽर्य पाऽरी ।।
255. वुछुत पानय कमन वनन छि साधिय
चलिय यी शख करख मां वोन्य च् वादिय ।।
256. दोपुस दीवीम्य वोञ पछ़ वार आयम
मनस मंज वोञ सपद्योम ज़्यादऽ प्रेयम ।।
257. गयस रव्वश वोन्य लगरव बो पाऽर्य पाऽरी
म्य हाव तख टाऽठ्य पननी साध साऽरी ।।
258. अस्वन्य म्वरव् तस राज कोमारे
वोथुस प्रेयमय सीऽत्य उवश दारि दारे ।।

259. शिवन दोपनस वोदय सपुदुय च़्य लोल्य
वनिनि ल्वग गौरिये भविनय च्य जय-2।।
260. स्यठा गव मंज हर्षस शिव शंकर
नचनि ल्वग ताल मारन्य सुय दिगम्बर ।।
261. दोपुस गौरी साधन क्याजि़ न केंह म्वंग
तम्य क्याजि़ म्वंगनय सन्तन हुन्दुय संग ।।
262. मोंगुन नय परिलूक यरि लूरव न् मुक्ति
च़्य वोनथस नय मंजिन केवल भखती।।
263. बजर क्या ज़ोन अम्य अथ मंजति वन्यतौ
वोनुस शिवन अच्छा च वार् कन थव ।।
264. प्रेयमस ह्युव न् कुनि छुय रस त् ज़ोरूय
प्रेयम यस तस स्वता स्यध मेलि सोरूय ।।
265. छु भक्ते मार्गय स्यठा सुगम
छुनय सुज्ञान योग्य ख्वत केंह कम ।।
266. प्रेयम यस पूर सू मन्जूर सपनुय
हतय गौरी उत्तम प्रेयम छु मंगनुय ।।
267. प्रेयम परमात्मा छुय सोन जुवुय
दोयुम कांह चीज़ नय छु अथ ह्युवुय ।।
268. प्रेयम यस तस सु भगवान अथि आविय
प्रेयम यस तस तमना वार द्राविय ।।
269. प्रेयम यस तस त्वता करान छि यमिय
प्रेयम यस तस च्वलुय सोरयगमिय ।।
270. प्रेयमस युथ स्वरूरिय त्युथ न कुने
प्रेयम यस तस छुय दय ब्रोंठ कने ।।
271. प्रेयम भन्डार नाविय तथ छु शिविय
प्रेयम सारिनिय हुन्दिय छु जुवुय ।।
272. प्रेयम छुय रिवचान भगवानसिय मन
तवय भखती मंगान छिय सन्त सथजन ।।

273. स्यठाह राधायि टोठ ओस कृष्ण भगवान
कथा तिहन्ज़िय वनय च्ये वार थव ध्यान ।।
274. युथुय गछ़ि लोल आसुन गछ़ि मंगोनुय
प्रेयम सीऽत्य मन त् प्राणा गछ़ि ग्वड रंगोनुय ।।
275. वोनुस गौरी वनिव ब् छस थविथ कन
थविथ छस सावधानिय ओर कुनुय मन ।।
276. सदा शिव जी वन्नि ल्वग ही भवानी
प्रेयम यिमन्यि तिमय गयि टाऽठ्य म्यन्यी ।।
277. कृष्ण भगवान ओस मंज़ द्वारि काये
विनती करनस दोह अक्य राधि काये ।।
278. दियुव तोहि अज्ञन्या मथरायि गछ़हा
यछा छम म्य तति वुछहा ब लीला ।।
279. नगर या तोहि यियिव नत ह्यक न् गछ़ि थिय
च्य रोस अकिसिय क्षणस नय ह्यक दरिथिय ।।
280. वोनुस श्री कृष्ण भगवानन अच्छा गछ़
ब् छुस च्यय मंज़ मनस च़्येय सीऽत्य थव पछ़ ।।
281. युथुय बूज़ुन करिथ प्रणाम स्व द्राये
प्रेयम सानिय मंज़ मथरायि चाये ।।
282. करी तस गुपियव तति नाल मती
करनि लजि पान वऽणी प्रेयमहती ।।
283. रुक्षमन्य द्वोध ओननस ब्रोंठकुनुय
ह्युतुन त्वत द्वोध तस् राधायि च्वनुय ।
284. युथुय तमि राधायि त्वत द्वोध च्यव
ह्यदयस मंजसु यख्दम वाऽतिथय प्यव ।।
285. तमी दुऽह द्वारिकाये आयि रूखमन
प्रेयम सान लऽज्य छलने कृष्ण चरणन ।।
286. युथुय लज्य छलनि पादन बस्त वुछुनस
लजी प्रच्छुने अम्युक कारण स्व कृष्णस ।।

287. वोनुन कृष्ण माहराजस दस्त बस्तय
यि किथ कन्य चरगा कमलन खचैंव बस्तय ।।
288. वनि ल्वग रूक्षमने सु कृष्ण भगवान
अम्युक कारगा वनय टाठी च थव ध्यान ।।
289. छुसय राद्यायि टोठुय जुव रव्वतय बोज़
च्य त्वत द्वोध चोव्थन राधा हत्य बोज़ ।।
290. तम्यस ह्यदयस अन्दर छिय म्यान्य पादिय
मोठुय न् ज़ाँह ति तस प्रथ सात यादिय ।।
291. दितुथ त्वत दुऽध तमिस यामथ तम्य च्यव
सुम्यान्यन पादनिय प्यठ तमि विज़ प्यव ।।
292. म्य खऽचम्च् बस्त छम तवय चरणन
यि बूज़िथ आश्चरस गयि स्व रूक्षमन ।।
293. तिथय पाऽठ्य छिय तसन्दि पाद मंज मनस म्ये
छु क्युथ प्रेयम म्योन तस छयना रववर च्ये ।।
294. यि बूज़िथ पछ न् रूक्षमनि आयि वारय
ओनुय तम्य त्वत द्वोध करिथ दुबारय ।।
295. ह्युतुन श्री कृष्ण भगवानस सु तम्य च्यव
परीक्षा करन् बापत तुज्य रूक्षमनि दव ।।
296. युथुय मथरायि अन्दर वाऽच् स्व दोरान
वुछुन राद्यायि खऽचम्च् बस्त् रवोरन ।।
297. स्यठा शरमन्दऽ गयि फीरिथस्व आये
शरण कृपासस्व गयि मंज दारि काये ।।
298. प्रेयमस ज़ोर वुछतव कृत छु आसन
युथुय प्रेयम म्योन छुय म्यान्यन दासन ।।
299. अवय संतव मोंगुय सन्तन हुन्दुय संग
वनय अथ प्यठ कन थव बोज़ प्रसंग
300. महा पुरुषिय अलौक्यरव ओस साधा
मनो व्यथ ओस स्यध आसऽस समाधा ।।

301. त्रिकाल दृष्टिय ओस मुतुय सुय
तम्यसिन्ज अरव कथा अथय्ठ वनयबुऽय।
302. पकान ओसअक्य दोह प्रेयम सान्य
दयस प्रेयमय मंगान्य ब्ययि ग्यवानिय ।।
303. वुछुन पत-2 पकान पानस मनोष्या
वुछन पाऽपी तमिस आऽस पाप दशा ।।
304. महा क्रूधी कुटिल लूभी त् दम्बी
दया आयस लोगुस सुय साध वुछनी ।।
305. दोपुस साधन हता टाठ्या गछरव क्वत
चि पख म सीऽत्य करुव कथ ब्ययि वनय
हयोत ।।
306. च्य जन्मस यिथ कोरूमुत छुयन केह ज़ान
वनय कोताह च्य छय रंगऽ रंगय हान ।।
307. वेनुस दुष्टन यि फीरिथ परव चपानस
दमिय येऽत्यन दिनी क्या भगवानस ।।
308. थ्यकन यलि छु त् त्यलि ओरयम्य वन तम
म्य किथ पाऽठ्यी मरून कमि दुऽह नियम यम ।।
309. करस् सन्तन दयाये हिन्ज नज़ऽरि
कोरूय ताम नजरि तम्य सन्ज़ि तस असऽरिय ।।
310. त्युथय दुष्टस मनस मंजिय व्वप्द्याव
त्युथय दुऽष्ट बुद्वी तम्य वक्त तम्य त्राऽव।।
311. विनती करिथ व्वननस ज्यूलि तुल बिऽय
छु वुनिक्यन सखा गर्म थ्वकमुत छुखिय चिय ।।
312. दिचिन साधन सोज्युलि गयि कथ करानिय
पकान केंह दूर गयि तिम लोल बरानिय ।।
313. दोपुस साधन गछिथ सथ दोह मरून च्ये
गछि माऽल बन्द हयवि अन ज़ल ख्वरून च्ये ।।

314. करी कल द्वोद कालय ब्ययि पक्कीरथ
त्युथय गछि ज़ाननुय वोन्य हेनि छम वथ ।।
315. दोपुस सादन करय वोन्य च्येब् उपकार
मगर यादिय थविजि वारय कनदार ।।
316. स्यठा यम कॅकर च़्ये निनि यिनय
स्यठा दुरव कष्ट तऽ पीड़ा च़्येय दिनय ।।
317. अमा यलि वातरव निशि घर्मराजस
करन यमदूत हज्ज़िर च़्येय निशे तस ।।
318. वनन तिम घर्मराज़स अुऽन महा दुऽष्ट
महा पाऽपी महा काऽमी महा भ्रष्ट ।।
319. करी यमराज़ तामय च़्ये नज़ऽरिय
फटनय अरऽखऽय त् वोथी थर थरय ।।
320. चित्रगुप्तस वनी अद घर्म राज़िय
वुछिव यम्यस्न्जिछि क्या स्वक्रय त्
को क्रय ।।
321. चित्रगुप्तय बहीमुच़्रावि वुछि च्योन
यि क्वरमुत जगतसमंज़ आसि याद थव
म्योन ।।
322. यि क्वरमुत आसिथिय ती लेखि सोरूय
अधर्मय वुछि तथ लीरिवथ चोपाऽरिय ।।
323. चित्रगुप्त वुछिथिय करि त्राहि त्राहे
छि: दुष्टन पाप करिमत्य जायि जाये ।।
324. यिहय अर्ज़ी सुयलि दियि धर्म राज़स
सुयलि यम परि ताम गछिसु कूपस ।।
325. पतय अदराज ऋषिनऽय अथ्य दियि तथ
माहराज वाति क्या दुष्टस यमिस यथ ।।
326. वुछन अन्दकुन तिम ऋषि जान पाऽठ्यी
बिहिथ आसन कुर्सियन प्यठ दय टाऽठ्यी ।।

327. तिम लेरवन अथ अमिस वातान नररवुय
धर्मराजस कुन पिलनावनय सुय ।।
328. निशानय अद करिथ वन्य सु दूतन
नियून जल्दिय त् भूग नाऽव्यून नरकिय ।।
329. युथुय च्यय ह्यनय तति नस कड़ोनुय
च् नीरिज़्यख न हरगिज गछ़ि वंदोनुय ।।
330. च पानिय भाऽरिथिय दिजि़ मुशत् कलस
प्रिछ़िज़्यख क्या अरव धर्म ति छुमना दिलस ।।
331. म्ये ज़न्मस मंज कोरूम ना केंह ति धर्मय
ज़रूरी आसि कांह नत् कांह स्वर्कमय ।।
332. माहराज अति वुछितव ब्ययि यिवारय
दया कऽरितव अनाथस प्यठ दुबारय ।।
333. वुछरव नय त्यलि ब् यतिथय पान मारय
कन्यव सीऽत्यन कलस कर पार पारय ।।
334. करिजि़ हठ हरगिज़ युथ पथ नऽ फेररव
मऽचिल लऽगिथ करिज शोर ब्ययि दिजि़ क्रख ।।
335. त्युथय हठ करिजि़ युथ सऽरीगछ़न तंग
अगर निनय चटिथ च्योन प्रथ कांह अंग ।।
336. निन्य रवरवरे दिनय च़्ये क्रूरि चन्जे
स्यठा किऽसमव किन्य दिनय बोड़ भये ।।
337. गछन यलि तंग वुछन अद ब्ययि दुबारय
चित्रगोप्त अद बही दी नजर वारय् ।।
338. वुछि ब्ययि अद अकिस अन्दस यीय लीरिवत
छु अकि लटि सन्तस पत- 2पोक्मुत ।।
339. सुसाधिय ब्रोंठ ओस पत यी पकानिय
तसन्ज़े पकन अऽस गर्द वोथानिऽय ।।
340. स्व गर्द बीठ अमिस बुथिस त् नेत्रन
गर्दि अथ लगिमत्य आऽसि सन्थ चररा ।।

341. दोयुम तस सीऽत्य छु कोरूमुत अम्य भाषन
त्रेयिम अम्य ज्यूलि तुजम्च हन्जि छि सन्तन ।।
342. यूतुय पुऽण्य अम्य छु क्वरमुत ज़न्मस यिथ
धर्मराज़स कुन पिलनावि लोरिवथ ।।
343. यमराज़य वनी ग्वड़ भूग ग्वड़न्युक
च़ कर्यज़्यस हठ वनिज़्यस भूग दोयुम ।।
344. तुलिजि क्रकनाद माऽरिजि़ पान म्य क्यागव
माहराज यी म्य क्वरूमुत तीम्य दीतव ।।
345. स्यठा हठ करिजि़ वातय ब् योतामथ
चि़ऽ नय पननिस हठस हरगिज़ हेज़्यख पथ ।।
346. वुछरवयलि म्ये तुलुन गछि ज़्यांद शोरूय
त्युथिय युथ न्युमुत आस्यरव काँसि सोरूय ।।
347. म्य नय युन तोर वोन्य यिम चानि बापत
च सथ बोज़ म्वकलावथ तति रटय कथ ।।
348. बिऽ यिथ पऽठय ज़ान म्वकलावथ बिऽ तते
करान कथ यिम तिमय आऽस्य वति वते ।।
349. अमिस दुऽष्टस पछ़ नय वार् आयस
अमी ज़ोन रव्वश गफा ह्युव अथ उपायस ।।
350. यवि ज्यूलि तुलन बापत फंद वनान छुम
अमिस नत् म्योन क्युथ सना श्रेह ननन छुम ।।
351. वोनुन साधस रटिव आम म्य मऽदान
अमी हीतय तपऽरी च़्वल सु ब्वड़ गान ।।
352. गॅराह प्रऽरिथ साधन ज़ोन च़्वलुय
वोनुंन पानस स्येदिस क्या करि होलुय ।।
353. प्रुछुस गौरी तमि पत क्या सपदुय
सु पऽपी क्वत गव किथ पाऽठय मूदुय ।।
354. यि सन्तन तस वोनुय तस ती बन्यावा
शिवन वोननस तिहुन्द फेरन वनुन छा ।।

355. तिनय बनि जांह जि सन्तन हुन्द वच़नुय
हयेकि नऽ फीरिथ योद ब्रह्मा ति नचऽनय ।।
356. वोनुस गौरी यि कथ वन्तम म्य वार्य
स्यठा लऽज्य करनि स्वमियस ज़ार पारय ।।
357. शिवन दोपनस सु पाऽपी आवघऽरय
करऽन्य ल्वग रेयिमि दोह सू अरसरय ।।
358. कोरनस दोद् सपद्योस माऽल ति बन्द
कलस दोध क्वरनस गोस अनज़ल बन्द ।।
359. सतिमि दोह ज़ल कनि पोकुस रथिय
करनि ल्वग हाय प्येयस याद कथिय ।।
360. मगर याद रूदुस सोरूय समागम
तिथय पाऽठय प्राग़ा कडिहस आय तस यम ।।
361. यि साधन तस वन्याव आस ती बराबर
स्यठाह पीडा लगिस दिन्य यम केंकर ।।
362. युथय वात नोवुरव निशि धर्मराजस
बन्यव तति तीयि नीरिथ च्वल साधस ।।
363. धर्मराज़न तस वुछिथ कोर त्रासय
कँऽपऽन्य ल्वग अरँरवरूमव किनि द्रासय ।।
364. वोनुस यी सन्तन तसंति हाल गुर्ज्योव
करून क्या गछि ति यादय सन्त सुन्दप्यव ।।
365. यिथुय दतव हयोतुय तते कडोनुय
हयोतुनपान मारूनुय ज़ोरय वदोनुय ।।
366. स्यठा ल्वग करनि ज़ाऽरी तुलुन क्रक नाद
न्यबर क्रख गयि ओस पक्न अख साध ।।
367. यम केंकर तस वुछिथ चल्य चूरे
रवसिथ आव सिर्य ह्युव ज़न सू पूरे ।।
368. प्रचंन्ड तसन्दि तीजुक प्यव चौपाऽरी
वथित तति थोद गयिराज यम साऽरी।।

369. प्यस चरणन प्यठ कोरहस प्रणामिय
करान यिम कामि आऽस्य त्राव्रव तमामिय ।।

370. चरण छुलिहस त् पूज कर्हस पादन
यि क्या क्रेक नाद यति ओस प्रुछुरव साधन ।।

371. समिथ व्वनहस ऋष्यव ब्ययि धर्मराज़न
वुछमुत छुनऽ अज़ताम युथ दुर्जन ।।

372. माहराज यी महा पाऽपी अरवा छू
दपान पुऽण्य फल दियूम ग्वड म्ये हु क्या छू ।।

373. दला युथ कांह न् अज़ तामथ म्य टक्र्यव
अमी असि सारिन्य माहराज फयुरून थोव ।।

374. प्रुछुरव साधन छ् क्या कथ वार वन्यतव
यि क्याज़े पान मारान क्या अमिसगव ।।

375. घर्मराज़न वोनुस महाराज यि दुष्ट्य '
महापऽपी अधर्मी पूर भ्रष्ट्य ।।

376. ज़्नमस यिथ न कोर अम्य केंह धर्मय
अमी प्रथ जायि करिमृत्य छी क्वकर्मय ।।

377. सिर्फ अरव पुऽण्य कोरमुत अम्य छु ज़्नमस
मंगानय् ग्वडन्यथ फल तथ छु पानस ।।

378. दोपुरव साधन त् दीतोस क्या छि बड़ कथ
यछा यलि छस त् ग्वडन्यथ भूगिहे तथ ।।

379. घर्मराज़न ऋष्येन अथि दिच् सो अर्ज़ी
माहराज वाति क्या अथ छव यिमर्जी ।।

380. ऋष्येव कड सुमरती मूजूब ल्यूरवहस
इन्द्रपदवी छि तस यिछ क्रय आसि यस ।।

381. छु वातान अथ पुऽण्यस यी ती दीतोस
घर्मराज़स ऋष्यन हुन्द माननुय प्योस ।।

382. निशानय कोर तथ प्यठ घर्म राज़न
त्युथुय हऽज़िर सपिद देवदूत दवन ।।

383. दोपुरव साधन म्य अम्यस वनिऽन्य छम कथ
दियिव तोहय अज्ञन्या बोजनस अमिस तथ ।।
384. अम्य पत तस कनस तल वोनुय साधन
युथुय नेररव त्युथुय दिजि व्यर्ष्णापन ।।
385. यिनय दीवसऽत्य प्रथ केंह हावनय च्ये
इन्द्रस थ्वद तुलन बेहनावनय च्ये ।।
386. चि्ऽ हरगिज़ यिन बेहऽख़ गधि प्यठिय
दपिजि़ अर्पन शिवस दिच़ म्य ज़ठिय ।।
387. योहोय संकल्प थविजि़ अन्द वन्दय
कर्यजि़ दानिय थऽविजि़ अऽच्छ च़ऽ बन्दिय ।।
388. योर वऽतिथ करिजि ब्ययि चि्ऽ शोरूय
मंगिज़्यरव फल अम्युक कर्यज़रव जोरूय ।।
389. घर्मराज़न हुकुम धुत नियून र्नकस
च् वनयज़्यरव क्या म्य मेलिना केंह ति
पुऽण्यस ।।
390. मैंग्यज़्ख फल त् त्रऽविज़्यख पान यतिनस
करून गछि जार्पारय घर्मराज़स ।।
391. ब्रूहिम ख़्वत ज़्याद वोअ हठ कर्यज्यरव
ब् नरवय ज़ान वालुन चिऽन डरिज़्यख ।।
392. यि बूजि़थ दीव विय न्यू सीऽत्य पानस
यि नय रव्वतुरव दोपहस रवस व्यमानस ।।
393. लगिस तिम हावने यिम दीवता छिय
न्यथर मुच़राव त् स्वर्ग लूरव वुछ च़ऽय ।।
394. यि ल्वग वनने जि़ व्यशनार्पन कोरूव म्य
दोऽपहस दीवव यि भूग क्या गोवुय च़्ये ।।
395. छुनुरव यन्दृाज गदि प्यठ थ्वद तुलिथय
दोप्हय अथ गदि प्यठ बिहीव वोन्य तोहि ।।
396. दिच़न दान यन्द्रपदवी सारि सानिय
गछिथ चोर चिह अनुय दीवव ट्कानिय ।।
397. रोटुय दीतव निवुय निशि घर्म राजस
तम्य व्वनुरव न्युन गछि़ जल यि र्नकस ।।
398. द्तव किल् दिथ ह्योतहय कड़ोनुय
डाम्ब तम्यी त्रोव ह्योतुन ज़ोरय वदोनुय।।

399. वुछूस वोअ केंहम् वोननरव धर्मराज़न
वोनुरव फीरिथ वुछिव पुऽण्य म्यऽन्य दुऽष्टन ।।
400. म्य भूगा स्वर्ग कोन् केंह छिव वुछानिय
वुछुन रोस्त म्य नर्कस क्याजि निवानिय ।।
401. माहराज वुछिव अन्दर म्ये हाय क्याह गोम
करान माँ छिव प्रथ कँऽसि यिछ़य कोम ।।
402. धर्मराज़न अदालत गयि म्य मोलूम
दया किछ तोहि आसान गयि म्य मोलूम ।।
403. यि हाल गव म्य ब्ययन क्या आसि हालिय
यिमव कोरमुत स्यठा रूत तिमन क्या आसि ।।
हालिय
404. मलिथ सूर रवाक पानस तुलन क्रकनाद
अमिपत धर्मराज़स वननिल्वगसाध ।।
405. अनाथस प्यठ दया गछि राज करनी
दया कर्यूस ह्ययि च्यऽन्य ग्वन ग्यवनी ।।
406. म्य वनतम दुरिवयन क्या वोन् विरूद्धिय
अम्य स्न्दि वनन तोहि क्याज़ि रवस्न क्रूधिय ।।
407. अम्य सुन्दय बोज़ करयी च् वोअ ब्वद
च छरवराज् राजन हिऽन्ज़ च्येय सुऽद्ध ।।
408. मैंगन यि छुय न केंह दितस पननुय
च गोरवा राज़ह छुय गोभन् च्य द्यूनुय ।।
409. धर्मराज़न यि बूज़िथ ब्ययि कनस क्वश
ह्योतुन क्रूधस अन्दर प्योन बरिथ रोश ।।
410. वहेकुक सिर्य ह्युह म्वरव साधसिय गव
नजर राजस कर्न पम्पोश नेत्रव ।।
411. द्वोपुस साधन कर्य यम लूकसय डास
च्य छयना केंह रवबर यिम्योन छुय दास ।।
412. वून्युरव तामय वुछन ओसुस तमाशा
कर्न किछ छिव अदालत लूकनय क्यहा ।।
413. करय वोन्य राजसिय च्याऽनिस तलुक प्यठ
यि बूज़िथ धर्मराज़स च़ायि नठ नठ ।।
414. युथुय वुछ धर्मराज़न साध तेज़ गव
चित्रगुप्तस वँनुन अथ जल्द वुछितव ।।

415. चित्रगुफतन वुछिथ वोन् वार् चौपाऽरी
अभी दान दिति मृत्य स्वर्गक्य चीज साऽरी
416. क्वरूमुत व्यशनार पन अम्य छु सोरूय
अमिय अज़ाब कोरनय न कँऽसि योरय ।।
417. चित्रगुप्तन द्युत लिरिवथ घर्म राज़स
कोरून काकिज़ हवालय थ्वद वथित तस ।।
418. धर्मराज़न परिथ क्वर धन्य धन्ये
कोरुमुत युथ न्ऽ अज़ताम कौंऽसि पुऽण्ये ।।
419. द्युतुन ऋषन अथ्ये वोऽ वाति क्या अथ
तिमव व्वन ब्रहमल्रव द्युन वाति वुऽन्य अथ ।।
420. घर्म राज़न कोरूस पननुय निशानय
न्यबर गयि दीव हऽज़िर ह्यथ व्यमानय ।।
421. धर्मराज़िय वननि ल्वग दीवनय कुन
अमिस संथय अनुग्रह वार् साँऽपुन ।।
422. न्यून यि पुण्य वानय ब्रहम लूकस
अमिस नय काऽम कांह ज़गतस त् शूकस ।।
423. कोरूस साधन ईशारय ग्वड़यि योरूय
बु गछि छारून तते ग्वड़ यिम ब् तोरूय ।।
424. च् यिन मस्ती कररव ग्वड़ गछ बऽ छारून
म्य ब्ययि ति छुम केंह तति च्ये गारून ।।
425. तमिस दुऽष्टस पापुक देह वसिथ प्यव
बनिथ तीज़िय उडिथ ब्रहम लूकसिय गव ।।
426. द्रोपुस दीवी यि वन तम वार् पाऽठी
क्वरूय क्या अमि पत अम्य च्यान्य टाऽठी।।
427. कोरूय क्या ब्रहम लूकस मंज़ गछिथ तम्य
कोरूय क्या तम्य वोनुय क्या साधसिय तम्य ।।
428. यछा छम बोज़नि्च वनतम यि वारय
स्यठा शिवस करिनि लऽज्य जारपारय ।।
429. कल्यानुक युस ज्ञानुक छुय समन्दर
असान - 2 वननि लोगुस सु शंकर ।।
430. सु संत केंह काल पत ब्रह्म लूकसिय गव
अक्यस क्षणस अन्दर त्वत वऽतिथिय प्यव ।।

431. पून्यवानन याम ड्यूठुय साधिय
दवान यिथ परण प्योस रटिनस पादिय ।।
432. वुछन शिष्यन वनान आत्म ज्ञऽनी
पून्य वानस कुन थेवुन च्यथ त् घ्यानिय।।
433. न् सूक्षम छू स्थूल कारराा शरीरिय
तुऽह्य छिव आकाश वथ पूर्राा गम्भीरिय ।।
434. न छिव ज़ीव ईश दिह आदि मन त् ब्वदय
तोहययछिव अनुभव पात्र न्यति शुऽद्धिय ।।
435. तोह छिव त्रन अवस्तायन अतीतय
ग्यवान छिव तुन्हुन्दि जुवकी वीद गीथय ।।
436. तुहुन्द जुव छुव परमय शिव सुन्द नाव
सदा संसार कुय तोहि मंज छु अभाव ।।
437. तोहि छिव अस्ति भांते प्रेय रूपय
शिविय जऽनिव तुन्हुन्द जुवछु मोय मोय ।।
438. तोहय छिव न्यति मोक्त सर्वस्व ओंकार
छु सोनुय जुव शिविय शिवसिय नमस्कार ।।
439. वननि ल्वग वुज़्येयि तिमन दया पूर पऽठी
त्मी म्वकलऽवि साऽरी म्येऽन्य टऽठी ।।
440. बनिथ ज़ीवन मुक्त तिम योर न फीरीय
यमिस ब्वज होश् सु वोअ तवय तोर नीरीय।।

सन्थन लगयो ब् पाऽरि पाऽरी
प्रेयमऽ सत्य बोरहस वाह वाह वाह ।।
धन्य धन्य संथय चरणार ब्यन्दनिय।
मन्जूर क्वरहस वाह वाह वाह।।
धर्मय कर्मय क्रयायि रोस्तुय
ओरय वोरहस वाह वाह वाह।।
अस्तुती करत् गूव्यंद चित्य सथ ग्वररअ
भवसर तोरहस वाह वाह वाह।।
ओं परनाऽविथ ज़बर ज़ेर हाऽविथ
ब्रोंठ् कनि प्वरहस वाह वाह वाह।।

-------******-------